pb
प्रवासी भारतीय
मार्च २०१२ | वर्ष ५ | अंक ३

भारत को उसके प्रवासी समुदाय से जोड़ते हुए

अमेरिका के गुरु

अमेरिका के शीर्ष विश्वविद्यालयों में ज्ञान एवं अभिनवीकरण के मोर्चों की कमान भारतीय अमेरिकी संभाले हुए हैं। उनकी सफलता का मंत्र क्या है?

प्रवासी भारतीय
कार्य मंत्रालय

साथ में

पेज २४ जड़ की तलाश । पेज ३६ भारत की व्याख्या । पेज ४० वियना में सिनेमा

GLOBAL – INDIAN NETWORK OF KNOWLEDGE (GLOBAL–INK):

"THE VIRTUAL THINK TANK"

AN INITIATIVE OF THE MINISTRY OF OVERSEAS INDIAN AFFAIRS

Global –INK positioned as a strategic "virtual think tank" connects Overseas Indians (knowledge providers) with the development process (knowledge receivers) in India and empowers them to partner in India's progress.

Being a next generation knowledge management, collaboration and business solution platform, Global-INK provides context to connect knowledge experts with knowledge seekers Consequently, these connections enable flow of knowledge and expertise from the Diaspora back into India and facilitate collective action.

Global – INK will catalyze Diaspora ability and willingness into well thought out projects and programs for development, transform individual initiatives into community action and achieve critical mass in chosen verticals.

The portal can be accessed only by registered users. Registration request can be submitted by filing out the registration form located on the Global-INK homepage (www.globalink.in)

Confederation of Indian Industry

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs

OIFC
Overseas Indian Facilitation Centre

pb
प्रवासी भारतीय

भारत को उसके प्रवासी समुदाय से जोड़ते हुए

सत्यमेव जयते

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in
www.overseasindian.in

एन. सिन्हे द्वारा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय के लिए प्रकाशित एवं मुद्रित
अकबर भवन, चाणक्यपुरी
नई दिल्ली-११००२१
वेबसाइटः http://moia.gov.in
www.overseasindian.in

प्रवासी भारतीय मासिक जर्नल है। इस जर्नल में प्रकाशित लेख और विचार लेखकों के हैं और ये आलेख प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एमओआईए) के विचार को पूरी तरह प्रक्षेपित नहीं करते।
सर्वाधिकार सुरक्षित है। एमओआईए की अनुमति के बगैर जर्नल के किसी भी अंश का न तो इस्तेमाल किया जा सकता है और न ही इन्हें प्रकाशित किया जा सकता है। मंत्रालय की अनुमति के बगैर इन अंशों का इलेक्ट्रॉनिक व यांत्रिक प्रकाशन के लिए इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता है। प्रतिलिपि तैयार करने के लिए भी पूर्वानुमति जरूरी है।

संपादकीय पत्र व्यवहार और संपर्क के लिए *pravasi.bharatiya@gmail.com* का इस्तेमाल करें।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय की ओर से आईएएनएस (www.ianspublishing.com) द्वारा डिजाइन और तैयार।

अनित प्रिंटर्स
१८११, ज्ञानी बाजार,
अपोजिट डी-५६ एन.डी.एस.ई
पार्ट-१,कोटला मुबारकपुर,
नई दिल्ली-११०००३ **में मुद्रित**

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.overseasindian.in

विषय-वस्तु

10

वैश्विक भारतीय, अमेरिकी गुरु

अमेरिका के अकादमिक क्षेत्र में कई भारतीय अमेरिकी अहम उच्च पदों पर आसीन हो चुके हैं और उन्होंने कड़ी मेहनत एवं भारत में हासिल विश्वस्तरीय उच्च शिक्षा के बूते यह कामयाबी हासिल की है

18

प्रभाव का सामूहिक सुर

भारतीय-अमेरिकी समुदाय एक प्रमुख जनसांख्यिक आवाज बन गया है और यह अमेरिकी राजनीति के भविष्य पर असर डालने वाला एक असरदार समुदाय है

24

वह लंबी यात्रा...

एक गुयानी भारतीय एनिड ह्वाइटहाउस ने उस 'प्रस्थान बिंदु' की पहचान कर ली जहां से सौ साल से भी अधिक पहले उनके पिता ने एक बंधुआ मजदूर की हैसियत से काम करने के लिए गुयाना का रुख किया था

26

विशेष रिपोर्ट

नो इंडिया प्रोग्राम, जो प्रवासी युवाओं तक पहुंचने के लिए प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय की एक संपर्क परियोजना है, एक सार्थक सांस्कृतिक माध्यम साबित हुआ है

28

साइकिल है समाधान

जटिल होते नगरीय 'परिवहन संकट' के बीच साइकिल की सवारी का चलन दिल्ली में जोर पकड़ रहा है, जहां इसके पैरोकार इसके बारे में जागरूकता बढ़ाने में लगे हैं

30

कविता में लीन

मशहूर लेखक विक्रम सेठ द्वारा लिखित 'द रिवर्ड अर्थ' संगीत, सुलेखन और काव्य धारा का मिश्रण है

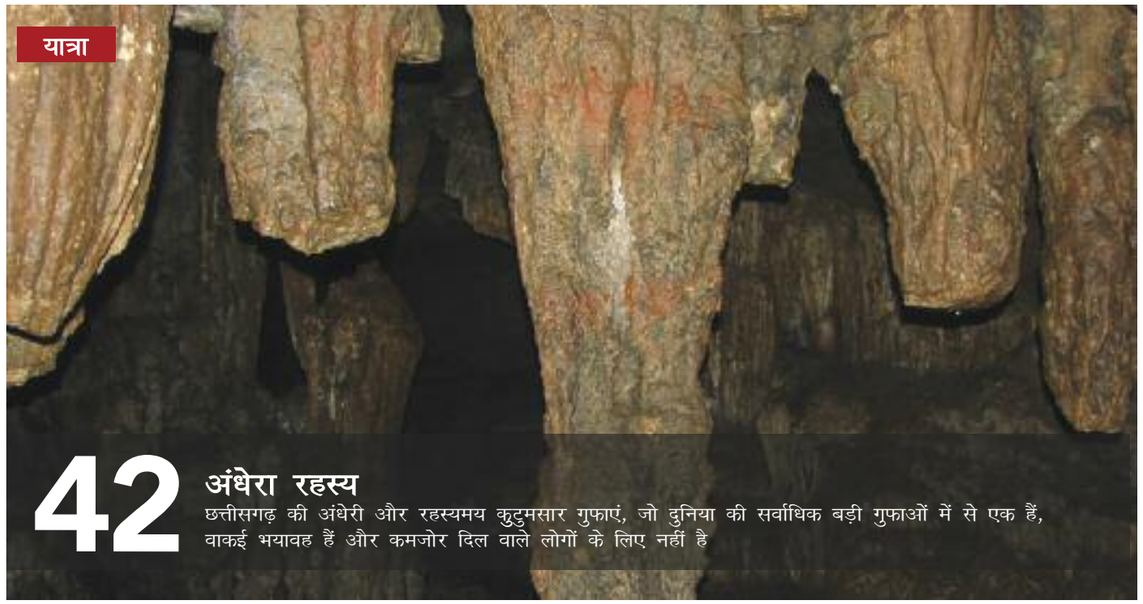

यात्रा

42

अंधेरा रहस्य

छत्तीसगढ़ की अंधेरी और रहस्यमय कुटुमसार गुफाएं, जो दुनिया की सर्वाधिक बड़ी गुफाओं में से एक हैं, वाकई भयावह हैं और कमजोर दिल वाले लोगों के लिए नहीं है

व्यंजन

44

अंडे का फंडा

अंडे की बढ़ती विविध उपयोगिता एवं लोकप्रियता ने भारत में पेशेवर रसोइयों को अंडे से ऐसे कई तरह के व्यंजनों की ईजाद का मौका दिया है। अंडों से उम्दा व्यंजन बनाने वाले चोटी के कुछ शेफ के बारे में रोशनी डाली जा रही है...

36

भारत का चित्रण

कई विदेशी कलाकार, जिनमें से कुछ लंबे समय से भारत में बसे हैं, इन दिनों इस देश के प्रतीकों, संस्कृति, रहस्यवाद और संवेदनाओं को कैनवस पर चित्रित करने में सक्रिय हैं

38

सुर संगम

बेंगलुरु में एक संगीत समारोह में जब १,१०० वीणा एक साथ बज उठी तो दुर्लभ संगीत का सृजन हुआ। संगीतकारों ने विभिन्न शास्त्रीय रागों को बजाकर अपना कौशल दिखाया

40

वियना में बॉलीवुड

भारत में जन्मे आस्ट्रियाई फिल्म निदेशक संदीप कुमार एक संगीतमय बॉलीवुड फिल्म 'सर्वस इश्क' या 'हेलो, लव' बना रहे हैं, जिसकी शूटिंग खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध आस्ट्रिया में हो रही है

भारत और कतर के बीच तेल समझौता, एनआरआई कल्याण पर चर्चा

भारत और तेल संपन्न देश कतर, जहां करीब ५ लाख भारतीय रहते हैं, ने विभिन्न क्षेत्रों में छह समझौते किए हैं, जिनमें तेल एवं गैस खोज पर सहयोग संबंधी एक अति महत्वपूर्ण समझौता भी शामिल है।

भारत की अपनी हालिया तीन दिवसीय यात्रा के दौरान कतर के अमीर शेख हमद बिन खलीफा अल-थानी ने प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह से कई मसलों पर बातचीत की, जिनमें व्यापार एवं निवेश को बढ़ावा देने और दोनों देशों के बीच ऊर्जा संबंधों को प्रगाढ़ बनाने संबंधी मसले प्रमुखता से शामिल थे। दोनों नेताओं ने खाड़ी देश में भारतीय कामगारों के कल्याण संबंधी मसलों पर भी चर्चा की। इस वार्ता के बाद भारत के पेट्रोलियम मंत्री एस. जयपाल रेड्डी एवं कतर के ऊर्जा मंत्री मोहम्मद बिन अल-सदा ने तेल एवं गैस के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग ढांचे को स्थापित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

समझौते में ऊर्ध्वप्रवाह एवं अनुप्रवाह तेल एवं गैस उत्पादन गतिविधियों के क्षेत्रों में सहयोग की चर्चा है।

दो दोनों के तेल एवं गैस मंत्रालयों के बीच एवं सबद्ध कंपनियों के जरिए सहयोग एवं निवेश को बढ़ावा मिलेगा।

यूएई में भारतीयों की मदद के लिए नया प्रोटोकॉल

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में रहने वाले १७ लाख भारतीय अनुबंध कामगारों के पंजीकरण को सुव्यवस्थित बनाने के लिए भारत और यूएई ने ४ अप्रैल को एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया, जिससे इससे जुड़ी एक इलेक्ट्रॉनिक सत्यापन प्रणाली पर अमल सुनिश्चित होगा।

इस प्रणाली से अनुंबधन प्रक्रिया में पारदर्शिता बहाल होगी। इससे यह सुनिश्चित होगा कि भावी कामगारों को भारत सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त भर्ती एजेंसियां अनुबंध शर्तों के बारे में जानकारी दे।

कामगारों को दी जाने वाली सूचना के दायरे में मेहनतनामा एवं रोजगार शर्तें, रोजगार लाभ शामिल होंगे। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय की ओर से जारी बयान में यह कहा गया है। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि ने कहा कि भारत भारतीय कामगारों की प्रवासी भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की दिशा में एक ऐसी समग्र ई-प्रशासन प्रणाली लागू कर रहा है, जो सभी भागीदारों के लिए आसान पहुंच वाली हो।

भारतीय आधुनिक कला ऑनलाइन हुई

द नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट (एनजीएमए) को साइबर स्पेस पर 'नया पता' मिल गया है, जहां विजिटर इसके अत्याधुनिक पोर्टलों पर जाकर इसकी स्थायी प्रदर्शनियों का लुत्फ उठा सकते हैं। सर्च इंजन गूगल ने इस आभासी यात्रा को संभव बनाया है। इस लोकप्रिय सर्च इंजन ने संग्रहालय की वर्तमान गूगल आर्ट परियोजना के अंतर्गत ७१ कलाकारों की ६४ कलाकृतियों का एक स्लाइस अपलोड किया है।

इस परियोजना ने संस्कृति मंत्रालय के साथ अपनी भागीदारी के तहत नई दिल्ली स्थित एनजीएमए और राष्ट्रीय संग्रहालय के साथ एक गठजोड़ का खुलासा किया।

एनजीएमए और राष्ट्रीय संग्रहालय की २५० कलाकृतियों को इस पर अपलोड किया जा चुका है और ये कलाकृतियां १९५० से लेकर अब तक की हैं। इनका कालखंड १५० वर्षों से अधिक का है।

संस्कृति मंत्रालय के साथ भागीदारी भारत को ४१ देशों के १५१ भागीदारों के साथ एक ऐसे अंतर्राष्ट्रीय परियोजना के दायरे में लाती है जो कला के ऑनलाइन दर्शन के लिए वर्ष २०११ में १७ देशों के साथ शुरू की गई थी।

केरल ने प्रवासियों के लिए मदद दुगुनी की

केरल सरकार ने राज्य के कमजोर एवं गरीब प्रवासी तबकों को दी जाने वाली सरकारी सहायता को दुगुनी कर दी है। इस आशय का फैसला २८ मार्च को लिया गया। इनमें चिकित्सा सहायता एवं विदेशों में मरने वाले आप्रवासियों के शवों को वापस लाने के खर्च भी शामिल हैं।

मुख्यमंत्री ऊमेन चैंडी ने कहा, ''चिकित्सीय सहायता और विदेशों में मरने वाले आप्रवासियों के अंत्येष्टि खर्च के एवज में मिलने वाली १०,००० रुपये की राशि को बढ़ाकर २०,००० रुपये कर दिया गया है। इस तबके के लोगों के बच्चों की शादी के लिए मिलने वाली सहायता को भी दुगुना बढ़ाकर १५,००० रुपया कर दिया गया है।''

सरकार शारीरिक रूप से विकलांग लोगों को ह्विलचेयर खरीदने के लिए भी सांत्वना स्कीम के तहत १०,००० रुपये की मदद प्रदान करेगी।

गीता का पोलिश अनुवाद उपलब्ध

भगवद्गीता एक और भाषा में उपलब्ध हो गई है। अब इसका पॉलिश अनुवाद भी आ गया है। एक भारतविद् एवं संस्कृत विशेषज्ञ अन्ना रासिन्स्का ने कृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद पर केंद्रित इस धर्मग्रंथ का अनुवाद पोलिश भाषा में किया है। इससे पहले भी पोलिश में गीता का अनुवाद उपलब्ध रहा है, पर यह २० वीं सदी में अंग्रेजी से पोलिश में अनूदित किया गया था।

महाकाव्य महाभारत का यह अंश गीता कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उस उपदेश पर आधारित है, जो उन्होंने अर्जुन को अपने सगे-संबंधियों के खिलाफ शस्त्र उठाने को लेकर हुए धर्मसंकट की स्थिति में दिया था। यह ग्रंथ प्राचीन भारतीय पारंपरिक तात्विक दार्शनिकता का निचोड़ है।

६० वर्षीया अन्ना रासिन्स्का ने संस्कृत सीखने के लिए करीब एक दशक वाराणसी में बिताया। दो साल पहले उन्हें ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ वारसा यूनिवर्सिटी से संस्कृत में डाक्टरेट की उपाधि मिली।

भारत ने आईएमएफ सुधारों की धीमी गति पर चिंता जताई

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में कोटा एवं गवर्नेंस पर सुधार की मौजूदा धीमी गति पर खिन्नता प्रकट करते हुए भारत ने कहा कि इस निकाय के औचित्य एवं प्रभावोत्पादकता को सुनिश्चित करने के लिए एक गतिशील सुधार प्रक्रिया की जरूरत है।

वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी ने नीति निर्माता अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक एवं वित्तीय समिति (आईएमएफसी) और जी-२० के संयुक्त सत्र को हाल ही में संबोधित करते हुए कहा, ''गवर्नेंस एवं औचित्य को सुधारने का सर्वश्रेष्ठ उपाय यह है कि महत्वपूर्ण सुधारों पर कोई चूक नहीं हो।''

सदस्यों की मतदान ताकत के मुख्य निर्धारक के तौर पर कोटा की केंद्रीय भूमिका पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि कोटा फार्मूला समीक्षा के लिए जनवरी २०१३ की लक्ष्य तिथि के मामले में कोई चूक नहीं होनी चाहिए।

मुखर्जी ने कहा कि उभरते एवं विकासशील देशों के लिए जीडीपी कोटा फार्मूले में सर्वाधिक महत्वपूर्ण चल कारक है और ब्लेडेंड जीडीपी चल कारक का वेटेज इस फार्मूले में बढ़ाये जाने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, ''हमारा उद्देश्य एक ऐसे साधारण फार्मूले पर पहुंचना है जहां जीडीपी या तो मूल या प्रमुख वेरिएबल हो और इसमें जीडीपी-पीपीपी का उच्च शेयर हो।''

सौमित्र चटर्जी को दादा साहब फाल्के पुरस्कार

प्रख्यात बांगला अभिनेता सौमित्र चटर्जी, जिन्होंने सत्यजीत रे द्वारा निर्मित फिल्मों में विविध भूमिकाएं निभाईं, को भारत के सर्वश्रेष्ठ सिने सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार के लिए चुना गया है।

चटर्जी ने अपने फिल्मी सफर की शुरुआत १९५९ में रे की फिल्म *अपूर संसार* से की और वे शीघ्र ही इस मशहूर निर्देशक की पसंद बन गए। उन्हें उनकी फिल्म *सोनार केल्ला, चारूलता* और *घरे बैरे* समेत कई फिल्मों में भूमिका निभाई।

रे के अलावा उन्होंने मृणाल सेन, तपन सिन्हा, तरुण मजूमदार, अपर्णा सेन, गौतम घोष और रितुपर्णो घोष जैसे नामी निर्देशकों के साथ भी काम किया।

उनकी कुछ यादगार फिल्में हैं *झिंदर बांदी, कोनी, कापुरुष, आकाश कुसुम, आरण्येर दिन रात्रि, जॉय बाबा फेलुनाथ, तीन भुवानेर पारे, गनशत्रु और शखा प्रोशाखा*।

फिल्मों के अलावा वे नाट्य दुनिया के भी अनुभवी कलाकार रहे हैं, जहां उन्होंने न सिर्फ अभिनय किया है, बल्कि निर्देशन भी किया है। वे बंगाल के सर्वश्रेष्ठ पेशेवर सुवक्ता रहे हैं। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें पद्म भूषण, फ्रांस सरकार की ओर से ऑफिसर डेस आर्ट्स एट मेटियर्स और इटली की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार दिए जा चुके हैं।

भारतीय छात्र ने प्रतियोगिता जीती

भारत के सचिन एस. कुक्के यूट्यूब स्पेस लैब २०१२ के लिए एशिया प्रशांत विजेता और इसके छह वैश्विक विजेताओं में से एक हैं। यह प्रतियोगिता बाह्य अंतरिक्ष में इस्तेमाल होने वाले प्रयोगों की डिजाइन के लिए युवाओं के लिए आयोजित की गई थी।

स्पेस एडवेंचर्स, नासा, ईएसए (यूरोपीय स्पेस एजेंसी) और जाक्सा (जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी) के सहयोग से यूट्यूब एवं लेनोवो द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा २३ मार्च को वाशिंगटन के न्यूजियम में हुए एक समारोह में की गई। बेंगलुरु के बीएमएस कालेज फॉर इंजीनियरिंग के मेकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्र कुक्के का शोध प्रयोग फेरोफ्लूइड - एक ऐसा विशेष द्रव जो तब चुंबकीकृत हो जाता है जब उसे चुंबकीय क्षेत्र से गुजारा जाता है - में ताप के परिवर्तन पर केंद्रित है। यह अध्ययन उन्नत शीतलन विकास एवं ताप परिवर्तन प्रणालियों के विकास में मददगार होगा।

पाक छात्रों के लिए भारतीय बिजनेस स्कूल का कोर्स

इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी), जो दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बिजनेस स्कूलों में से एक है, ने हाल ही में कराची के इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (आईबीए) के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया है, जिसके तहत पाकिस्तान में एग्जीक्यूटिव शिक्षा प्रदान की जाएगी।

आईएसबी स्थित सेंटर फॉर एग्जीक्यूटिव एजुकेशन (सीईई) में इस गठजोड़ के तहत 'ओपन' और 'कस्टम-डिजाइन्ड' कार्यक्रम संचालित किए जायेंगे। एमओयू के अनुसार, आईएसबी पाकिस्तान में वरिष्ठ प्रबंधन कार्यकारियों को एग्जीक्यूटिव शिक्षा प्रदान करेगा।

गैंडों की आबादी में २५० की वृद्धि

असम स्थित विश्व प्रसिद्ध काज़ीरंगा नेशनल पार्क (केएनपी) में एक सिंग वाले गैंडों की आबादी में पिछले तीन वर्षों में २५० की वृद्धि हुई है। पिछली गणना के मुताबिक यहां कुल २,०४८ गैंडे थे, जिनमें से ८ को मानस नेशनल पार्क में भेजा गया था। ताज़ा गणना में गैंडों की यह आबादी २,२६० बतायी गई है। गणना से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह कहा। इसके साथ ही असम में गैंडों की कुल आबादी अब २,५०५ हो गई है।

आईएमएफ में ४३० अरब डालर का योगदान

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने यूरोप में पैदा हुई आर्थिक उथल-पुथल के दुष्प्रभावों से वैश्विक अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए अपने प्रयास को दोगुना करने का फैसला किया है और इसके लिए भारत समेत समूह २० के देशों ने कुल ४३० अरब डालर के आर्थिक योगदान का वादा किया है।

वैश्विक जोखिमों से बचने के लिए दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक ताकतों की ओर से इस नयी प्रतिबद्धता की घोषणा हाल ही में ग्रुप २० के वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंकरों की एक बैठक में की गई। आईएमएफ और विश्व बैंक की बसंतकालीन बैठकों के लिए इन प्रतिनिधियों का यहां जमावड़ा हुआ।

आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टीन

लागार्डे ने कहा, ''ये संकेत वैश्विक वित्तीय स्थायित्व को सुनिश्चित करने और विश्व अर्थव्यवस्था को पटरी पर लौटाने के प्रयासों के लिहाज से शुभ हैं।''

हड़प्पा काल के अवशेष मिले

कैंब्रिज एवं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के पुरातत्ववेत्ताओं ने ऐसे अति प्राचीन अवशेष खोजे हैं जिनका संबंध हरियाणा के एक गांव में हड़प्पा सभ्यता से है।

चंडीगढ़ से १६० किलोमीटर दूर करनाल जिले के खालसा बोहला में ४०० वर्ग मीटर में फैले टीडा बुड टीला में गहन खुदाई के बाद ये अवशेष मिले हैं। यह टीला लंबे समय से उत्सुकता का केंद्र रहा है, जिसका पुरातात्विक महत्व अब पूरी तरह से दुनिया के सामने आ गया है।

इसके उत्खनन दल के प्रमुख अरुण पांडेय ने कहा, ''इन अवशेषों में मृदभांड, अस्थियां, मिट्टी की दीवारें, अनाज भंडार, लाल रंग के बर्तन, जिनके बारे में माना है कि इस सभ्यता के लोग इन बर्तनों का इस्तेमाल करते थे, शामिल हैं।''

'दुनिया की सर्वाधिक नैतिक कंपनियां'

अमेरिकी थिंक टैंक एथिस्फेयर इंस्टीट्यूट ने टाटा स्टील एवं विप्रो को दुनिया की सर्वाधिक नैतिक कंपनियों की सूची में शामिल किया है।

इस संस्था द्वारा २०१२ के लिए तैयार वर्ल्ड्स मोस्ट एथिकल कंपनीज सूची में सिर्फ दो भारतीय कंपनियां ही जगह बना पाई हैं। टाटा स्टील के प्रबंध निदेशक एच.एम. नेरूरकर ने कहा, ''ऐसे महत्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित मानक के लिए टाटा स्टील को चुना जाना बहुत बड़ा सम्मान है।''

'भारत में अभिनवीकरण के लिए १४ नए विश्वविद्यालय स्थापित होंगे'

देश में १२वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान १४ अभिनवीकरण विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाएगी। यह घोषणा केंद्रीय योजना, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और भू-विज्ञान राज्य मंत्री अश्विनी कुमार ने हाल ही में चंडीगढ़ में की।

कुमार चंडीगढ़ की हालिया यात्रा के दौरान बोल रहे थे, जहां उन्होंने हरियाणा सरकार की कार्यक्रम एवं योजना प्राथमिकताओं की समीक्षा की। दौरे से पहले राज्य के वार्षिक योजना प्रावधानों पर हरियाणा सरकार की योजना आयोग के साथ बैठक हुई। अश्विनी कुमार ने कहा कि उन्होंने हरियाणा सरकार से ऐसे एक विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव भेजने को कहा है, क्योंकि राज्य सोनीपत जिले में एक एजुकेशन सिटी विकसित कर रहा है। उन्होंने कहा कि नई दिल्ली से करीब ५० किलोमीटर दूर कुंडली में हरियाणा द्वारा विकसित किया जा रहा शिक्षा केंद्र न सिर्फ हरियाणा को, बल्कि पूरे उत्तरी भारत को लाभ पहुंचाएगा। उन्होंने कहा कि इस शिक्षा केंद्र के लिए केंद्र सरकार की ओर से हर संभव मदद दी जाएगी।

भारतीय और एशियाई कला संग्रह ने बनाया शानदार रिकार्ड

न्यूयार्क में क्रिस्टी द्वारा भारतीय क्लासिकल एवं दक्षिण-पूर्वी एशियाई कला संग्रह द डोरिस वियनर ने करीब १२.८ मिलियन डालर की कीमत हासिल की, जो इस नीलामी कंपनी द्वारा किसी भी एकल संग्रह की नीलामी की सर्वाधिक कीमतों में से एक है।

इस नीलामी के तहत नेपाल की १३ वीं सदी की एक खूबसूरत कांस्य प्रतिमा, जो पद्मपाणी की प्रतिमा है, २,४६०,५०० में नीलाम हुई।

भारतीय एवं दक्षिण-पूर्वी एशियाई कला के अंतर्राष्ट्रीय निदेशक व जाने माने कला पारखी ह्यूगो वेहे ने कहा, ''१६ मार्च की रात इस संग्रह की नीलामी ने एक रिकार्ड कायम किया। करीब १२.८ मिलियन डालर की यह नीलामी कंपनी द्वारा भारतीय क्लासिकल एवं दक्षिण-पूर्वी एशियाई कला संग्रह की सर्वाधिक कीमत है।''

उन्होंने कहा कि यह संग्रह 'दुर्लभ एवं खूबसूरत कलाकृतियों का समूह' है, जो इस क्षेत्र में विनर की अति पारखी नजर का सबूत है।

वेहे ने कहा कि कई मूर्तियों और क्लासिकल कलाकृतियों को पूर्व-आकलन से कहीं ज्यादा कीमत मिली, जिनमें पद्मपाणी की गिल्ट ब्रॉन्ज प्रतिमा और सोमस्कंद, भगवान शिव, उमा और उनके पुत्र स्कंद की कांस्य प्रतिमाएं प्रमुखता से शामिल हैं।

इस संग्रह में प्रसिद्ध कला संग्रहकर्ता विनर की गांधार, हिमालय, भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया से संग्रहित करीब ४०० प्रतिमाएं एवं पेंटिंग शामिल हैं।

यूरेनियम खान में उत्पादन कार्य शुरू

भारत ने हाल ही में आंध्र प्रदेश में एक यूरेनियम खान एवं प्रसंस्करण संयंत्र का संचालन शुरू कर दिया है। इस खान को दुनिया की सर्वाधिक महत्वपूर्ण यूरेनियम खानों में से एक माना जा रहा है, जो देश के २५ फीसदी परमाणु संयंत्रों को ईंधन प्रदान कर सकती है।

परमाणु ऊर्जा आयोग के चेयरमैन श्रीकुमार बनर्जी ने वाएसआर कडापा जिले के थिम्मालापल्ले में यूरेनियम कारपारेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) द्वारा विकसित १.१ अरब रुपये की लागत वाले इस संयंत्र को राष्ट्र को समर्पित किया। इस जिले को दुनिया का सबसे बड़ा यूरेनियम भंडार माना जा रहा है।

इस मौके पर बनर्जी ने कहा कि अब भारत आयातों पर निर्भर होने की बजाए खुद यूरेनियम खनिज खानों को विकसित करने की क्षमता से लैस है। उन्होंने कहा कि देश में परमाणु ऊर्जा उत्पादन २०५० तक ६०,००० मेगावाट के बिंदु पर पहुंच जाएगा।

उन्होंने थुम्मालापल्ले में प्रसंस्करित यूरेनियम को दुनिया में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ यूरेनियम में से एक करार दिया।

इस नये संयंत्र की रोजाना खनन एवं प्रसंस्करण क्षमता ३,००० टन है।

एयर इंडिया को पटरी पर लाने की पहल

संकट में फंसी भारतीय उड्डयन सेवा कंपनी एयर इंडिया को नया जीवन मिला है, क्योंकि भारत सरकार ने इसकी वित्तीय एवं संचालन क्षमता में सुधार लाकर इसके कायाकल्प की योजना को मंजूरी दी है।

नागरिक उड्डयन मंत्री अजित सिंह ने नई दिल्ली में संवाददाताओं से बातचीत में कहा, ''आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमिटी ने एयर इंडिया के कायाकल्प (टीएपी) और वित्तीय पुनःसंरचना योजनाओं (एफआरपी) को मंजूरी दे दी है। कंपनी २०१८ से लाभ की स्थिति में आ जाएगी, लेकिन शुद्ध मुनाफा, जो वास्तविक मुनाफा है, की स्थिति में आने में थोड़ा अधिक वक्त लगेगा।'' समग्र टीएपी में एफआरपी के

अलावा संचालन पहलू भी शामिल है जो कंपनी को अपनी कार्यात्मक एवं वित्तीय स्थिति सुधारने में मदद देगा। इसमें रखरखाव, मरम्मत और संपूर्ण निरीक्षण कार्य (एमआरओ) एवं ग्राउंड हैंडलिंग (जीएच) कार्यों को एयर इंडिया की आनुषंगिक इकाइयों में तब्दील करना और अन्य कदम प्रमुखता से शामिल हैं।

'निवेश के लिए बेहतर है भारत'

भारतीय कर प्रावधानों में कुछ पूर्व प्रभावी बदलावों को लेकर पैदा हुई 'गलतफहमी' को दूर करते हुए वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी ने अमेरिकी कारपोरेट जगत को आश्वस्त किया है कि भारत पारदर्शी एवं स्थिर कर प्रणाली के कारण बेहतर निवेश ठिकाना है।

हाल ही में उन्होंने वाशिंगटन में कहा, ''अमेरिकी कारोबारियों के एक समूह में थोड़ी निराशा है और मेरा यह कहना है कि हमारे द्वारा प्रस्तावित कुछ कानूनी बदलावों को लेकर नकारात्मक धारणा है, वह गलतफहमी का नतीजा है।'' उन्होंने वाशिंगटन स्थित थिंक टैंक पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स में आयोजित एक व्याख्यान में कहा, ''कर व्यवस्था को लेकर कोई अस्थिरता नहीं है और जो भी बदलाव किए गए हैं उनका उद्देश्य इन कानूनों को और अधिक स्थायित्व प्रदान करना है एवं शुरू से ही हमारा उद्देश्य यही रहा है।''

उन्होंने कहा कि भारतीय परिसंपदाओं के विनिमय से संबद्ध कुछ अंतर्राष्ट्रीय विलयों पर पूर्व प्रभावी कर लगाने का जो प्रावधान इस बार के बजट में किया गया है, उनका इस्तेमाल छह साल से ज्यादा पुराने कर मामलों को फिर से खोलने के लिए नहीं किया जाएगा, क्योंकि ऐसा होने से रोकने के लिए पुराने कानून पहले से ही अमल में हैं।

वैश्विक भारतीय अमेरिकी गुरु

कार्यक्षेत्रों के दायरे से ऊपर उठकर भारतीय अमेरिकी आज अहम उच्च पदों पर आसीन हो चुके हैं और उन्होंने गहन वर्तमान प्रतिस्पर्धी बहुसांस्कृतिक परिदृश्य में कड़ी मेहनत एवं प्रतिबद्धता के बूते यह कामयाबी हासिल की है। वाशिंगटन से अरुण कुमार की रिपोर्ट

वैश्विक भारतीयों ने हर जगह अपनी छाप छोड़ी है। प्रशासन से लेकर कारोबार, राजनीति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अकादमिक दुनिया सभी क्षेत्रों में प्रवासी भारतीय उच्च पदों पर आसीन हैं। इसके पीछे उनकी प्रतिबद्धता, कड़ी मेहनत और बौद्धिक क्षमता की भूमिका है। भारतीय मूल के ३२ लाख से अधिक लोगों ने अवसरों की धरती अमेरिका को अपना ठिकाना बनाया है। इनमें से दो आज अमेरिक के दो प्रांतों के गवर्नर हैं, वहीं कुछ भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनियों का नेतृत्व कर रहे हैं, जबकि कई ने ओबामा प्रशासन में उच्च जिम्मेवारी संभाल रखी हैं, वहीं उच्च शिक्षा के कई संस्थानों का नेतृत्व भारतीयों के हाथों में है।

भारतीयों की कामयाबी का एक आदर्श उदाहरण ५६ वर्षीया रेणु खातोर हैं, जो जनवरी २००८ में यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन सिस्टम की प्रथम महिला चांसलर एवं अमेरिका में किसी भी समग्र शोध विश्वविद्यालय का नेतृत्व करने वाली भारतीय मूल का प्रथम प्रवासी बनीं। अमेरिका की ओर से 'आउटस्टैंडिंग अमेरिकन बाई च्वाइस' पुरस्कार पाने वाली खातोर को हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री की वैश्विक सलाहकार परिषद में शामिल किया गया।

वैसे, उत्तर प्रदेश में जन्मी खातोर, जिन्होंने पड्र्यू विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर एवं पीएचडी करने के लिए अमेरिका आने से पहले कानपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री ली, का मानना है कि कामयाबी की ऐसी परत को भेदना इतना आसान नहीं था।

हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के डीन नितीन नोहरिया मुंबई में लैंड्स एंड में टाटा समूह द्वारा स्थापित हार्वर्ड बिजनेस स्कूल की प्रथम भारतीय कक्षा में भारत के कुछ टॉप उद्यमियों को संबोधित करते हुए। टाटा सन्स के चेयरमैन रतन टाटा द्वारा उद्घाटित एंफीथिएटर शैली की इस वर्ग कक्षा की क्षमता ८२ छात्रों की है और यह बोस्टन की एमबीए वर्ग कक्षाओं जैसी ही है। हार्वर्ड बिजनेस स्कूल संकाय भारतीय उद्यमियों को बिजनेस, सरकार एवं अकादमिक क्षेत्र में कार्यक्रम उपलब्ध कराएगा। तस्वीर में (बायें से, अगली कतार में) टाटा सन्स के भावी चेयरमैन साइरस मिस्त्री और एचएसबीसी इंडिया की कंट्री हेड नैना लाल किदवई भी दिखाई दे रही हैं।

उन्होंने कहा, ''बतौर आप्रवासी महिला, मुझे हमेशा यह मालूम था कि कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ने के लिए मुझे कड़ी मेहनत करनी होगी। मुझे रास्ते में मौजूद बाधाओं के बारे में पता था। ऐसे अवरोधक जिन्हें बैंबू सीलिंग भी कह सकते हैं।''

अमेरिकी अकादमिक दुनिया की सर्वाधिक प्रतिष्ठित जिम्मेवारियों में से एक को हासिल करने के अनुभवों के बारे में चर्चा करते हुए खातोर ने कहा, ''वैसे, मुझे पूरा भरोसा है कि आप उच्च महात्वाकांक्षा एवं कड़ी मेहनत के बूते, साथ ही अनुभवी मार्गदर्शकों, मददगार दोस्तों और संबंधियों की मदद से, ऐसी सीमाओं को बेध सकते हैं।''

व्यापक परिदृश्य

खतोर की तरह ऐसे दूसरे कई भारतीय भी हैं जिन्होंने बिजनेस स्कूलों से लेकर विज्ञान-तकनीकी संस्थानों, रोबोटिक्स, मनोविज्ञान एवं मस्तिष्क विज्ञान जैसे अकादमिक क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है।

सितंबर, २०१० में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा, जिनके प्रशासन में अतीत के किसी भी दूसरे अमेरिकी राष्ट्रपतियों की तुलना में अधिक भारतीय हैं, ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-मद्रास और मासाचूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) के छात्र रहे सुब्रा सुरेश को नेशनल सांइस फाउंडेशन का निदेशक नियुक्त किया।

अमेरिकी अकादमिक क्षेत्र में प्रतिभा का सिक्का चलता है, जहां प्रतिभावान लोगों को अपनी पृष्ठभूमि के दायरे से ऊपर उठकर फलने-फूलने का भरपूर मौका मिलता है

– रेणु खातोर
चांसलर,
यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन सिस्टम

फंडामेंटल साइंस एवं इंजीनियरिंग रिसर्च के सभी क्षेत्रों में शोध को बढ़ावा देने वाली अमेरिकी सरकार की इस एकमात्र विज्ञान एजेंसी से जुड़ने से पहले सुरेश तीन वर्षों तक एमआईटी में इंजीनियरिंग के डीन थे। वे अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में २१० से अधिक शोध आलेख प्रकाशित करवा चुके हैं, वहीं पांच पुस्तकों के सह-लेखक रहे हैं, जबकि १४ अमेरिकी एवं अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट उनके नाम हैं। एक और भारतीय ६० वर्षीय तंत्रिकाविज्ञानी विलायानुर रामचंद्रन को प्रतिष्ठित टाइम पत्रिका ने दुनिया की १०० सर्वाधिक प्रभावशाली हस्तियों की सूची में रखा है, वहीं उन्हें द ब्लाइंड के लेखक रिचर्ड डॉवकिन्स ने 'मार्कोपोलो ऑफ न्यूरोसाइंस' और नोबल पुरस्कार विजेता एरिक कांडेल ने आधुनिक पॉल ब्रोका करार दिया है। सेंटर फॉर ब्रेन एंड कॉग्निशन के निदेशक एवं सैन डिएगो के यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में मनोविज्ञान एवं तंत्रिका विज्ञान कार्यक्रम विभाग के विशिष्ट प्रोफेसर रामचंद्रन ने कहा, ''लोग इस तथ्य की अनदेखी कर देते हैं कि विज्ञान के एक बड़े हिस्से की जड़ भारत से जुड़ी है।''

दो संस्कृतियों का अनुभव

५५ वर्षीय जमशेद भरूचा वर्ष २००२ तक न्यू हैंपशायर में हनोवर के एक निजी आइवी लीग विश्वविद्यालय डर्टमाउथ कालेज के साइकोलॉजिकल एंड ब्रेन साइंसेज प्रोफेसर थे, जब उन्हें न्यूयार्क स्थित कूपर यूनियन, जो कला, वास्तुकला और इंजीनियरिंग को समर्पित अमेरिका के सर्वाधिक पुराने स्कूलों में से एक है, से जुड़ने से पहले टफ्ट्स यूनिवर्सिटी का प्रोवोस्ट बनने का मौका मिला। भरूचा दोनों संस्कृतियों पर व्यापक पकड़ की बात इस संदर्भ में करते हैं। ऐसी क्षमता भारतीयों को वैश्विक नजरिए से लैस करती है और यह उन्हें शोध एवं अभिनवीकरण के मोर्चों पर पूरब एवं पश्चिम की सर्वश्रेष्ठ खूबियों का मिश्रण करने का मौका देती है। मुंबई में जन्मे भरूचा ने यह कहा।

आईआईटी-मुंबई के ही छात्र रहे रोबोटिक्स कंट्रोल थ्योरी विशेषज्ञ एस. शंकर शास्त्री वर्ष २००७ से बर्कले स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में कालेज ऑफ इंजीनियरिंग के डीन हैं। उन्हें २००१ में नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के लिए चुना गया और १९९० में उन्हें डोनाल्ड पी. एकमैन पुरस्कार मिल चुका है।

एक और आईआईटी छात्र ५४ वर्षीय प्रदीप के. खोसला कार्नेगी मेलॉन के कालेज ऑफ इंजीनियरिंग के डीन बन गए। इससे पहले वे डिफेंस एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेंसी (डीएआरपीए) में कार्यक्रम प्रबंधक थे, जहां उन्होंने रियल-टाइम सिस्टम्स, इंटरनेट-सक्षम सॉफ्टवेयर इंफ्रास्ट्रक्चर, इंटेलिजेंट एवं डिस्ट्रीब्यूटेड सिस्टम्स में ५० मिलियन डालर के पोर्टफोलियो की जिम्मेवारी संभाली।

दो संस्कृतियों पर व्यापक पकड़ हमें वैश्विक नजरिए से लैस करती है और शोध एवं अभिनवीकरण के मोर्चों पर पूरब एवं पश्चिम की सर्वश्रेष्ठ खूबियों का मिश्रण करने का मौका देती है...

– जमशेद भरूचा
प्रोफेसर, साइकोलॉजिकल एंड ब्रेन साइंसेज डिपार्टमेंट, डर्टमाउथ कालेज

'बी'-स्कूल का सांचा

बहरहाल, भारतीय मूल के लोगों के लिए शीर्ष प्रबंधन स्कूलों में उच्च हलके में पैठ का मौका थोड़ा दुर्लभ बना हुआ था, पर वर्ष २००१ में असमी मूल के ५४ वर्षीय दीपक सी. जैन, जो गणित एवं सांख्यिकी में प्रशिक्षित मार्केटिंग विशेषज्ञ हैं, ने २००१ में प्रतिष्ठित केलॉग स्कूल का डीन बनकर भारतीयों के लिए प्रेरणा बन गए। २००६ में वे इस पद से दूर हुए और मार्च २०११ में दुनिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों में से एक फ्रांस के फोंटेनब्लियू स्थित इनसीड के डीन बने। भारतीय मूल के कम से कम छह लोग प्रतिष्ठित अमेरिकी बी-स्कूलों का नेतृत्व कर रहे हैं। इनमें आईआईटी मुंबई से पढ़े ४६ वर्षीय नितीन नोहरिया, जिन्हें जुलाई २०१० में दुनिया के संभवतः सर्वाधिक प्रतिष्ठित बिजनेस स्कूल हार्वर्ड बिजनेस स्कूल का डीन बनने का गौरव हासिल हुआ, प्रमुखता से शामिल हैं। यहां यह उपलब्धि हासिल करने वाले वे प्रथम भारतीय हैं।

गीता पीरामल और स्वर्गीय सुमंत्रा घोषाल के साथ मिलकर भारतीय बिजनेस एवं प्रबंधन पत्रिका 'द स्मार्ट मैनेजर' शुरू करने वाले नोहरिया कहते हैं, ''जब हमने एचबीएस में पढ़ाना शुरू किया था (वर्ष १९८८ में) तो भारतीय या चीनी केस स्टडीज तलाशना कठिन था। आज भारतीय कंपनियों पर ८० केस स्टडीज हैं।'' वे एचबीएस के 'बिगेस्ट करिक्यलम वाइटी चेंज इन अर्ली ८० ईयर्स' से छात्रों को परिचित कराकर उन्हें प्रबंधन के क्षेत्र में वैश्विक अनुभवों से लैस करना चाहते हैं।

आईआईटी दिल्ली के छात्र रहे ४८ वर्षीय सौमित्र दत्त भी कार्नेल यूनिवर्सिटी के सैमुअल कर्टिस जॉनसन ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट का नेतृत्व करने वाले प्रथम भारतीय होने का गौरव उस वक्त हासिल कर लेंगे जब १ जुलाई को वे संस्थान के ११वें डीन की बागडोर संभालेंगे। फिलहाल, फ्रांस के इंस्टीड स्थित बिजनेस एंड टेक्नोलॉजी में रोलैंड बर्गर पीठ के प्रोफेसर दत्ता उभरते हुए बाजारों पर अधिक फोकस करते हुए ब्राजील, भारत, चीन और इंडोनेशिया जैसे देशों से छात्रों एवं संकाय सदस्यों को आकर्षित करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा, ''भारत को और अधिक निम्नांकित आंतरिक सुधार की जरूरत है : स्वच्छ नेतृत्व, सामूहिक महत्वाकांक्षा और साहसिक फैसले लेने का माद्दा। भारतीय नेतृत्व को यह ज्यादा सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उसकी अर्थव्यवस्था पटरी से नीचे नहीं उतरे।''

'वैश्विक दृष्टिकोण'

बेंगलुरु में जन्मे ४३ वर्षीय सुनील कुमार ने एक और टॉप संस्थान शिकागो विश्वविद्यालय के बूथ स्कूल ऑफ बिजनेस का डीन पद १ जनवरी, २०११ को संभाला। इससे पहले वे स्टैंफर्ड यूनिवर्सिटी ऑफ ग्रेजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस के संकाय सदस्य की हैसियत से १४ वर्षों तक सेवा दी, जहां वे संचालन, सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग में फ्रेड एच. मेरिल चेयर के प्रोफेसर रहे। वे कहते हैं, ''अमेरिका में रहने वाले भारतीय सशक्त वैश्विक दृष्टिकोण के स्रोत हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली की ताकत भारतीयों

विलायानुर रामचंद्रन, विशिष्ट प्रोफेसर, मनोविज्ञान एवं तंत्रिका विज्ञान विभाग, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय,

एस. शंकर शास्त्री, डीन, कालेज ऑफ इंजीनियरिंग, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले

प्रदीप के. खोसला, डीन, कालेज ऑफ इंजीनियरिंग, कार्नेगी मेलॉन

दीपक सी. जैन, पूर्व डीन, केलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एवं इनसीड, फ्रांस, के डीन

नितीन नोहरिया, डीन, हार्वर्ड बिजनेस स्कूल

सौमित्र दत्ता, डीन-डेजिग्नेट, सैमुअल कर्टिस जॉनसन ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, कार्नेल यूनिवर्सिटी

हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में मार्केटिंग विभाग के प्रमुख एवं बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के एडवार्ड डब्ल्यू. कार्टर प्रोफेसर सुनील गुप्ता अपनी एक कक्षा में।

को इस मामले में बढ़त प्रदान करती है।''

मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के स्नातक और कारोबारी शिक्षा के विकासकर्ता व अंतर्राष्ट्रीय मार्केटिंग के विशेषज्ञ ४६ वर्षीय जयशंकर गणेश प्रतिष्ठित रटगर्स स्कूल ऑफ बिजनेस कैमडेन का संपूर्ण एवं स्थायी डीन बनने वाले प्रथम एशियाई-भारतीय हैं, जिन्हें यह पद अगस्त २०१० में हासिल हुआ।

वहीं, एक वैश्विक तलाश का नतीजा भारतीय मूल के ५४ वर्षीय जी. 'आनंद' आनंदलिंगम के मेरीलैंड यूनिवर्सिटी स्थित एच. स्मिथ स्कूल ऑफ बिजनेस, जो अमेरिका के शीर्ष १५ बिजनेस स्कूलों में से एक है, का डीन बनने के रूप में निकला। उन्हें जुलाई २००८ में इस पर नियुक्त होने का गौरव हासिल हुआ। वर्ष २००१ से यहां काम करते हुए उन्होंने संस्थान के सेंटर फॉर इलेक्ट्रानिक मार्केट्स एंड इंटरप्राइजेज की स्थापना की। उन्होंने स्वास्थ्य सूचना एवं निर्णय प्रणालियों पर इसके केंद्र की स्थापना में भी मदद दी। एक और भारतीय डा. यश पी. गुप्ता, जिन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी से बी. एससी की डिग्री और ब्रैडफोर्ड यूनिवर्सिटी, इंग्लैंड, से मैनेजमेंट साइंस में पीएच.डी की डिग्री ली, को जॉन हॉपकिन्स कैरे बिजनेस स्कूल समेत चार प्रमुख शोध विश्वविद्यालयों में बिजनेस स्कूलों का डीन रहने का मौका मिला। वे इन पदों पर १७ साल से ज्यादा रहे। अजय पटेल नॉर्थ कैरोलिना के वेक फारेस्ट यूनिवर्सिटी में सेंटर फॉर इंटरप्राइज रिसर्च एंड एजुकेशन के निदेशक एवं प्रोफेसर हैं। वे इसके जीएमएसी चेयर ऑफ फाइनेंस से भी जुड़े हैं। इससे पहले बैबकॉक ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के डीन रहे पटेल ने सभी एमबीए कार्यक्रमों में ११ बार एडुकेटर ऑफ द ईयर का अवार्ड पाया।

बाम्बे यूनिवर्सिटी से सांख्यिकी एवं अर्थशास्त्र में स्नातक महेंद्र गुप्ता जुलाई २००५ में सेंट लुइस के वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के ओलिन बिजनेस स्कूल के डीन बने। उन्हें

अमेरिका में भारतीय निश्चित तौर पर एक सशक्त वैश्विक परिप्रेक्ष्य के प्रेरणास्रोत रहे हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली की ताकत इन भारतीयों को बढ़त प्रदान करती है...

– सुनील कुमार
डीन, बूथ स्कूल ऑफ बिजनेस, शिकागो विश्वविद्यालय

२००१ से अब तक छात्रों की ओर से आठ बार रेड टीचिंग अवार्ड मिल चुका है।

शीर्ष सम्मान

पिछले साल अमेरिकी सरकार ने भारतीय मूल के तीन प्रोफेसरों/वैज्ञानिकों को विज्ञान के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ सम्मान दिया गया। वर्तमान में एनसी स्टेट यूनिवर्सिटी में डिस्टिंग्श्ड यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, पावर सेमीकंडक्टर रिसर्च सेंटर के निदेशक, नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के सदस्य और द इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर्स के फेलो डा. जयंत बलिगा ने अपने द्वारा विकसित इंसुलेटेड गेट बाइपोलर ट्रांजिस्टर की मदद से सेमीकंडक्टर उद्योग में क्रांति ला दिया है। इसने आविष्कारों को देखते हुए अमेरिकी सरकार ने उन्हें नेशनल मेडल ऑफ टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन का पुरस्कार पिछले साल दिया। साइंटिस्ट अमेरिकन ने उन्हें 'सेमीकंडक्टर क्रांति के आठ नायकों में से एक' करार दिया है।

ऐसी सूची में भारतीय-अमेरिकी गणितज्ञ डा. श्रीनिवास वर्धन भी शामिल हैं, जिन्होंने संभाव्यता के सिद्धांत में क्रांतिकारी योगदान दिया है, जिससे 'घटनाओं' को समझने में मदद मिली है।

उनका यह शोध क्वांटम सिद्धांत से लेकर बीमा क्षेत्र जैसे विविध क्षेत्रों के लिए उपयोगी है। वर्धन न्यूयार्क यूनिवर्सिटी में कोरंट इंस्टीट्यूट ऑफ मैथेमेटिकल साइंस में विज्ञान के फ्रैंक जे गुल्ड प्रोफेसर हैं।

प्रो. राकेश अग्रवाल, जो इस अमेरिका के इस सर्वाधिक विज्ञान सम्मान से सम्मानित होने वाले तीसरे भारतीय हैं, इंडियाना के पड्र्यू यूनिवर्सिटी में विंध्रोप ई. स्टोन डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर हैं। उनके नाम ११६ अमेरिकी पेटेंट और करीब ५०० गैर-अमेरिकी पेटेंट हैं।

'कामयाबी का इतिहास'

'अमेरिकी अकादमिक दुनिया में भारतीयों की कामयाबी का इतिहास पुराना रहा है।' यह कहना है कोलंबिया विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, भारतीय राजनीतिक अर्थशास्त्र में जगदीश भगवती पीठ के प्रोफेसर एवं ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन में अनिवासी वरिष्ठ फेलो अरविंद पानागरिया का।

ग्लोबल ऑर्गनाइजेशन फॉर पीपुल ऑफ इंडियन ऑरिजन (गोपियो) के संस्थापक अध्यक्ष डा. थॉमस अब्राहम ने कहा, ''भारतीय अमेरिकियों ने अमेरिकी अकादमिक क्षेत्र में इसलिए प्रभाव डालना शुरू कर दिया है, क्योंकि हमारे समुदाय से सक्षम लोगों की उपस्थिति एवं उपलब्धता बढ़ती जा रही है।''

उन्होंने कहा, ''अमेरिकी अकादमिक दुनिया में भारतीय अमेरिकियों के शीर्ष पर पहुंचने का चलन और जोर पकड़ेगा।''

जयशंकर गणेश, स्थायी डीन, रटगर्स स्कूल ऑफ बिजनेस, कामडेन

जी. ''आनंद'' आनंदलिंगम, डीन, रॉबर्ट एच. स्मिथ स्कूल ऑफ बिजनेस, मेरीलैंड यूनिवर्सिटी

यश पी. गुप्ता, पूर्व डीन, जॉन्स हॉपकिन्स कैरे बिजेनस स्कूल एवं लोगानब्रिटन के वर्तमान सीईओ

अजय पटेल, प्रोफेसर एवं जीएमएसी चेयर, वित्त और सेंटर फॉर इंटरप्राइज रिसर्च एंड एजुकेशन, वेक फारेस्ट, के निदेशक

महेंद्र गुप्ता, डीन, ओलिन बिजनेस स्कूल, वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, सेंट लुइस

अरविंद पानागरिया, प्रोफेसर, कोलंबिया यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स

सिद्धार्थ योग

आनंद महिंद्रा

राजेन किलाचंद

जॉन एन. कपूर

भारतीयों ने अपने शिक्षा संस्थानों की भरी झोली

अपनी सफलता का श्रेय अपने प्रतिष्ठित अमेरिकी संस्थानों को देने वाले कई भारतीयों ने अपने इन संस्थानों की झोली भरने में खास योगदान दिया है।

इस सूची में टाटा समूह के चेयरमैन रतन टाटा सबसे ऊपर हैं, जिन्होंने १९७५ में हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में अध्ययन किया था। उन्होंने इस संस्थान को ५० मिलियन डालर का दान दिया है जो संस्थान के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय दान है। अक्टूबर २०१० में टाटा ग्रुप द्वारा दिया गया यह दान संस्थान के परिसर में 'टाटा हॉल' नामक एक नए अकादमिक एवं आवासीय भवन के लिए है, जो संस्थान के एग्जीक्यूटिव एजुकेशन प्रोग्राम के भागीदारों के लिए होगा।

उसी महीने महिंद्रा एंड महिंद्रा के वाइस-चेयरमैन आनंद महिंद्रा, जिन्होंने १९८१ में हार्वर्ड से एमबीए की पढ़ाई की, ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी को १० मिलियन डालर का दान दिया जो उनकी मां इंदिरा महिंद्रा के सम्मान में एक ह्यूमैनिटीज सेंटर की स्थापना में खर्च होगा। यह हार्वर्ड में मानविकी के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए अब तक का सबसे बड़ा दान है। नवंबर २०११ में द जैंडर ग्रुप इंक, जो भारत-केंद्रित बाजार निवेश कंपनी है, के संस्थापक एवं प्रबंधन निदेशक सिद्धार्थ योग ने हार्वर्ड को दो नए प्रोफेसरशिप के शुभारंभ एवं एक बौद्धिक उद्यमिता कोष के लिए ११,०००,००१ डालर का दान दिया। इसके दायरे में छात्रों के लिए फेलोशिप एवं वित्तीय सहायता भी शामिल है।

सितंबर, २०११ में दुबई स्थित उद्यमी राजेन किलाचंद ने बोस्टन यूनिवर्सिटी को २५ मिलियन डालर दानस्वरूप देने की घोषणा की, जो इस संस्थान के इतिहास में सबसे बड़ा निजी दान है। विश्वविद्यालय ने अपने ऑनर्स कालेज का नाम उनके माता-पिता अरविंद एंड चंदन नंदलाल किलाचंद ऑनर्स कालेज रखा है।

अप्रैल २०११ में इन्फोसिस टेक्नोलॉजीज के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी एवं हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस को एक नई प्रकाशन श्रृंखलाएं शुरू करने के लिए ५.२ मिलियन डालर का दान दिया।

''भारतीय संपर्क के कारण हमने आर्थिक योगदान दिए। यह विद्वानों एवं शोध का दोतरफा प्रवाह साबित होगा'', सार्वजनिक दातव्य प्रतिष्ठान अर्घ्यान की संस्थापक रोहिणी नीलेकनी ने कहा

''मूर्ति क्लासिकल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया'' भावी पीढ़ियों तक भारतीय की शास्त्रीय विरासत को दुनिया भर में उपलब्ध कराएगी।''

नवंबर, २००८ में इन्फोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकनी और उनकी पत्नी रोहिणी ने येल विश्वविद्यालय को ५ मिलियन डालर का दान दिया, जिसका इस्तेमाल येल इंडिया इनीशिएटिव, जो येल विश्वविद्यालय को भारत एवं दक्षिण एशिया के प्रमुख संस्थानों के साथ संपर्क बढ़ाने एवं इस क्षेत्र पर शोध करने वाले संस्थानों में शामिल कराएगा, पर किया जाएगा।

वर्ष २००८ में अमृतसर में जन्मे जॉन एन. कपूर, जिन्हें दवा उद्योग में उनके गहन विजन के लिए जाना जाता है, ने बफेलो के स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क में एक फार्मेसी स्कूल में ५ मिलियन डालर का निवेश किया, जिसका उद्देश्य संकाय शोध के लिए एक कोष की स्थापना करना, छात्रों को वित्तीय मदद प्रदान करना एवं उभरती तकनीकों पर शोध को बढ़ावा देना है। तब से कपूर विश्वविद्यालय को १०.८ मिलियन डालर से अधिक की मदद प्रदान कर चुके हैं।

अन्य भारतीयों जिन्होंने व्यापक योगदान दिया है, उनमें फ्लोरिडा के एक डाक्टर दंपती किरण पटेल और उनकी पत्नी पल्लवी, जिन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ फ्लोरिडा को ५ मिलियन डालर दान दिया, प्रमुखता से शामिल हैं। इसका उद्देश्य किरण सी. पटेल सेंटर फॉर ग्लोबल सॉल्युशंस के निर्माण पर खर्च करना है।

– अरुण कुमार

वह भारतीय प्रोफेसर...

आईवी लीग पर उनका राज है और उनका प्रभाव वाकई वैश्विक है... इनमें से अधिकांश ने भारत में विश्वस्तरीय शिक्षा हासिल की है, यह मानना है रोहित बंसल का

हार्वर्ड में मेरी मित्र मंडली के सदस्य और वर्तमान में बोर्ड ऑफ द नीदरलैंड्स कांपीटिशन अथॉरिटी के चेयरमैन क्रिस फोंटेजन को अपने एकाउंटिंग प्रोफेसर का नाम ठीक से याद नहीं है। लेकिन प्रो. श्रीकांत दातर, जिनका नाम ठीक से याद नहीं होने के कारण क्रिस और समरसेट क्रिकेट काउंटी के सीईओ रिचर्ड गाउल्ड उनका 'वह भारतीय प्रोफेसर' कहकर परिहास करते हैं, ने इन दोनों के निखार में योगदान दिया।

दातर का नाम उन्हें याद होना चाहिए था, क्योंकि वे कोई साधारण शख्स नहीं हैं। वे न सिर्फ इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद, से दोहरा गोल्ड मेडल विजेता हैं, बल्कि नोवार्टिस के बोर्ड में बैठते हैं और जब वे हार्वर्ड बिजनेस स्कूल (एचबीएस) के वरिष्ठ एसोसिएट डीन नहीं होते हैं, तो वे 'एमबीए का खांका' तय करने में विचारमग्न होते हैं। जी हां, एक ऐसा अति लोकप्रिय कोर्स जो इस संस्थान में इसके सौवें साल में शुरू हुआ था। उनके इस मिशन में भारत एवं चीन जैसे देशों के शिक्षामंत्री उनके सहयोगी हैं।

भारतीय मेधा की श्रेष्ठता के ऐसे कई और उदाहरण हैं। एचबीएस में भारतीय उच्च मेधा की व्यापक उपस्थिति है। संस्थान की संकाय सूची में शामिल कुल २७६ सदस्यों में से २५ से अधिक भारतीय मूल के हैं। इस विश्वविद्यालय में भरत आनंद से लेकर गुहान सुब्रह्मण्यम - जो हार्वर्ड लॉ स्कूल में प्रोफेसर हैं - तक भारतीय संकाय सदस्यों की सूची बड़ी एवं प्रभावशाली रही है।

२६/११ की घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में 'निःस्वार्थ एवं नेतृत्व' विषय पर रोहित देशपांडे का चर्चित शोध एवं 'टाटा कार्य संस्कृति' पर तरुण खन्ना का शोध कार्य एमबीए स्टार्ट-अप द्वारा स्वर्ण मानक के तौर पर इस्तेमाल किए जाते हैं।

सुनील गुप्ता एवं राजीव गुलाटी द्वारा मार्केटिंग पर किए गए केस स्टडी का इस्तेमाल फार्चून-५० कंपनियां बहुपयोगी अवधारणा के तौर पर कर सकती हैं। 'उपभोक्ता-केंद्रीयता' पर शोध के लिए जाने जाने वाले राजीव गुलाटी सुजी वेस्च के प्रख्यात प्रसारण सहयोगी के तौर पर भी जाने जाते हैं।

हार्वर्ड अध्यक्ष ड्रियू फॉस्ट ने विधि, राजनीति और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों पर हार्वर्ड की वैश्विक पहल के नेतृत्व के मोर्चे पर भारतीय मूल के कृष्णा पालेपू को रखा। ऐसे में 'इन' भारतीय प्रोफेसरों की कामयाबी का राज क्या है?

इसके पीछे तीन कारण हैं। पहला, भारत में इन प्रोफेसरों को मिली उच्च स्तरीय आधार शिक्षा - देशपांडे ने बॉम्बे से बीएससी एवं नॉर्थवेस्टर्न से एमबीए की डिग्री ली, वहीं गुलाटी सेंट स्टीफेन्स एवं आईआईएम-ए के छात्र रहे हैं। इन शिक्षकों को भारत में विश्वस्तरीय गुणवत्तापूर्ण आधार शिक्षा मिली, जिसकी बुनियाद पर वे खुद को आगे की उच्च शिक्षा के मुताबिक ढाल सके।

दूसरा, इनमें से कई ने डाक्टोरल एवं पोस्ट-डाक्टोरल कार्य के लिए अमेरिका को पसंद किया। आनंद प्रिंसटन गए, डातर स्टैनफर्ड और गुप्ता कोलंबिया गए।

तीसरा है एक स्पष्ट कारण जो किसी से छिपा नहीं है कि उन्होंने वाकई खूब मेहनत की है और उन्होंने शोध को उद्योग एवं उद्योग को शोध से जोड़ने में खास दिलचस्पी दिखाई।

दुनिया के 'सर्वाधिक वैश्वीकृत संस्थान' एचबीएस के डीन नितीन नोहरिया का इस संस्थान से जुड़ा विजन इन नामी भारतीय प्रोफेसरों का साझा विजन कहा जा सकता है। नोहरिया संस्थान में अमेरिका से बाहर के शोध मामलों को ५० फीसदी (जब वे एचबीएस से ८० के दशक में जुड़े थे तो गैर-अमेरिकी शोध मामले १० फीसदी से भी कम हुआ करते थे) से ज्यादा के स्तर पर पहुंचाना चाहता हैं और वे बोस्टन में अपने सहयोगियों द्वारा विकसित विशद शोध दायरों से प्रेरणा लेते हुए शोध विषयों की विविधता भी बढ़ाना चाहते हैं।

नोहरिया के साथ साक्षात्कार के दौरान इस लेखक ने जानना चाहा कि नोहरिया अपनी सफलता को 'भारतीय' मानते हैं या 'अमेरिकी'। उनका जवाब लगभग वैसा भी था जैसा कि उपरोक्त भारतीय प्रोफेसरों का। उन्होंने कहा, ''अमेरिका आने वाले दूसरे आप्रवासियों की तरह मैं भी अपनी भारतीय विरासत पर उतना ही गौरवान्वित हूं जितना अपनी अमेरिकी नागरिकता पर। दो भिन्न देशों में अपनी ज़िंदगी का लगभग आधा हिस्सा बिताने के कारण मुझे भिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने की प्रेरणा मिलती रही है।'' नोहरिया या एचबीएस की कहानी कार्नेल (सौमित्र दत्ता), शिकागो बूथ (सुनील कुमार) और केलॉग नॉर्थवेस्टर्न (दीपक जैन अब इनसीड का हिस्सा बन चुके हैं) में भी दोहराई गई है। दूसरी पीढ़ी की कामयाबी का उदाहरण प्रिया रंजन जैसी शख्सियत भी हैं। इर्विन में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में उनके अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र कोर्स के लिए छात्रों की कतार लंबी है। यही हाल कोलंबिया में श्रीनाथ श्रीनिवासन के न्यू मीडिया वेयर केंद्रित कोर्स का है।

स्थायी सावधिक प्रोफेसरों (प्रोफेसरों की ऐसी जमात जो अकादमिक आजादी एवं जीवनपर्यंत रोजगार से लैस है) से लेकर पेनसिलवानिया के प्राध्यापक विवेक भंडारी तक, जिन्हें बोस्टन और वाशिंगटन के बीच आई-९५ कारिडॉर कहा जाता है, 'ये भारतीय प्रोफेसर' भारत के सॉफ्ट पॉवर को व्यापक दायरा प्रदान करते हैं। इस मौजूदा ट्रेंड के बारे में क्या कहा जाए? यह सही है कि हर कोई अमेरिका में ही ठिठका हुआ नहीं है।

अमेरिका में जो लोग भारत पर शोध अध्ययन नहीं कर रहे हैं या जो पूर्णकालिक अध्यापन नहीं कर रहे हैं, वे वास्तव में वापस भी लौट रहे हैं। भंडारी ने तो अपने संस्थान में पूर्णकालिक अध्यापक जिम्मेवारी होने के बाद भी लौटने का फैसला कर लिया, क्योंकि उन्हें २००७ में ३७ साल की उम्र में ही आनंद स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट का नेतृत्व करने का मौका मिल गया। वे अपनी वतन वापसी की व्याख्या उस प्रवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में करते हैं कि ''अमेरिका में पढ़ाने वाले युवा एसोसिएट प्रोफेसर तेज ऊर्ध्व कामयाबी के बाद एक पड़ाव पर पहुंचकर यह महसूस करने लगते हैं कि उन्हें आकर्षक वेतन वाली ऐसी जिम्मेवारी उनके वतन के कुछ निजी विश्वविद्यालय में भी मिल सकती है।''

क्या भंडारी की तरह कई और गुरू या न्यू-एज की अकादमिक हस्तियां भारत लौटेंगी? या क्या वह जगह उनके लिए कम संगत बन जाएगी जहां वे अपना आईडी कार्ड स्वाइप करते रहे हैं? स्वाभाविक तौर पर, ऐसी अपेक्षा हमेशा बनी रहेगी और बड़े पैमाने पर बनी रहेगी। लेकिन, यह भी विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि पूरी दुनिया में इन गुणवान प्रोफेसरों द्वारा मांगी जाने वाली 'गुरु दक्षिणा' हमेशा मोटी बनी रहेगी!

(मीडिया में १८ वर्षों की पारी के बाद रोहित बंसल ने एचबीएस से एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम पूरा किया। वे इंडिया स्ट्रेटजी ग्रुप, हम्मूराबी एंड सोलोमन कंसल्टिंग के सीईओ एवं सह-संस्थापक हैं। ईमेल : rohitbansal@post.harvaard.edu)

ग्रामैटोलॉजी से फाइनाइट ग्रुप थ्योरी तक : महान अप्रवासी भारतीय

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक
यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, कोलंबिया यूनिवर्सिटी

उत्तर-उपनिवेशवाद एवं लैंगिकता अध्ययन की स्तंभों में से एक स्पिवाक ने ब्रिटिश-फ्रांसीसी दार्शनिक माइकल देरिदा की जटिल रचना ऑफ ग्रामैटोलॉजी का अनुवाद किया।

जगदीश एन. भगवती
यूनिवर्सिटी प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग, कोलंबिया यूनिवर्सिटी

लगभग हर साल नाबेल पुरस्कार के दावेदार रहे भगवती, जो वैश्वीकरण के पैरोकार हैं, ने विश्व व्यापार संगठन एवं संयुक्त राष्ट्र में सेवा दी है।

जगदीश शुक्ला
यूनिवर्सिटी प्रोफेसर क्लाइमेट डायनमिक्स, जॉर्ज मेसन यूनिवर्सिटी

'पद्म भूषण' विजेता शुक्ला शीर्ष मौसम विज्ञानी हैं। संयुक्त राष्ट्र ने उन्हें जलवायु परिवर्तन के लिए ५२वां इंटरनेशनल मेटियोरॉलिजकल ऑर्गनाइजेशन प्राइज दिया।

मीनाक्षी वधवा
प्रोफेसर, वाशिंगटन यूनिवर्सिटी

वधवा नासा की उन टीमों का हिस्सा रही हैं जो परग्रही जीवन की तलाश करती हैं और उनके नाम पर एक उल्कापिंड के नामकरण का गौरव उन्हें हासिल है।

विद्या देहेजिया
बारबरा स्टोलर मिलर प्रोफेसर, भारतीय एवं दक्षिण एशियाई कला, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी

इस साल पद्म भूषण से नवाजी गईं देहेजिया से बौद्ध कला से लेकर गूढ़ मंदिरों तक का अध्ययन किया है। वे 'द बॉडी एडॉर्न्ड' नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचनाकार हैं।

विजय प्रसाद
जॉर्ज एंड मार्था केलनर चेयर इन साउथ एसियन हिस्ट्री, त्रिनिटी कालेज

अपने क्रांतिकारी विचारों के लिए प्रसिद्ध प्रसाद अरब स्प्रिंग, लिबियन विंटर और अंकल स्वामी : *साउथ एसियन इन अमेरिका* टुडे जैसी पुस्तकों के लेखक हैं।

अमेरिका में शोध एवं अभिनवीकरण के मोर्चे पर आगे

श्रीराम शंकर अभ्यंकर
मार्शल डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर ऑफ मैथेमेटिक्स, पड्र्यू यूनिवर्सिटी

बीजगणितीय ज्यामिति के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए जाने जाने वाले अभ्यंकर की 'अभ्यंकर' कान्जेक्चर ऑफ फाइनाइट ग्रुप थ्योरी उनके नाम से जानी जाती है।

अखिल रीड अमर
स्टर्लिंग प्रोफेसर ऑफ लॉ एंड साइंस, येल यूनिवर्सिटी

अमेरिका के शीर्ष कानून विशेषज्ञों में से एक अखिल को उनकी पुस्तक अमेरिकाज कॉन्स्टीट्यूशन : ए बायोग्राफी के लिए जाना जाता है।

सी. राधाकृष्ण राव
एबर्ली प्रोफेसर, एमिरिटस ऑफ स्टैटिस्टिक्स, पेन स्टेट यूनिवर्सिटी

राव सांख्यिकी विशेषज्ञ हैं। सांख्यिकी किताबों में 'क्रेमर-राव इनइक्वेलिटी', 'राव-ब्लैकवेलीजेशन', 'रावज स्कोर टेस्ट' की चर्चा है, जिनके सूत्रधार वे हैं।

मधु सूदन
प्रधान शोधकर्ता, माइक्रोसॉफ्ट एडजंक्ट प्रोफेसर, ईईसीएस, एमआईटी

प्रतिष्ठित रोल्फ नेवनलिना प्राइज से सम्मानित सूदन को कंप्यूटर विज्ञान गणित में उल्लेखनीय योगदान के लिए जाना जाता है।

जे.एन. रेड्डी
डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर एंड ऑस्कर एस. व्याट इंडोड चेयर, यूनिवर्सिटी ऑफ अलबामा

यांत्रिकी के क्षेत्र में महान सिद्धांतकार रेड्डी ने 'फाइनाइट एलीमेंट मेथड', 'प्लेट थ्योरी', सॉलिड मेकेनिक्स आदि के क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान दिया।

होमी के. भाभा
एन. एफ. रोदेनबर्ग प्रोफेसर ऑफ ह्यूमैनिटीज, अंग्रेजी विभाग, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी

उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत, सांस्कृतिक परिवर्तन एवं शक्ति, सर्वदेशीयता क्षेत्रों के सूत्रधार भाभा ने नेशन एंड नैरेशन, द लोकेशन ऑफ कल्चर जैसी किताबें लिखीं।

(फाइल चित्र) न्यूजर्सी के ओक ट्री इलाके में भारत का स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए भारतीय अमेरिकी।

प्रभाव का सामूहिक सुर

भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिकी राजनीति की धारा को प्रभावित करने वाला एक असरदार समुदाय बन गया है

जब राष्ट्रपति बराक ओबामा नवंबर में होने वाले चुनाव में एक बार फिर से अपनी किस्मत आजमा रहे हैं, भारतीय अमेरिकी समुदाय अमेरिकी मतदाता वर्ग का एक महत्वपूर्ण संघटक बनकर उभरा है। दक्षिण एशियाइयों के जनसांख्यिक परिदृश्य से इसकी पुष्टि होती है। बतौर अमेरिकी नागरिक मताधिकार हासिल करने वाले भारतीय अमेरिकियों की तादाद १० लाख के आंकड़े को पार कर चुकी है। २००० से २०१० की अवधि में इस समुदाय की आबादी ६८ फीसदी बढ़कर १.६ मिलियन से ३.१६ मिलियन हो गई है। अमेरिका में दक्षिण एशियाई समुदायों के सशक्तिकरण को समर्पित एक संगठन द्वारा जारी आंकड़े से इसकी पुष्टि होती है। २०१० की जन गणना के आधार पर यह निष्कर्ष निकला है कि वर्ष २००० की तुलना में ऐसे भारतीय अमेरिकी नागरिकों की संख्या में १०० फीसदी की वृद्धि हुई है जिन्हें वोट देने का अधिकार है। २००० में यह संख्या जहां ५७६,००० थी, वहीं २०१० में यह बढ़कर १.१५ मिलियन हो गई है। साउथ एशियन अमेरिकन्स लीडिंग टूगेदर (साल्ट) और एशियन अमेरिकन फेडरेशंस (एएएफ) ने इसकी पुष्टि की है। वर्ष २००० से वोटिंग एज वाले गैर-अमेरिकी नागरिकों की तादाद भी बढ़ी है। इनमें ऐसे ग्रीन-कार्ड धारक शामिल हैं जो भविष्य में अमेरिका के नागरिक बन सकते हैं और बढ़ती मतदाता आबादी में शामिल हो सकते हैं। भारतीय अमेरिकी समुदाय तेजी से फलते-फूलते हुए अब चीनी अमेरिकियों (३.७६ मिलियन) और फिलिपीनो अमेरिकियों (३.४२ मिलियन) समुदायों के बाद अमेरिका का तीसरा सबसे बड़ा एशियाई अमेरिकी समुदाय बन गया है। ऐसे लोग जो अपनी पहचान भारतीय मूल के नागरिकों के तौर पर करते हैं वे ३.४ मिलियन दक्षिण एशियाई अमेरिकियों का सबसे बड़ा समूह हैं। दक्षिण एशियाई अमेरिकी समुदाय का ८० फीसदी हिस्सा भारतीयों का है, इसके बाद पाकिस्तानियों, बांग्लादेशियों, श्रीलंकाइयों, नेपालियों और भूटानियों का नंबर आता है। एक ओर जहां पिछले दशक में दक्षिण एशियाई समुदाय की आबादी में ७८ फीसदी की वृद्धि हुई, भारतीय अमेरिकी समुदाय की आबादी वृद्धि दर सबसे कम रही।

बांग्लादेशी समुदाय की आबादी में २०१० तक २१२ फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई और यह १४७,३०० हो गयी। भूटानी और नेपाली आबादी की संयुक्त वृद्धि दर कम से कम १५५ फीसदी रही।

दक्षिण एशियाई अमेरिकी समुदाय का दूसरा सबसे बड़ा संघटक पाकिस्तानी अमेरिकी समुदाय की आबादी इस अवधि में १०० फीसदी बढ़कर २०४,००० से ४०६,००० हो गई, वहीं श्रीलंकाइयों की आबादी ८५ फीसदी बढ़कर २४,५०० से ४५,४०० हो गई।

ऐसे प्रांत जहां दक्षिण एशियाइयों की तादाद ज्यादा रही है, वहां २०१० में भी यह स्थिति देखी गई। इस समुदाय की सर्वाधिक आबादी वाले पांच राज्य हैं कैलिफोर्निया, न्यूजर्सी, टेक्सास और इलिनॉय। पिछले दस वर्षों में वाशिंगटन डीसी मेट्रोपॉलिटन इलाके ने दक्षिण एशियाइयों के सबसे बड़े तीसरे ठिकाने का दर्जा हासिल कर लिया।

बड़े महानगरीय शहरों से परे दक्षिण एशियाइयों की आबादी में सर्वाधिक इजाफा उत्तरी कैरोलिना के चार्लोटे में हुआ। यहां इसकी आबादी में १८७ फीसदी की वृद्धि हुई।

इसके बाद फीनिक्स (अरिज़ोना), रिचमंड (वर्जीनिया), रालेघ (नॉर्थ कैरोलिना), सैन एंटोनियो (टेक्सास), सिएटल (वाशिंगटन), स्टॉकटन (कैलिफोर्निया), जैक्सनविले (फ्लोरिडा), हैरिसबर्ग (पेनसिलवानिया) और लास वेगास (नेवादा) का नंबर आता है।

एनआरआई को सौगात

बजट में एनआरआई के लिए कई सौगातों की घोषणा की गई है और कर संबंधी उनके भय को भी दूर कर दिया गया है, नई दिल्ली से कुल भूषण का आकलन

अब कोई अनिवासी भारतीय (एनआरआई) ३५,००० रुपये (६८५ डालर) तक की सीमाशुल्क मुक्त वस्तुओं के साथ भारत में कदम रख सकेगा। २५,००० रुपये की रियायत सीमा को अब ३५,००० रुपये कर दिया गया है। हर साल लाखों भारतीय विदेशों की यात्रा करते हैं और वे अपनी यात्रा पर मोटी खर्च करने के लिए जाने जाते रहे हैं, ऐसे में वे ५०,००० (१००० डालर) रुपये की सीमा तय किए जाने की उम्मीद कर रहे थे। उनका तर्क है कि डिजाइनर वस्तुओं, जिनकी ललक मध्य और उच्च आय वाले भारतीयों एवं एनआरआई में बढ़ती जा रही है, की कीमतों में इजाफे को देखते हुए यह सीमा भी छोटी है। वैसे, वे एक लैपटॉप, एक मोबाइल और एक कैमरा और कुछ दूसरी छोटी-मोटी वस्तुओं के अलावा ३५,००० रुपये तक की वस्तुओं के साथ ग्रीन चैनल से होकर गुजर सकेंगे।

बजट ने उनका यह भय भी दूर कर दिया है कि एनआरआई को भारत में साल में ६० दिनों से अधिक प्रवास करने पर अपनी वैश्विक आय पर भारत में आयकर चुकाना होगा। उन्हें यह आशंका थी कि अगर उन्होंने साल में एक बार से अधिक भारत की यात्रा की या ६० दिनों तक भारत में प्रवास किया तो उन्हें स्थानिक मान लिया जाएगा, उन्हें अपनी विदेशी कमाई का खुलासा करना होगा और उस पर टैक्स चुकाना पड़ेगा। ऐसे में कोई एनआरआई तभी कर भुगतान योग्य स्थानिक माना जाएगा जब उसने किसी वित्तीय वर्ष में १८० से अधिक दिनों तक भारत में प्रवास किया हो।

एनआरआई भारत में रियायत के हकदार तभी होंगे उन्होंने अपने रेजीडेंट देश की सरकार से टैक्स रेजीडेंस सर्टिफिकेट (टीआरसी) हासिल किया हो। भलेही, वैयक्तिक एवं कंपनी के स्तर पर कोई भेद नहीं किया गया है, ऑफशोर कंपनियों के लिए टीआरसी ज्यादा संगत मालूम होता है, क्योंकि यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि क्या कंपनी महज एक संलग्न अस्तित्व वाली है या देश में उपस्थित वास्तविक संपूर्ण कंपनी। एसआरजीआर लॉ ऑफिसेज के एक जाने-माने वकील एवं प्रशिक्षित एकाउंटेंट राजन डी. गुप्ता कहते हैं कि किसी व्यक्ति के मामले में, टैक्स रेजीडेंस का निर्धारण उसके पासपोर्ट में वर्णित उसकी यात्रा/प्रवास वाले देश की प्रवेश मुहरों के आधार पर ही स्थापित/प्रमाणित करना कठिन है। अगर भारतीयों की ओर से भेजी गई ऐसी रकम को विदहोल्डिंग टैक्स (टीडीएस) से मुक्त घोषित करना है तो इसके लिए कर अधिकारी से अनापत्ति प्रमाणपत्र लेना होगा।

मूलतः, बजट ने एनआरआई निवेशकों को प्रोत्साहित किया है।

(लेखक ने विदेश में बिजनेस एडिटर एवं एक संयुक्त राष्ट्र एजेंसी में मीडिया सलाहकार के तौर पर काम किया है। वे नई दिल्ली में रहते हैं और उनसे kb@kulbhushan.net पर संपर्क किया जा सकता है)

मूर्ति १२ शीर्ष उद्यमियों की फार्चून सूची में

फार्चून पत्रिका ने इन्फोसिस के सह-संस्थापक एन. आर. नारायण मूर्ति को 'हमारे समय के १२ महानतम उद्यमियों' की सूची में शामिल किया है, जिसमें एपल कंपनी के दिवंगत प्रमुख स्टीव जॉब्स, माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स और फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग भी शामिल हैं।

पत्रिका ने लिखा है कि ''आउटसोर्सर'' मूर्ति, जो इस सूची में १०वें नंबर पर हैं, ने यह साबित कर दिया है कि भारत सॉफ्टवेयर विकास कार्य, जिसे अब तक पाश्चात्य दुनिया का क्षेत्र माना जाता रहा है, पर अमल कर दुनिया से होड़ ले सकता है। इसने लिखा है कि इन्फोसिस के विजनरी संस्थापक ने भारत की अग्रणी कंपनियों में से एक का निर्माण किया है। इसने मूर्ति के विजन की चर्चा करते हुए लिखा है कि शून्य से शुरू होने वाले किसी भी कंपनी को ऐसी लोगों की टीम की जरूरत होती है जो नैतिक मूल्यों में आस्था रखते हों। इसने टिप्पणी है, ''इन्फोसिस के छह सह-संस्थापकों में से एक की हैसियत से और २१ सालों तक इसके सीईओ के रूप में मूर्ति ने एक ऐसी आउटसोर्सिंग क्रांति को सुलगाया है जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था में अरबों डालर संपत्ति का योगदान दिया है।''

अब कंपनी के चेयरमैन एमिरेटस ६५ वर्षीय मूर्ति को यह कहते हुए उद्धृत किया गया है, ''यह आज त्याग और कल तृप्ति की अवधारणा है। यह सब कठिन मेहनत, त्याग, परिवार से दूर रहकर मिशन में लगे रहने का मामला है, ताकि आपको अपनी मंजिल मिल सके।''

एंडीज की चोटी पर

एक साहसी भारतीय पर्वतारोही मल्ली मस्तान बाबू ने हाल ही में दक्षिण अमेरिका की सर्वोच्च चोटियों को फतह कर लिया है। बाबू ने ब्यूनस आयर्स में पीबी को बताया कि यह तो उनके अभियान की अभी शुरुआत भर है...

सैंतीस वर्षीय मल्ली मस्तान बाबू एकमात्र भारतीय हैं जिन्होंने दक्षिण अमेरिका में एंडीज की सर्वोच्च चोटियों को फतह किया है। उनके नाम १७२ दिनों में सात चोटियों को फतह करने का विश्व रिकार्ड भी है। आंध्र प्रदेश में नल्लूर के एक किसान परिवार से नाता रखने वाले बाबू को अर्जेंटीना की तरफ से तीन बार अकोंकागुआ चोटी को फतह करने का श्रेय जाता है। ६,९६२ मीटर लंबी यह चोटी हिमालय के बाहर दुनिया की सबसे ऊंची चोटी है।

उन्होंने पेरू की हुआसकरन (६,७६८ मीटर), बोलिविया की सजामा (६,५४२ मीटर), इक्वेडोर की चिंबोराज़ो (६,३१० मीटर) और चिली की ओजोस डेल सलादो (६,८०० मीटर) चोटियों को फतह करने का श्रेय भी जाता है। जितनी चोटियों को उन्होंने फतह किया है, उनकी चोटियों को किसी और भारतीय ने फतह नहीं किया है। उनकी इस फतह में अंटार्कटिका की विंसन मैसिफ चोटी (४,८९७) को फतह करने का श्रेय भी शामिल है। घोर ठंड के कारण इस चोटी को फतह करना उनके लिए कठिनतम चुनौतियों में से एक थी। बाबू ने २००५ से दक्षिण अमेरिका में चार यात्रों पर कुल नौ महीने बिताये हैं। अर्जेंटीना, उरेग्वे और परागवे में भारत के राजदूत आर. विश्वनाथन ने यह बताया।

जब बाबू कोलंबिया के सिएरा नेवादा स्थित क्रिस्टोबाल कोलोन पीक को फतह करने गए तो स्थानीय इंडियनों ने उन्हें उस पर्वत पर चढ़ने से रोका, क्योंकि वे उसे पवित्र मानते हैं। वे बाहरी लोगों को इस पर चढ़ने की इजाजत नहीं देते। तब उन्होंने उनसे कहा कि वे भी इंडियन हैं और भारत के लोग भी पहाड़ों को देवता की तरह पूजते हैं। कोलंबियाई इंडियन यह तर्क सुनकर मान गए। बाबू की इस क्षेत्र की मौजूदा यात्रा का उद्देश्य दक्षिण अमेरिका के सभी १२ देशों की सर्वोच्च चोटियों को जीतना है। ब्राजील की सबसे ऊंची चोटी पिको नेबलिना (३,००७ मीटर) को फतह करने के लिए उन्हें पर्वत के बेस तक पहुंचने के लिए आमेजन नदी को नाव से पार करना पड़ा। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कोलकाता के छात्र रहे एवं आईआईटी खड़गपुर से इलेक्ट्रॉनिक्स में एमटेक उत्तीर्ण बाबू ने जीई, इंटेल, जॉन डीयरे जैसी कंपनियों एवं अमेरिका, यूएई, केन्या और भारत के प्रबंधन स्कूलों में लीडरशिप पर व्याख्यान दिए हैं।

२०१२ की येल वर्ल्ड फेलो सूची में दो भारतीयों ने भी जगह बनाई

येल यूनिवर्सिटी ने दो भारतीयों आयुष चौहान और रुचि यादव को वर्ष २०१२ के लिए १६ वर्ल्ड फेलो की सूची में शामिल किया है। चौहान कारोबार, विकास और संस्कृति के मिश्रित क्षेत्र में काम करने वाली एक बहु-विद्याश्रयी डिजाइन एवं अभिनवीकरण परामर्शदाता कंपनी क्विसैंड का नेतृत्व करते हैं।

चौहान बॉक्स कलेक्टिव में भी भागीदार हैं, जहां उन्होंने अनबॉक्स की अवधारणा

रुचि यादव

आयुष चौहान

विकसित की है और इसे लांच किया है। यह दिल्ली का ऐसा प्रथम अंतर-विद्याश्रयी फेस्टिवल है जो अभिप्रेरणा, वाद-विवाद एवं चिंतन क्षेत्र से दुनिया भर के विशेषज्ञों को एक मंच पर लाता है। यादव, जो द हंगर प्रोजेक्ट की वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी हैं, भारत में विज्ञापन, मानवाधिकार और महिला आंदोलन पृष्ठभूमि से हैं।

यादव का फोकस क्षेत्र है जमीनी स्तर पर चुकी गई भारतीय महिला प्रतिनिधियों का सशक्तिकरण। वे इसे भारत में स्थानीय संस्थानों के स्तर पर प्रमुख परिवर्तनकारी एजेंट के तौर पर मानती हैं।

अगस्त से दिसंबर तक वर्ल्ड फेलोज को विशेष रूप से विकसित सेमिनार में नामांकित किया जाएगा, जहां प्रतिष्ठित येल संकाय के शीर्ष सदस्य उन्हें पढ़ायेंगे और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। उन्हें संस्थान द्वारा संचालित ३,००० पाठ्यक्रमों में से किसी का भी ऑडिट करने, दुनिया भर के विशिष्ट अतिथियों के साथ साप्ताहिक भोज में शामिल होने, वैयक्तिकृत कौशल-विकास प्रशिक्षण का लाभ उठाने और अमेरिका एवं विदेशों के नेताओं से मिलने का मौका मिलेगा।

पासपोर्ट सेवाओं की आउटसोर्सिंग

अमेरिका में भारतीय दूतावास एवं इसके वाणिज्य दूतावासों ने दुनिया के दूसरे हिस्सों में स्थित कई मिशनों की तरह अपनी पासपोर्ट सेवाओं की आउटसोर्सिंग कर दी है।

वीएफएस ग्लोबल नामक आउटसोर्सिंग कंपनी वाशिंगटन में भारतीय दूतावासों एवं शिकागो और न्यूयार्क में वाणिज्य दूतावासों के लिए अप्रैल से अपना काम शुरू कर देगी। ह्यूस्टन और सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावासों को भी इसके दायरे में लाया जाएगा।

वाशिंगटन में पासपोर्ट सेवा चाहने वालों के लिए ६ अप्रैल से वीएफएस की वैश्विक वेबसाइट http://www.vfsglobal.com/india/usa और कॉल सेंटर नंबर २०२-८००-७४१२ काम करना शुरू कर देंगे। कंपनी निजी तौर पर और मेल द्वारा भेजे जाने वाले आवेदनों को सूइट १०३, १६२५ के स्ट्रीट एनडब्ल्यू वाशिंगटन डीसी के पते पर

वाशिंगटन में भारतीय दूतावास।

स्वीकार करेगी। वाणिज्य दूतावासों की सेवाओं के लिए कंपनी के पते उनकी संबंद्ध वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे।

वैसे, इंडियन वीजा/ओसीआई/पीआईओ सेवाएं ट्रावीजा आउटसोर्सिंग द्वारा निष्पादित होती रहेंगी। दूतावास एवं वाणिज्य दूतावास पॉवर ऑफ एटर्नी के सत्यापन जैसी दूसरी सेवाओं का निष्पादन खुद करते रहेंगे। अब कार्यालयी कार्य के लिए पूर्व अनुमति की कोई जरूरत नहीं होगी। इन सेवाओं से जुड़ी सूचना दूतावास एवं वाणिज्य दूतावासों की वेबसाइट से हासिल की जा सकती है।

त्रिनिदाद एवं टोबैगो के स्कूलों में तबला, ढोलक

त्रिनिदाद एवं टोबैगो में भारतीय के आगमन के करीब १६७ वर्षों बाद यहां के ५५० से अधिक प्राथमिक स्कूलों तबला, ढोलक एवं हारमोनियम की आवाज गूंजेगी। इन स्कूलों में इन वाद्य यंत्रों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। देश के कैबिनेट ने यहां की विविध संस्कृति को देखते हुए प्राथमिक विद्यालयों की पाठ्यचर्या में संगीत के बहु-सांस्कृतिक प्रारूप को शामिल करने का फैसला किया है।

भारतीय उच्चायोग महात्मा गांधी सेंटर फॉर कल्चरल एक्सचेंज के माध्यम से भारतीय संगीत एवं नृत्य की शिक्षा देता रहा है। इस देश में भारतीयों का आगमन १८४५ से १९६७ के बीच हुआ। उन्हें गन्ना बा. गानों में काम करने के लिए यहां लाया गया था।

– पारस रामऔतार, पोर्ट ऑफ स्पेन

त्रिनिदाद एवं टोबैगो में भारतीय उच्चायोग यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट इंडीज के सेंट ऑगस्टिन परिसर को भारतीय वाद्य यंत्र दान करते हुए।

गदर का शताब्दी समारोह मनेगा

प्रवासी संगठन ग्लोबल ऑर्गनाइजेशन ऑफ पीपुल ऑफ इंडियन ऑरिजन (गोपियो) गदर शताब्दी समारोह के आयोजन की योजना बना रहा है। ब्रिटेन से भारत की आजादी के लिए १०० साल पहले शुरू हुए इस आंदोलन को याद किया जाएगा।

हिंदुस्तान एसोसिएशन ऑफ पैसिफिक कोस्ट ने १९१३ में इस राष्ट्रवादी आंदोलन की शुरुआत की थी। इसका मुख्यालय तब सैन फ्रांसिस्को में था। गोपियो की योजना में वर्ष २०१३ को सेंटेनियल कमेमोरेशन ऑफ गदर मूवमेंट घोषित किए जाने के लिए आवेदन देना, विशेष डाक टिकट जारी करवाना और गदर आंदोलन के बारे में एक ऐतिहासिक शताब्दी स्मरण पुस्तिका का प्रकाशन आदि प्रमुखता से शामिल है।

‘एक अमेरिकी गाथा’

युबा सिटी में अमेरिका का वह प्रथम पंजाबी संग्रहालय है, जो २०वीं सदी के शुरू में अमेरिका आने वाले पंजाबियों के जीवन संघर्ष की कहानी कहता है

हाल ही में कैलिफोर्निया में पंजाबी समुदाय बहुल युबा सिटी में एक ऐसे मल्टी-मीडिया संग्रहालय का उद्घाटन किया गया जो अमेरिका में इस समुदाय के जीवन संघर्ष और जिजीविषा की कहानी कहता है।

पंजाबी अमेरिकन हेरीटेज सोसायटी (पीएएचएस) द्वारा विकसित यह संग्रहालय अमेरिका में ऐसा प्रथम संग्रहालय है जो अमेरिका आगमन पर पंजाबियों के जीवन संघर्ष और यहां के सामाजिक ताने-बाने के विकास में इस समुदाय के योगदान की कहानी कहता है। यहां के प्रमुख सामुदायिक नेता जसबीर कांग कहते हैं, ‘‘यह संग्रहालय पंजाबी अमेरिकी समुदायों की चुनौतियों एवं सफलताओं का मल्टी-मीडिया रिकार्ड है। यह २०वीं सदी के शुरू में कैलिफोर्निया आगमन पर पंजाबियों के जीवन संघर्ष और उभरते देश अमेरिका की उनकी यात्रा की कहानी कहता है।’’ इस मौके पर समुदाय को दिए अपने संदेश में कैलिफोर्निया के गवर्नर जेरी ब्राउन ने कहा, ‘‘पंजाबी अमेरिकियों एवं दक्षिण एशियाई अमेरिकियों के अमेरिका आगमन की कहानी को पेश किया जाना महत्वपूर्ण है और यह वर्तमान एवं भावी

पीढ़ियों के लिए जरूरी संसाधन है।’’

ब्राउन ने कहा, ‘‘इस परियोजना की सफलता के लिए मैं पंजाबियों, उनके परिवारों एवं पंजाबी अमेरिकन हेरीटेज सोसायटी ऑफ युबा सिटी को बधाई देता हूं।’’

उद्घाटन समारोह में कैलिफोर्निया के असेंबली सदस्य जिम नील्सन और डैन लोग, काउंटी सुपरवाइजर जिम हाइटेकर, लैरी मुंगर और स्टैन क्लीवलैंड, युबा सिटी काउंसिल सदस्य तेज मान और युबा सिटी के पूर्व मेयर काश गिल और रोरी रामीरेज़ समेत सैकड़ों लोग मौजूद थे।

प्रेस विज्ञप्ति में इसके आयोजकों ने कहा, ‘‘९/११ की घटनाओं के बाद से सिखों एवं दक्षिण एशियाइयों को गलत पहचान के कारण नस्लीय हमले और यहां तक कि हत्या की घटनाएं झेलनी पड़ती रही है। इस संग्रहालय के जरिए पंजाबियों की वह कहानी कही गई है जो स्थानीय समुदायों के विकास में उनके योगदान की लंबी परंपरा से जुड़ी है।’’

उन्होंने कहा, ‘‘पंजाबियों, सिखों और दक्षिण एशियाइयों की कहानी आयरिशों, इतालवियों और पॉलिश लोगों की कहानी जैसी ही है। यह एक अमेरिकी गाथा भी है।’’ युबा सिटी २०वीं सदी के शुरू में अमेरिका में पंजाबी आप्रवासियों के प्रथम ठिकानों में से एक रहा है।

‘पंजाब दा पिंड’ के रूप में जाने जाने वाले युबा सिटी को अमेरिका में पंजाबियों के सर्वाधिक संकेद्रण के लिए जाना जाता है, जहां कई गुरुद्वारे, मंदिर और यहां तक कि एक मस्जिद भी है।

(शीर्ष बायें से) सटर काउंटी के कम्युनिटी मेमोरियल म्यूजियम में नव उद्घाटित ‘बिकमिंग अमेरिकन’ प्रदर्शनी युबा सिटी के पंजाबियों एवं दक्षिण एशियाइयों के इतिहास एवं संस्कृति की झलक पेश करती है।

वह लम्बी यात्रा...

एक गुयानी भारतीय ने उस 'प्रस्थान बिंदु' की पहचान कर ली जहां से सौ साल से भी अधिक पहले उनके पिता ने एक बंधुआ मजदूर की हैसियत से काम करने के लिए गुयाना का रुख किया था और वह प्रस्थान बिंदु है राजस्थान का एक छोटा सा गांव। एनिड हाइटहाउस ने इस गांव की अपनी यात्रा का अनुभव शुभा सिंह से बांटा

अपने पिता द्वारा भारत से गुयाना की ओर रुख करने के सौ साल बाद एनिड हाइटहाउस ने पिता की जिंदगी के बारे में अधिक जानकारी हासिल करने के लिए राजस्थान के गंगानगर जिला स्थित उनके पुश्तैनी गांव की भावनात्मक यात्रा की।

लंदन स्थित वकील एनिड को यह पता चला कि उनके पिता दिसंबर १९११ में बंधुआ मजदूर की हैसियत से काम करने के लिए भारत से गुयाना आये थे। लेकिन, पिता की जिंदगी में उनकी ज्यादा दिलचस्पी बढ़ाने में उनके भांजे की खास भूमिका रही, जिन्होंने अपने पारिवारिक इतिहास पर शोध के दौरान अपने इस नाना की ज़िंदगी के बारे में रोचक जानकारियां जुटाईं।

एनिड को यह पता चला कि उनके पिता ने लुसिगनैन दंगों, जो गुयानी-भारतीय इतिहास की बड़ी घटनाओं में से एक है, में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ब्रिटिश लाइब्रेरी, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस और अखबारों में इस घटना एवं इसकी अदालती सुनवाई के बारे में दस्तावेज़ एवं रिपोर्ट मौजूद थे।

गुयाना में जन्मी एनिड १९६० में कानून के अध्ययन के लिए लंदन गई और प्रैक्टिस के इरादे से कुछ समय के लिए वापस लौटी। लेकिन, जब उनके पिता कृष्णा की १९७० में मौत हुई तो वे वापस लंदन आ गईं। एनिड ने कहा, '' उन्होंने मुझे अपने अतीत के बारे में कभी कुछ नहीं बताया, लेकिन मैं यह सब जानने को इच्छुक थी।'' मुझे भारत में उनकी पृष्ठभूमि में दिलचस्पी हुई और मैंने उस छोटे से गांव की यात्रा करने का फैसला किया जहां से मेरे पिता ने गुयाना के लिए कूच किया था।'' उनके पारिवारिक इतिहास के अनुसार गांव में इस परिवार की जायदाद में खेत एवं कई ऊंट शामिल थे। एनिड याद करती हैं कि उनके पिता अपने गुयाना आगमन का संबंध दिल्ली में ब्रिटेन के महाराज के आगमन से जोड़ते थे, जिन्हें देखने के लिए वे दिल्ली गए थे, जहां उनकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिसने उन्हें 'डेमरा' (ब्रिटिश गुयाना में डेमेरारा) जाने के लिए प्रेरित किया। वे अकेले गुयाना आए और फिर एक ऐसी विधवा से शादी कर ली जो पहले से ही एक बेटी की मां थी। उनकी पत्नी की जल्द ही मौत हो गई, और जब लड़की १८ साल की हो गई तो उन्होंने फिर से शादी कर ली। इस शादी से उनके १० बच्चे हुए। उन्होंने कारोबार में हाथ बटाया और समृद्ध होते गए। अपनी भारत यात्रा के लिए एनिड ने लंदन के एक ट्रेवल एजेंट से संपर्क किया और उन्हें अपना गंतव्य स्थान बताया, जो कृष्णा के आव्रजन पास में सिरदारगढ़, थाना अनूपगढ़, जिला बीकानेर था। एजेंट ने बीकानेर जिले में इसके बारे में पता लगाया और अंततः गंगानगर जिले में सिरदारगढ़ को चिन्हित कर लिया गया। एनिड ने २०० घरों वाले इस गांव की यात्रा की। वे गांव में अपने किसी संबंधी को तो नहीं ढूढ़ पाई, लेकिन गांव वालों ने उनका खूब स्वागत किया। वे कहती हैं, ''मुझे किसी ऐसे शख्स से नहीं मिलने पर निराशा तो हुई जो मेरे पिता के परिवार के बारे में जानता हो, लेकिन गांव वालों का प्यार पाकर मैं अभिभूत हो गई।''

> अपने पिता के जीवन में मेरी रुचि बढ़ गई। उन्होंने मुझे अपने अतीत के बारे में कभी कुछ नहीं बताया, लेकिन मैं उनके अतीत के बारे में जानने को ज्यादा इच्छुक थी...
>
> **– एनिड ह्वाइटहाउस**
> **लंदन स्थित भारतीय मूल की गुयानी वकील**

वे कहती हैं, ''मुझे याद है, मेरे पिता अक्सर पगड़ी पहनते थे। जब मैंने गांव वालों को अपने पिता की तस्वीर दिखाई तो मुझे बताया गया कि संभवतः वे राजपूत थे, क्योंकि ऐसी पगड़ी पहनने का चलन राजपूतों में रहा है। मुझे इस पर आश्चर्य हुआ क्योंकि उनके आव्रजन पास में उनकी जाति 'जाट' लिखी थी। लेकिन, मुझे यह भी पता चला कि राजपूतों को बंधुआ मजदूरों के तौर पर पंसद नहीं किया जाता था, क्योंकि वे कृषि कार्य के अभ्यस्त नहीं होते थे।''

अपने पिता की यात्रा के बारे में एनिड कहती हैं, ''मेरे पिता एक साहसिक व्यक्ति थे, वे अकेले १९११ में डेमेरारा (गुयाना) आए और उन्हें लुसीगनैन इस्टेट में रोजगार मिला। इस्टेट में काम की स्थितियां काफी प्रतिकूल और कठिन थी।'' एनिड के पिता मजदूर आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। एनिड के अनुसार सितंबर १९१२ में गन्ना मजदूरों ने लुसीगनैन इस्टेट में काम करना बंद कर दिया और विरोध जताने के लिए इसके प्रबंधक ब्रासिंगटन के आवास पर गए। गुस्साए मजदूरों को देखकर ब्रासिंगटन ने गोली चला दी जिसमें एक मजदूर की मौत हो गई। एनिड के पिता ने मजदूरों को गोलबंद किया और बेलचे से लैस करीब ३०० मजदूरों ने उनके नेतृत्व में जॉर्जटाउन की ओर कूच किया, ताकि औपनिवेशिक अधिकारियों के समक्ष अपनी समस्याओं को रख सके। मजदूरों की इस बगावत से ब्रिटिश अधिकारी उलझन में फंस गए। एनिड के पिता ने मजूदरों से टेलीग्राफ लाइन काटने को कहा। बाद में उन्होंने अदालत में अपना पक्ष खुद रखा और यहां तक कि पगड़ी हटाने के मजिस्ट्रेट निर्देश का भी पालन करने से मना कर दिया।

एनिड के मुताबिक सिरदारगढ़ की यात्रा उनके लिए वाकई यादगार बन गई। वे कहती हैं, ''उन लोगों की भीड़ में मैं अपने पिता के होने की कल्पना कर सकती थी, जब मैंने गांव वालों को पगड़ियों में देखा।''

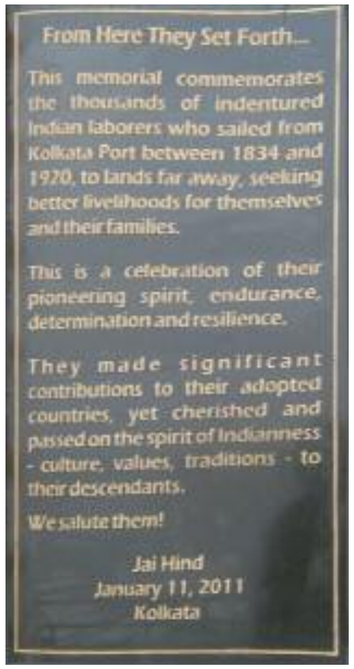

बायें : कोलकाता का किदरपोर डिपो डॉक जहां से बंधुआ मजदूरों को १८३४ से १९२० के बीच ब्रिटिश उपनिवेशों में ले जाया गया था। जनवरी, २०११ में प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि ने किदरपोर डिपो में 'कोलकाता मेमोरियल' का उद्घाटन किया। अंग्रेजी और हिंदी में लिखी स्मारक पट्टिका (तस्वीर में ऊपर प्रदर्शित) उन हजारों मजदूरों के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि है जो परिस्थितियों और इतिहास की बाध्यताओं के कारण नई ज़िंदगी की तलाश में इन सुदूर उपनिवेशों में गए थे।

नो इंडिया प्रोग्राम

प्रवाासी युवाओं तक पहुंचने के लिए प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय की एक महत्वपूर्ण संपर्क प्रणाली के तौर पर शुरू हुआ यह कार्यक्रम इन युवाओं में उनके पूर्वजों की मूल भूमि के बारे में व्यापक समझ पैदा करने में महत्वपूर्ण माध्यम साबित हुआ है

मैं भारत आने को हमेशा इच्छुक था, पर किसी कारण से यह हो नहीं पाता था। जब मुझे केआईपी के बारे में पता चला तो मैंने इसके लिए आवेदन करने का फैसला किया...

एस. मनियन, मलेशिया
१८वां नो इंडिया प्रोग्राम

यह वाकई खूबसूरत और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश है। मुझे पता नहीं कि मेरे माता-पिता ने इतने वर्षों में भी मुझे यहां की यात्रा क्यों नहीं कराई... अक्सर भारत आना मेरी इच्छा है...

चनेली सिंह, आस्ट्रेलिया
१९वां नो इंडिया प्रोग्राम

मैंने सोचा नहीं था कि दिल्ली इतना आधुनिक और उन्नत महानगर होगा। भारत के बारे में मैंने जो कुछ भी जाना, वह बॉलीवुड फिल्मों के माध्यम से संभव हो पाया...

अर्तिका देवी, फिजी
१८वां नो इंडिया प्रोग्राम

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि १८वें नो इंडिया प्रोग्राम के प्रतिनिधियों से नई दिल्ली में २६ सितंबर, २०११ को मिलते हुए।

उपरोक्त विचार नो इंडिया प्रोग्राम (केआईपी), जो प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय का एक संपर्क कार्यक्रम है, के कुछ प्रतिभागियों के हैं। अक्टूबर, २०११ में केआईपी के १८वें संस्करण के तहत भारत की यात्रा करने वाले सिन्नापम चौथी पीढ़ी के भारतीय मलेशियाई हैं। उन्होंने भारत में अपने उन संबंधियों का पता लगाने के लिए बार-बार भारत आने का फैसला किया है जिनसें उनके परिवार का नाता पीढ़ियों पहले टूट चुका है।

इस यात्रा के लिए एक अनाथालय में अपनी अंशकालिक नौकरी छोड़ने वाले सिन्नापम कहते हैं, ''मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे कुछ संबंधी चेन्नै और बेंगलुरु में रह रहे होंगे, लेकिन हम उनके संपर्क में नहीं हैं। मैं उनकी तलाश में दुबारा यहां आना चाहूंगा।''

बेहद लोकप्रिय नो इंडिया प्रोग्राम का उद्देश्य १८-२६ वर्ष उम्र वर्ग के प्रवासी भारतीयों को भारत की उपलब्धियों और विकास के बारे में अवगत कराना और उन्हें अपने पूर्वजों की धरती के करीब लाना है।

यह कार्यक्रम भारतीय मूल के छात्रों एवं युवा पेशेवरों को अपने विचार, अपेक्षाओं और अनुभवों का आदान-प्रदान करने और समकालीन भारत के साथ नजदीकी रिश्ता बनाने का अनूठा मंच प्रदान करता है। फिजी की अर्तिका देवी, जो १८वें केआईपी की हिस्सा रही हैं, अभी तक भारत को बॉलीवुड के जरिए ही जानती रही हैं, पर भारत यात्रा ने उन्हें यह आभास कराया कि भारत इससे कहीं अधिक व्यापकता वाला देश है। केआईपी भारत के बारे में इस सूचना असंतुलन को पूर करता है। यहां तक कि इस युवा बैंकर ने नवरात्रि त्योहार के दौरान नौ दिनों तक उपवास भी रखा!

मंत्रालय अभी तक १६ केआईपी आयोजित कर चुका है और कुल ५६१ प्रवासी भारतीय युवा इन कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं। प्रतिभागियों का चयन विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों/पदों द्वारा किया जाता है। उन्हें आतिथ्य सुविधा प्रदान की जाती है और उन्हें अपने-अपने देश से भारत यात्रा के इकोनामिक क्लास विमान किराये का ६० फीसदी तक भुगतान किया जाता है।

एक हालिया केआईपी के दौरान प्रतिभागियों से बातचीत करते हुए प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री वायलार रवि ने कहा कि यह कार्यक्रम भारतीय मूल के युवाओं एवं पेशेवरों के लिए भारत यात्रा एवं आज के भारत के बारे में विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच है।

उन्होंने कहा, ''मैं दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए आप सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रसन्न हूं। यह कार्यक्रम आपको भारत से परिचित कराता है।''

मंत्री रवि ने कहा, ''मैं चाहता हूं कि जब आप वापस लौटे तो अपने माता-पिता को भारत की आर्थिक प्रगति के बारे में बतायें।''

भारत से परिचित

सामान्यतया, प्रत्येक केआईपी प्रतिनिधिमंडल देश के विभिन्न हिस्सों का दौरा करता है और उनकी मेजबानी राज्य सरकारों द्वारा की जाती है। सदस्यों को भारतीय गांवों में प्रवास का मौका मिलता है और उन्हें स्थानीय हुनर से परिचित होने का मौका भी मिलता है। यात्रा और पर्यटन केंद्रों के दौरे के अलावा उन्हें देश के संस्थानों और प्रणालियों से भी परिचित कराया जाता है।

उदाहरण के लिए, १६वें केआईपी के ३७ सदस्यों के दल ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) जाकर वहां की शिक्षा से अवगत होने का प्रयास किया। एक एमओआईए अधिकारी ने कहा, ''ये युवा विदेशों में बसे भारत के बच्चे हैं और भारत के विभिन्न शैक्षिक संस्थानों की यात्रा कर रहे हैं। हमारा मूल उद्देश्य है उन्हें देश की विविधता से अवगत कराना।''

एक इग्नू अधिकारी के अनुसार इस प्रतिनिधिमंडल ने इग्नू द्वारा संचालित कार्यक्रमों में गहरी दिलचस्पी दिखाई और उन्हें कुलपति से मिलने का भी मौका मिला।

इस समूह के सदस्यों को नई दिल्ली के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, द सेंटर फॉर कल्चरल रिसोर्सेज एंड ट्रेनिंग, राजघाट, और गांधी समाधि ले जाया गया। उन्हें इंडियन काउंसिल फॉर वर्ल्ड अफेयर्स द्वारा आयोजित एक नेटवर्किंग सत्र के तहत युवा पेशेवरों से भी संपर्क का मौका मिला।

धारणा

२५ वर्षीय सिन्नापम, जो फिलहाल कुआलालंपुर यूनिवर्सिटी में शिक्षा स्नातकोत्तर के छात्र हैं, ने कहा कि वे भारत आने से पहले आशंकित थे, क्योंकि उनके परिवार के लोगों ने भारत में साफ सफाई और खान-पान की दोयम स्थिति के बारे में आगाह किया था।

वे हंसते हुए कहते हैं, ''मेरे माता-पिता की तो यही धारणा थी कि अगर मैंने वहां खाना-पीना किया तो बीमार पड़ जाऊंगा। लेकिन, पिछले दो सप्ताहों में मेरा वजन बढ़ गया, क्योंकि मैंने यहां के व्यंजनों का जमकर लुत्फ उठाया। यहां का खान-पान भी उम्दा है।''

आस्ट्रेलियाई भारतीय चनेली सिंह ने कहा, ''मेरे पिता कारोबार के सिलसिले में जयपुर आते रहे हैं, लेकिन वे कभी मुझे यहां लेकर नहीं आए। भारत और अमेरिका के बीच काफी समानताएं हैं, और मुझे यहां आकर सांस्कृतिक झटका नहीं लगा, जिसकी आशंका मुझे यहां आने से पहले थी।''

आर्तिका के मुताबिक केआईपी के प्रतिभागी अभिभूत हैं और वे वापस लौटने का कोई और बहाना चाहते हैं।

कार्यक्रम के प्रमुख बिंदु

- देश, उसके संविधान, राजनीतिक प्रक्रियाओं एवं संस्थानों पर प्रस्तुति
- प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय/कालेज/संस्थान के संकाय एवं छात्रों से मुलाकात
- औद्योगिक विकास पर प्रस्तुतियां एवं औद्योगिक परिसरों की यात्रा
- भारत में ठेठ ग्रामीण ज़िंदगी से वाकिफ होने के लिए किसी गांव की यात्रा
- भारतीय मीडिया और सिनेमा से परिचय
- महिला मसलों के निष्पादन से जुड़े एनजीओ एवं संगठनों से संपर्क
- ऐतिहासिक महत्व के स्थलों एवं स्मारकों की यात्रा
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी
- योगा से परिचय
- शीर्ष सरकारी प्रतिनिधियों, मसलन भारत के राष्ट्रपति, मुख्य चुनाव आयुक्त, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय एवं दूसरे मंत्रालयों/विभागों के केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात

आगामी केआईपी

- २०वां केआईपी : २५ अप्रैल -१५ मई, २०१२, भागीदार राज्य : गोवा
- २१वां केआईपी : २६ अगस्त-१८ सितंबर, २०१२, भागीदार राज्य : उत्तरांचल
- २२वां केआईपी : २१ दिसंबर-१० जनवरी २०१३, भागीदार राज्य : कर्नाटक

साइकिल है समाधान

रविवार की सुबह इंडिया गेट के लुटियंस बाइकर्स जोन में एक बाइकर साइकल की सवारी करते हुए।

वे दिल्ली में जोर पकड़ रही उस छोटी, पर अहम मुहिम के हिस्सा हैं, जो साइकिल को यातायात का कारगर माध्यम बनाकर महानगरीय परिवहन संकट का समाधान निकालने के उद्देश्य से जुड़ी है। मधुश्री चटर्जी ने नई दिल्ली के दिल में स्थित इंडिया गेट पर इस जमात के कुछ लोगों से बातचीत की

साइकिल पर सवार होकर ऑफिस जाने का व्यापक चलन शीघ्र ही दिल्ली में सच हो सकता है और यह सिर्फ गरीबों का परिवहन माध्यम नहीं रह जाएगा। बढ़ते प्रदूषण एवं सड़कों के सिकुड़ते दायरे के कारण भारत की यह राजधानी नीदरलैंड के उस मॉडल को अपनाने को बाध्य हो सकती है, जिसमें साइकिल की सवारी को उम्दा वैकल्पिक साधन माना जाता है।

ऑल इंडिया साइकिल्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के भावी अध्यक्ष पंकज मुंजाल कहते हैं, ''साइकिल का भारत में भविष्य है, पर यह आवाज लोगों तक पहुंचनी चाहिए।''

हर रविवार को मुंजाल एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से नाता रखने वाले करीब १५० साइकलिस्ट राष्ट्रपति भवन एवं इंडिया गेट के बीच लुटियंस बाइकर्स ज़ोन में ४५ मिनट तक गहन साइकलिंग एवं साइकिल पर चर्चा के लिए जुटते हैं। यह मौके का समापन एक छोटे से भोज से होता है।

भारत की सबसे बड़ी साइकिल निर्माता कंपनी हीरो साइकिल्स के प्रबंध निदेशक मुंजाल कहते हैं, ''हम सुबह ६ बजे इंडिया गेट पहुंचते हैं और फिर अपनी साइकिल को गाड़ी से उतारकर बाइकर्स ट्रैक पर साइकिल चलाते हैं।''

नई दिल्ली में साइकिलों के शौकीन।

मुंजाल कहते हैं ऐसी साइकिल की कीमत १०,००० रुपये से लेकर १.५-२ लाख (डिजाइनर साइकिल) है। उनकी कंपनी भारत में तैयार होने वाली सालाना करीब १.३ करोड़ साइकिलों में करीब ६० लाख साइकिलों का योगदान देती है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा किए गए एक शोध के अनुसार दिल्ली को परिवहन संकट से उबरने के लिए गैर-पारंपरिक, इको-फ्रेंडली और आसान परिवहन प्रणालियों का सहारा लेना ही पड़ेगा।

अध्ययन में कहा गया है, ''राजधानी में कारों के बढ़ते उपयोग के कारण सड़कों की वहन क्षमता कम होती जा रही है और २०२० तक अगर राजधानी को पब्लिक ट्रांसपोर्ट के अपने ८० फीसदी लक्ष्य को पूरा करना है तो उसे साइकलिंग एवं वाकिंग पर अधिक खर्च करना होगा।''

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि अंबेडकर नगर एवं प्रगति मैदान के बीच बीआरटी स्ट्रेच, आईटीओ से लक्ष्मी नगर के बीच विकास मार्ग, तुगलकाबाद स्ट्रेच और नोयडा लिंक रोड - कामनवेल्थ खेलों के बाद विकसित - जैसी कुछ नई बाइकिंग एवं वाकिंग सुविधाओं को छोड़कर साइकलिंग अभी भी ज्यादातर गलियों के दायरे में सिमटी हुई है। यह सुव्यवस्थित परिवहन सुविधा नहीं बन पाई है।

एक हालिया फोरम 'आवर राइट ऑफ वे : वाक एंड साइकिल' में सीएसई महानिदेशक सुनीता नारायण ने कहा, ''हमारे पास राजनीतिक इच्छा है, प्रतिबद्धता है और रुचि है, पर इसके लिए जमीनी स्तर पर काम करना होगा। हम साइकलिंग को छोटे समाधान के तौर पर नहीं देख रहे, बल्कि इसे बड़े पैमाने के समाधान के तौर पर देखते हैं।'' राजधानी से जुड़े आंकड़े की चर्चा करते हुए सीएसई की कार्यकारी निदेशक अनुमिता रॉयचौधरी का कहना है, ''दिल्ली पैदल यात्राओं एवं साइकलिंग के मामले में देश के अग्रणी इलाकों में शुमार है।''

रॉयचौधरी कहते हैं, ''यहां तक कि कारों की बहुतायत वाली सड़क आउटर रिंग रोड पर भी साइकिलों का शेयर ऑटो के करीब - क्रमशः ७ और ६ - है। दिल्ली के कम से कम ३४ प्रतिशत घरों में साइकिल है। घरेलू बाइक मार्केट का सालाना ३ प्रतिशत की दर से विकास हुआ है।''

रॉयचौधरी का कहना है कि साइकलिंग लेन अखंड नहीं हैं और ट्रैकों की जटिल डिजाइन साइकिल सवारों के लिए परेशानी का सबब रहा है। उनका कहना है कि अक्सर उच्च गति वाले वाहन साइकिल लेन में घुसपैठ करते हैं और गैर-मोटर वाहन सड़कों पर घुसपैठ के लिए कोई दंड नहीं है। मेट्रो स्टेशनों तक साइकिलों की पहुंच भी आसान नहीं है। यातायात पुलिस के संयुक्त आयुक्त सत्येंद्र गर्ग का कहना है कि राजधानी में जानलेवा हादसों की उच्च दर भी वाकिंग एवं साइकलिंग के रास्ते में बड़ी बाधा है।

गर्ग के अनुसार २०११ में दिल्ली की सड़कों पर करीब १०४ साइकिल चालक मारे गए। एनसीआर क्षेत्र में इससे जुड़ी एक पहल 'पेडलयात्री' के राजेश कालरा कहते हैं, ''नगर के नियामक निकायों के सहयोग के बिना साइकलिंग को सफल नहीं बनाया जा सकता।''

कालरा ने कहा, ''मैं दिल्ली में बाइक शेयरिंग की अवधारणा को प्रोमोट कर रहा हूं, जो यात्री को पांच रुपये के किराये पर साइकिल किराये पर लेने का मौका देगी। पर इसके लिए कोष और सरकारी सहयोग की जरूरत है। यहां साइकलिंग के लिए अधिक बड़े दायरे की जरूरत है।''

उन्होंने बताया कि वे आईआईटी/आईआईएम के छात्र प्रभात अग्रवाल के साथ मिलकर जल्द ही साइकिल रेंटल सेवा 'इंडिया साइकिल सर्विस' शुरू करेंगे।''

नीदरलैंड के मॉडल की चर्चा करते हुए डच साइकलिंग इंबेसी के जरोइन बुइस जोर देकर कहते हैं, ''भारत और नीदरलैंड में फर्क यह है कि नीदरलैंड में साइकिल परिवहन का एक सशक्त माध्यम है, वहीं भारत में इसे गरीबों की सवारी माना जाता है।''

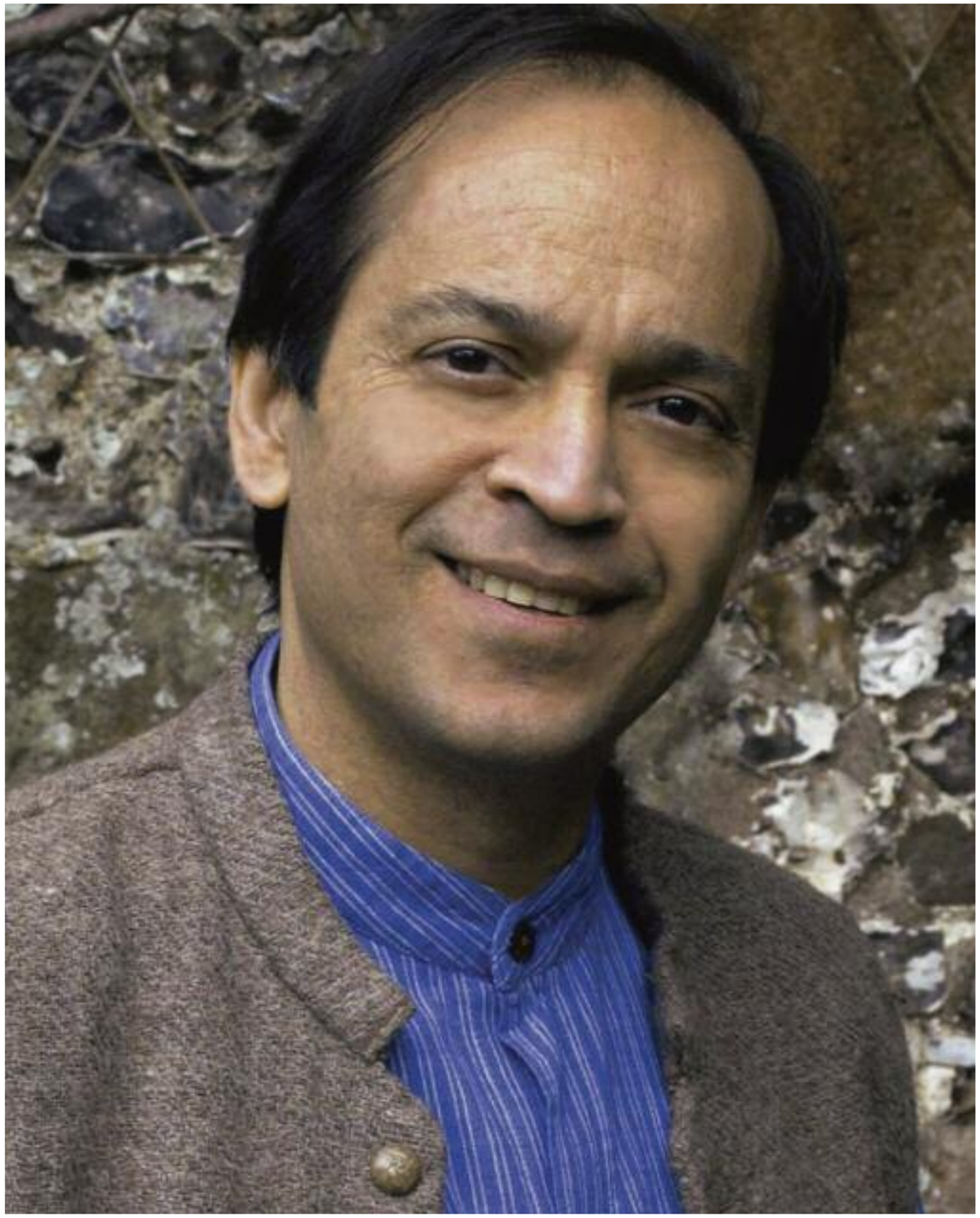

विक्रम सेठ

कविता में लीन

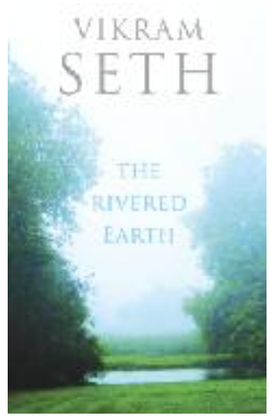

मशहूर लेखक विक्रम सेठ द्वारा लिखित द *रिवर्ड अर्थ* १७वीं सदी के कवि जार्ज हर्बर्ट के लेखन से प्रेरित उनकी ऐसी कविताओं का संग्रह है जिसे संगीत, सुलेखन और काव्य धारा का मिश्रण कहा जा सकता है। मधुश्री चटर्जी के साथ बातचीत में कवि ने इन तीनों विधाओं के साथ अपने प्रयोग का अनुभव बांटा है...

संगीत, सुलेखन, वार्तालाप और कविता। ये तीनों कलाएं विक्रम सेठ के नए कविता संग्रह द रिवर्ड अर्थ में माजूद हैं। यह पुस्तक लयबद्ध गीतात्मकता के दिल में द गोल्डेन गेट – पद्यात्मक उपन्यास – तक मशहूर लेखक विक्रम सेठ की यात्रा का निचोड़ है। १७वीं सदी के कवि जार्ज हर्बर्ट के लेखन से प्रेरित उनकी कविताओं के इस सामान्यतया छोटे संग्रह का विमोचन नई दिल्ली में पेंग्विन इंडिया के स्प्रिंग फीवर फेस्टिवल में किया गया।

इंग्लैंड में विल्टयशायर के सैलिसबरी स्थित हर्बर्ट के कंट्री होम 'द ओल्ड रेक्टरी' को खरीदने वाले सेठ कहते हैं, ''वहां रहने का मौका पाकर मैंने हर्बर्ट की कविताएं शेयर करने का मौका भी हासिल कर लिया है।'' कविता स्वाभाविक रूप से उनके दिल में बसती है। वे कहते हैं, ''मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं उपन्यासकार बनूंगा।''

सेठ कहते हैं, ''बतौर टेंपलेट जिस कविता (हर्बर्ट की) का इस्तेमाल मैंने किया है, वह है 'लव ३'। जब मैं समकालीन कवियों की कविताओं से हर्बर्ट की कविताओं की तुलना करता हूं तो मैं यही महसूस करता हूं कि वहां (हर्बर्ट की कविताओं में) एक तरह की खास प्रतिबद्धता है और पूरे काव्य परिवेश के सृजन का वहां आश्चर्यजनक तरीका अमल में लाया गया है।''

यह पुस्तक चार भागों – 'सॉन्ग्स इन टाइम ऑफ वार', 'शेयर्ड ग्राउंड', 'द ट्रेवलर और द सेवन एलीमेंट्स' – में विभाजित है। प्रत्येक भाग में उसका परिचय एवं लिब्रेटो (संगीत्माक पाठ) है, जिसे संगीत में ढाला है प्रसिद्ध इंग्लिश कंपोजर एलेक रोथ एवं वाललिन वादक फिलिप रोथ ने। हर भाग में चीनी, अंग्रेजी, हिंदी एवं अरबी में सुलेख है।

अवतरणों को संगीत में ढालने संबंधी संगीतकारों एवं सेठ के बीच का वार्तालाप लयबद्ध छंदों में तब्दील होकर मंच से दृश्य छिटकने का अनुभव पैदा करता है। यहां कविता का दायरा चीन, भारत और यूरोप तक फैला है। यह कविता संग्रह सेठ और नैडर नदी के किनारे उनके नए ठिकाने विल्टशायर के उनके संगीतकार दोस्तों के बीच की एक परियोजना 'कन्फ्लूएंसेज' का ही एक विस्तार है।

वे कहते हैं, ''कुछ समय पहले जब मैं इस लेखन से गुजर रहा था, मैंने एक ऐसे प्रोजेक्ट में भाग लिया, जो कई उल्लेखनीय संगीत रचनाओं के सृजन के रूप में सामने आया। यह एक लेखक, एक वायलिन वादक और एक संगीतकार के बीच का गठजोड़ था। हर साल एक भाग के सृजन के साथ यह चार सालों में पूरा हुआ। इसकी लिब्रेटी तीन सभ्यताओं – चीनी, यूरोपीय और भारतीय – को समाहित किए हुए है।''

> यह पुस्तक चार भागों – 'सॉन्ग्स इन टाइम ऑफ वार', 'शेयर्ड ग्राउंड', 'द ट्रेवलर और 'द सेवन एलीमेंट्स' – में विभाजित है

'द सॉन्ग्स इन टाइम ऑफ वार', जो इस संग्रह का पहला हिस्सा है और चीनी कवि डू फू, जिन्होंने ८वीं सदी में लेखन किया था, की कविताओं का अनुवाद है, फू की यांग्तज़ी नदी की नौ यात्रा के इतिहास से जुड़ी चिंतन, स्मृतियों और कथाओं के माध्यम से चीनी साम्राज्य पर रोशनी डालता है।

सेठ कहते हैं, ''जब मैं बीस साल का था तो मुझे चीन में दो साल तक रहकर नानजिंग यूनिवर्सिटी में पढ़ने, पड़ोस के गांवों की अर्थव्यवस्था एवं आबादी पर शोध करने और देश का भ्रमण करने का मौका मिला। थोड़ा जटिल तरीके से ही सही, पर मुझे चीन से लगाव हो गया।''

ये कविताएं लोकसाहित्य, मिथ, अंधविश्वास, दार्शनिकता, विद्रोह और युद्ध के परिप्रेक्ष्य में गल्प की तरह हैं। अपनी एक कविता 'ग्रिविंग फॉर द यंग प्रिंस' में सेठ युद्ध से बर्बाद एक साम्राज्य के बारे में लिखते हैं : '' भेड़िया और सियार शहर में चक्कर लगा रहे हैं। जंगल में/ ड्रैगन और उसका दरबार अभी भी निर्वासित है/ श्रीमान युवराज, अपना ख्याल रखें, मैं आपके साथ और अधिक बोल नहीं सकता/ लेकिन आपकी खातिर एक या दो क्षण रूकना चाहूंगा/... और मैंने सुना है कि स्वर्ग पुत्र का अपहरण हो गया है/ और उत्तर दिशा में, इसका संबंध खान से है...''

'ट्रेवलर' भारतीय आध्यात्मिक कविता लेखन एवं जीवन के सृजन और पारंपरिक चरणों पर ऋग्वेद की ऋचाओं पर उनकी निजी व्याख्या है। यह समकालीन काव्य परिदृश्य में प्राचीन भारतीय लेखन का प्रसंस्करण है। अपने चर्चित उपन्यास द सूटेबल ब्वॉय की उत्तर कड़ी लिखने में लगे सेठ कहते हैं, ''यह जल्द ही तैयार हो जाएगा। इस बीच में मैं सूटेबल गर्ल (इस कड़ी का अस्थायी टाइटिल) से परिचित हो जाना चाहूंगा!'' द रिवर्ड अर्थ को पेंग्विन इंडिया ने प्रकाशित किया है

इंदु सुंदरेसन

ग्रेटा राणा

अमिताव घोष

साहित्य में अतीत

इतिहास के इर्द-गिर्द कथा बुनने का चलन एक बार फिर साहित्यिक क्षेत्र में लौट रहा है। यह चलन भलेही धीमा है, पर निश्चित तौर पर इसका दायरा बढ़ रहा है, मधुश्री चटर्जी का यह मानना है

अब फिर से इतिहास की पुस्तकें अलमारियों में लौट रही हैं। पाठकों के बीच उनकी वापसी की मुख्य वजह है लेखकों द्वारा रोचक शैलियों में इतिहास के इर्द-गिर्द कथा बुनने का बढ़ता चलन। ऐसी इतिहासपरक कथायें पाठकों को खूब प्रभावित कर रही हैं।

''मैं समझता हूं कि ऐतिहासिक कथाओं के बढ़ते आकर्षण की दो प्रमुख वजहें हैं। पहला, इतिहास हमेशा से कहानी रहा है। लोगों और जगहों के इतिहास वाली कहानियों में भला किनकी दिलचस्पी नहीं होगी? ऐसी ऐसी उम्दा कहानियां किन्हें पसंद नहीं?'' यह कहना है पेंग्विन बुक्स इंडिया में एलेन लेन एंड पोर्टफोलियो इंप्रिंट के प्रकाशक उदयन मित्रा का। दूसरी बात यह है कि ऐतिहासिक कथा पुस्तकें वीरता, भव्यवता, रोमांस और कुछ ऐसे तत्वों से लैस होती हैं जो सभी को रोमांचित करते हैं।'' लोग ऐतिहासिक कथानक को इसलिए पढ़ना चाहते हैं, क्योंकि ऐसी पुस्तकें पाठकों को उस कालखंड के बारे में बोध कराती हैं, जिससे उनका कोई वास्ता नहीं रहा है, यह कहना है रोली बुक्स की संपादक एवं निदेशक प्रिया कपूर का।

कपूर कहते हैं, ''ऐतिहासिक कथा साहित्य इतिहास को और अधिक मनोरंजक ढंग से पेश करता है। हम निश्चित तौर पर यह जानना चाहेंगे कि उस जमाने के लोग कैसे रहते थे, क्या खाना पसंद करते थे और वे करते क्या था। ऐसी पुस्तकें इतिहास को एक अलग स्तर पर ले जाती हैं।'' रोली बुक्स के प्रकाशनाधीन फिलहाल दो टाइटिल हैं – हिडन वूमेन, नेपाल की राणा महिलाओं के बारे में ब्रिटिश-नेपाली रचनाकार ग्रेटा राणा की रचना, और मगध, जो मौजूदा बिहार में है, के मौर्या एवं गुप्ता शासन के बारे में एक कथा पुस्तक, जिसका टाइटिल अभी तय नहीं हुआ है। दूसरी पुस्तक को जेनेवा स्थित भारतीय रचनाकार सुमेधा ओझा, जिनकी जड़ बिहार में है, कलमबंद करेंगी। नई दिल्ली में मिडलैंड बुकस्टोर के मिर्ज़ा असद बेग कहते हैं, ''इतिहास पुस्तकों की कीमत २९९ रुपये से ४९९ रुपये है। सबसे अधिक कीमत रोमांचक कथा वाली पुस्तकें प्राप्त कर रही हैं।''

इंदु सुंदरेसन द्वारा मुगल बादशाह जहांगीर, उनकी बेगम नूरजहां एवं पुत्र शाहजहां से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों के इर्द-गिर्द बुनी गई कथा-त्रयी इन दिनों पाठकों की अलमारियों में खास जगह पा चुकी हैं।

सुंदरेसन का कहना है मुझे यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा तब मिली जब डेलावेयर यूनिवर्सिटी में स्नातक के अंतिम वर्ष की पढ़ाई के दौरान मुझे मुगल हरमों के बारे में एक पुस्तक पढ़ने का मौका मिला। बाद में मैंने यह महसूस किया किया कि इसमें कथा तत्व है। लेखक एलेक्स रदरफोर्द ने मुगलिया कहानी को अपनी कथा-त्रयी एंपायर ऑफ द मुगल को दिलचस्प कथात्मक मोड़ दिया है, वहीं न्यूजीलैंड स्थित पुरस्कार-विजेता लेखक डेविड हेयर ने अपनी रिटर्न ऑफ रावना त्रिलॉजी – पाइर ऑफ द क्वीन्स, स्वयंवरा और द घोस्ट ब्रिज – ने रामायण की कहानियों के जरिए पाठकों पर असर छोड़ने की कोशिश की है। इसी तरह अशोक बैंकर की छह खंडों वाली पुस्तक में अयोध्या के राम की वीरता की कहानी को औपन्यासिक शैली में पेश करने की कोशिश है। इन द फारेस्ट ऑफ स्टोरीज बैंकर महाभारत की कहानी को फिर से पेश करते हैं, वहीं कृष्णा कोरियोलिस में कृष्ण की वीरता एवं साहस की गाथा है।

लेखक अमिताव घोष की अर्ध-कथात्मक रचना इलबिस सीरिज (सी ऑफ पॉपीज एंड रिवर ऑफ स्मोक) १९वीं सदी के आव्रजन की कहानी कहती है, वहीं स्वदेशी आंदोलन, द्वितीय विश्व युद्ध और १९४७ के विभाजन की कहानी उनकी १९८८ की क्लासिक द शैडो लाइन्स में जीवंत हो उठती हैं।

> जब आप कोई उपन्यास पढ़ते हैं तो उसमें विस्मय तत्व तलाशते हैं... ऐतिहासिक कथा साहित्य का यही सार है...
>
> **– कपिश जी. मेहरा**
> **प्रबंध निदेशक, रूपा एंड कंपनी**

सलमान रुश्दी की किताब मिडनाइट चिल्ड्रेन एवं इनचैंट्रेस ऑफ फ्लोरेंस में क्रमशः देश विभाजन एवं मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल की कहानी पूरी जीवंतता के साथ दर्ज है, वहीं लेखक शशि थरूर की पुस्तक द ग्रेट इंडियन नोवल अभी भी आधुनिक भारतीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्राचीन महाकाव्य महाभारत की सर्वाधिक लोकप्रिय पुनर्कथा है। रूपा एंड कंपनी के प्रबंध निदेशक कपिश जी. मेहरा कहते हैं, ''ऐसी कथा के साथ पाठक तुरंत तादात्म्य बिठा लेते हैं। जब आप कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं, तो आपको इसमें आश्चर्यचकित कर देने वाले तत्व मिलते हैं, भलेही आप पहले से इससे वाकिफ नहीं हैं कि यह कहानी है क्या...। ऐसा गल्प इस सार को समाहित कर लेता है।''

मंजुल पब्लिशिंग हाउस में एमरिलिस इंप्रिंट के मुख्य प्रकाशन अधिकारी मंजुल कुलकर्णी कहते हैं, ''इतिहास को फिर से पेश किए जाने की जरूरत है। इसे नौसिखुआ पाठकों के लिए कथानक में तब्दील किए जाने की जरूरत है ताकि उनका इतिहासबोध और साहित्यबोध बढ़े।''

बेस्ट सेलर

कथा साहित्य

1

द सिन्स ऑफ द फादर
लेखक : जेफरी आर्चर
प्रकाशक : पैन मैकमिलन
मूल्य : ३५० रु.

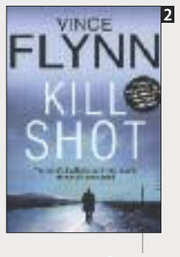

2

किल शॉट
लेखक : विंस फ्लाइन
प्रकाशक : सिमोन एंड स्कस्टर
मूल्य : ४९९ रु.

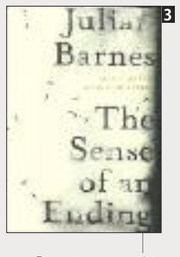

3

द सेंस ऑफ एन एंडिंग
लेखक : जूलियन बार्न्स
प्रकाशक : विंटेज
मूल्य : २९९ रु.

4

टी फॉर टू एंड ए पीस ऑफ केक
लेखक : प्रीति शेनॉय
प्रकाशक : रैंडम हाउस
मूल्य : १२५ रु.

5

द सेक्रेट ऑफ नागाज
लेखक : आमिष
प्रकाशक : वेस्टलैंड
मूल्य : २९५ रु.

गैर-कथा साहित्य

1

द मैजिक
लेखक : रोंडा बाइर्ने
प्रकाशक : सिमोन एंडस्कस्टर
मूल्य : ३९९ रु.

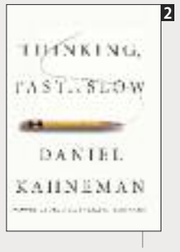

2

थिंकिंग फास्ट एंड स्लो
लेखक : डेनियल कानेमैन
प्रकाशक : एलेन लेन
मूल्य : ४९९ रु.

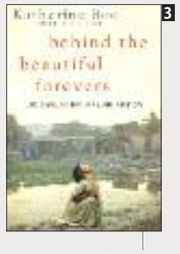

3

बिहाइंड द ब्यूटीफूल फॉरएवर्स
लेखक : कैथरीन बू
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ४९९ रु.

4

ए लाइफ इन वर्ड्स : मेमॉयर
लेखक : इस्मत चुगतई
प्रकाशक : पेंग्विन
मूल्य : ४९९ रु.

5

कन्फेशन ऑफ ए सीरियल डायटर
लेखक : कल्ली पुरी
प्रकाशक : हार्पर कॉलिन्स
मूल्य : २५९ रु.

स्रोत : बाहरीसन्स, दिल्ली, कैपिटल बुक डिपो, चंडीगढ़, स्पेल एंड बाउंड बुकशॉप एंड कैफे प्रा.लि., दिल्ली

समग्र कला चेतना

कला दीर्घाएं इन दिनों ऐसे समेकित कला संरक्षण स्थलों में परिवर्तित होती जा रही हैं, जो कलाकृतियों के प्रदर्शन और बिक्री के अलावा रेसीडेंसी सुविधाओं एवं कैफे से भी लैस हैं

हाल तक कला दीर्घाओं की भूमिका सिर्फ कला प्रदर्शनियों एवं कलाकृतियों की बिक्री तक सिमटी हुई थी, पर आज भारतीय कला दीर्घाएं ऐसे समेकित कला संरक्षण स्थलों में परिवर्तित होती जा रही हैं, जो कलाकृतियों के प्रदर्शन, हस्तशिल्प उत्पादों व कलाकृतियों की बिक्री के अलावा कलाकारों के लिए रेसीडेंसी सुविधाओं एवं थके-मांदे आंगतुकों के लिए फटाफट स्नैक परोसने वाले कैफे से भी लैस हैं।

ऐसा ही एक उभरता हुआ कला केंद्र है नई दिल्ली का 9क्यूए, जो ऐतिहासिक कुतुब मीनार से सटा एक हरा-भरा स्थल है। हाल ही में यह मल्टीमीडिया प्रदर्शनी 'रोटी कपड़ा, मकान' के साथ कला प्रेमियों के लिए खोला गया। इसकी इन-हाउस गैलरी ओजस आर्ट में २३ कलाकारों की कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया। रामचंदर नाथ फाउंडेशन द्वारा विकसित 9क्यूए एक गैर-लाभकारी संगठन है जो कला और संस्कृति को प्रोमोट करता है। इसके परिसर में हस्तशिल्प एवं जेवरात की दुकान के अलावा एक मैनीक्योर्ड गार्डन है, जहां प्रदर्शन एवं आउटडोर डिस्प्ले की जगह है। इसने अपनी मौजूदा सुविधाओं में विश्राम कक्षों एवं कैफे को भी शामिल करने का फैसला किया, ताकि कुतुब मीनार एवं महरौली पुरातत्व परिसर में आने वाले सैलानियों को आकर्षित किया जा सके।

ओजस आर्ट के मालिक अनुभव आर. नाथ ने कहा, ''9क्यूए एक एग्जीबिशन और डिस्प्ले स्पेस एवं गार्डन से युक्त क्राफ्ट शॉप से लैस है। मैं यहां सांस्कृतिक शो के अलावा फैशन, कला और डिजाइन से संबद्ध दूसरे सभी कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहता हूं।'' वैसे, एक एकीकृत कला स्थल की अवधारणा नई नहीं है, क्योंकि ऐसा ही प्रयोग रेलीगेयर आर्ट्स इनीशिएटिव द्वारा किया जा चुका है। जब इसे लांच किया गया था तो इसने कनाट प्लेस के शहरी परिवेश को एक आकर्षक कला परिवेश में बदल दिया था।

रेलीगेयर आर्ट्स इनीशिएटिव में ग्राहक सेवा प्रमुख लायला राव ने कहा, ''आज समेकित कला स्थलों के विकास की भारत में काफी गुंजाइश है। ३६० डिग्री कला मंच का फोकस है कला के सभी आयामों का संपोषण।'' आर्ट क्यूरेटर भावना ककर का कहना है, ''ये दीर्घाएं आर्काइविंग समेत सभी कला पहलुओं के लिए समेकित स्थल के तौर पर काम करती हैं।''

राजधानी के एक अग्रणी कला दीर्घा मालिक के मुताबिक सरकार संचालित ललित कला अकादमी, जो पुस्तक प्रभाग से लैस है, एपीसेंटर (गुड़गांव), चोलमंडलम आर्टिस्ट्स विलेज (तमिलनाडु), भारत भवन (भोपाल) और कलाकार जोगेन चौधरी के शांतिनिकेतन सोसाइटी फॉर विजुअल आर्ट्स जैसे संस्थानों की सफलता का कारण बहु-स्रोत संसाधन, बिजनेस मॉडलों का विविधीकरण, सरकारी मदद और यदा-कदा विदेशी सहायता।

रेलीगेयर आर्ट्स इनीशिएटिव में रेजीडेंट कलाकार

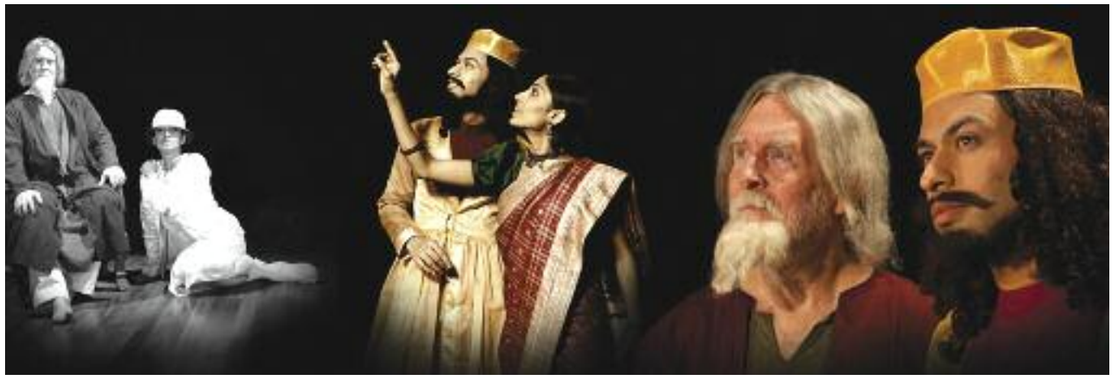

'विद लव : फाइंडिंग रबी ठाकुर' के दृश्यों वाला एक बैनर

टैगोर को नए सिरे से जानने की कोशिश

एक नया नृत्य-नाट्य टैगोर और उनकी ज़िंदगी में दखल रखने वाली महिलाओं के रिश्ते की व्याख्या कर इस महान कवि को फिर से समझने को प्रेरित करता है

कभी ये महिलाएं उनके ख्यालों में छाई रहीं या फिर उनकी प्रेमिका के रूप में शुमार रहीं। रबींद्रनाथ टैगोर को समझने के लिए उनकी कविताओं और उन महिलाओं के बीच के रिश्ते के ताने-बाने को समझना होगा जिनसे उनकी मुहब्बत रही - युवावस्था की उनकी प्रेमिका कादंबरी देवी, पत्नी मृनालिनी देवी जिन्होंने उन्हें प्रेम करना सिखाया, अर्जेंटेनियाई नारीवादी विक्टोरिया ओकैंपो जिनके साथ उनकी दोस्ती अंतिम सांस तक २३ साल चली। यह नाटक एक और प्रेमिका के बारे में रोशनी डालता है - यह महिला है मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा, जो नारीत्व के बारे में टैगोर की परिकल्पना को खासतौर पर पर प्रभावित करने की क्षमता रखती थी।

गुजरात स्थित दर्पण परफार्मिंग ग्रुप ने 'विद लव : फाइडिंग रबी ठाकुर' नामक यह नृत्य नाट्य तैयार किया है। साराभाई के समूह द्वारा तैयार टैगोर केंद्रित नाटय-त्रयी की यह अंतिम कड़ी है, जिसे लिखा और निर्देशित किया है खुद साराभाई एवं आस्ट्रेलियाई संस्कृति एवं कला प्रोमोटर स्टीव मेयर-मिलर ने। 'विद लव...' भाषायी एवं शैलीगत तकनीकों का मिश्रण है, जिसमें फ्लैशबैक, एकालाप, संवाद, समय चक्र की अवधारण,

मैं टैगोर को उनकी अंतरंग महिलाओं के जरिए फिर से जानना चाहती थी, और इसके लिए उनके पत्रों, डायरियों और रचनाओं को खंगाला

– मल्लिका साराभाई
नृत्यांगना एवं नृत्य निर्देशक

टैगोर की लघु कहानियों से लिए गए नाटकीय अवतरणों, बैले और रबींद्र संगीत का इस्तेमाल किया गया है। टॉम अल्टर ने टैगोर की भूमिका निभाई है। उन्हें एक ऐसे पीड़ित विश्व नागरिक के तौर पर चित्रित किया गया है जो अपनी मुहब्बतों, जीवन की ऊहापोहों आदि में विभाजित है। अपने गहन निजी क्षणों में टैगोर अपने जवां दिल, युवा और सौम्य टैगोर जो अपने बड़े भाई ज्योतिंद्रनाथ की पत्नी कादंबरी देवी से मुहब्बत करता है, से संवाद करता है। जब कवि एक विवाहित महिला ३४ वर्षीया विक्टोरिया ओकैंपो के प्रति प्यार को लेकर उलझन में फंसता है तो वह अपने जवां दिल से पूछता है कि उसके प्रति प्यार का इजहार कैसे किया जाए। युवा टैगोर अपने से ज्यादा उम्र की इस महिला को कोलकाता के जोरासांको स्थित अपने पुश्तैनी घर में आने को कहते हैं, ताकि वे अपने अतीत से इस उलझन का उत्तर तलाश सके। ओकैंपो के भव्य विल्ला 'मिरालरियो सैन इसिड्रो' में ही टैगोर ने अपनी 'पुरवी' कविताओं की रचना की थी और पेंटिंग शुरू की थी। उन्होंने इसे ओकैंपो को समर्पित किया था और उसे विजया नाम दिया था।

चित्रांगदा इस नाटक में सख्त वीरांगना राजकुमार के रूप में अपने अमरत्व का प्रदर्शन करती है, पर प्रेमिका के रूप में वे असफल रहती हैं। ओकैंपो की भूमिका निभाने वाली ६३ साराभाई कहती हैं, ''३० वर्ष की उम्र में पहुंचते-पहुंचते वे उन सभी महिलाओं को खो देते हैं, जिनसे वे प्यार करते है, वहीं ६३ वर्ष की उम्र में उनकी ज़िंदगी में विक्टोरिया ओकैंपो का प्रवेश होता है।'' 'विद लव : फाइंडिंग रबी ठाकुर', जिसकी शुरुआत समकालीन संगीत एवं नृत्य के आलोक में रबींद्र संगीत की व्याख्या और उसके बाद एक डांस ड्रामा 'स्ट्रीट ऑफ वॉयसेज' की प्रस्तुति के साथ होती है, के साथ ही यह ट्रिलोजी समाप्त हो जाती है।

साराभाई कहती हैं, ''मैं टैगोर को उनकी अंतरंग महिलाओं के जरिए फिर से जानना चाहती थी, और इसके लिए उनके पत्रों, डायरियों, जर्नलों और रचनाओं को खंगाला। किरदारों द्वारा बोले गए हर शब्द उनके दस्तावेज़ों, खासकर पत्रों, से हैं।''

भारत का चित्रण

कई विदेशी कलाकार, जिनमें से कुछ लंबे समय से भारत में बसे हैं, इन दिनों इस देश के प्रतीकों, संस्कृति, रहस्यवाद और संवेदनाओं को कैनवस पर चित्रित करने में सक्रिय हैं। उनकी कलाकृतियों में इस्तेमाल कुछ 'भारतीय संवेदनाओं' पर एक नज़र

माइकल बुहलर रोज

ओलिविया फ्रेजर-डेलीरिंपल

पीटर नैगी

निकोला स्ट्रिप्पोली

जचैरी बेकर

फ्रांसेस्को-क्लीमेंट

उनके साथ चस्पां 'विदेशी कलाकार' की छवि उनके संदर्भ में उपयुक्त नहीं है। आइए चित्रकारों की उस जमात से मिलें जो विदेशी मूल के हैं, पर वे पूरब के रहस्यों, आस्थाओं और रंगतों के प्रति अपने झुकाव से प्रेरित होकर विदेशों में भारत की अमिट छाप छोड़ रहे हैं।

डच मूल की भारतीय मल्टीमीडिया कलाकार स्टेरे शर्मा, जो १९७१ में भारत में बस गईं, पेंटिंग की प्रेरणा के लिए पूरबिया अध्यात्मवाद एवं रोजाना की भारतीय ज़िंदगी से प्रेरणा लेती हैं। स्टा कहती हैं, ''मेरी सभी पेंटिंग भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति से प्रेरित हैं।'' उन्होंने राधा और कृष्ण के प्रेम को अपनी पेंटिंग में जगह दी है, जिनमें वृंदावन के पारंपरिक मयूर नृत्य को भी चित्रित किया गया है। उन्होंने हनुमान की कथाओं एवं पवित्र हिंदू प्रतीक 'ओम' को चित्रित किया है। भारतीय नेता सतीश शर्मा से शादी के बाद महाभारत पढ़ना उनके जीवन का परिवर्तनकारी अनुभव रहा।

वे राजधानी दिल्ली के स्लम इलाकों के करीब १२,०० गरीब कलाकार परिवारों की मदद करती रही हैं। वे १९९२ से उन्हें यूरोप ले जाकर भारत की विलुप्त होती कलाओं का प्रदर्शन कराती रही हैं। वे कहती हैं, ''जब मैं सात साल की थी, तो कलाकार बनना चाहती थी।''

ब्रिटिश कलाकार ओलिविया फ्रेजर-डेलीरिंपल को भारतीय कला के प्रति झुकाव अपने एक पूर्वज जेम्स बेली फ्रेजर से विरासत के तौर पर मिला, जिन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के 'राज' के दौरान भारतीय वास्तुकला की रंगतों को विभिन्न संवेदनाओं के साथ चित्रित किया था। ओलिविया उत्तर भारतीय लघु चित्रकारी शैली में पेंटिंग करती हैं और अपने विषयों का चयन भारत के लोक एवं स्ट्रीट संस्कृति से करती हैं।

ओलिविया, जो मशहूर उपन्यासकार विलियम डेलीरिंपल की पत्नी हैं, कहती हैं कि वे अपनी पेंटिंग में 'भारतीय संवेदनाओं' को चित्रित करती है। चूंकि उन्होंने अपने करियर की शुरुआत बतौर भाषाविद् की थीं, उन्हें अपनी कला को एक इंटरप्रेटर की तरह अभिव्यक्त - 'भारतीय लघु चित्रकारी के चिंतनशील गुण की अभिव्यक्ति' - करने में मदद मिलती है। ब्रिटिश राज का इतिहास, जिसकी शुरुआत मुगलकाल के पतन काल होती है और आजादी पर खत्म हो जाता है, ऐसे कलाकारों से पटा है जिन्हें भारत - जो तब ब्रिटिश ताज का नगीना समझा जाता था, को कैनवस पर उतारने के लिए बहाल किया था, ताकि यूरोप में इस राज की ब्रांड छवि चमकाई जा सके।

आजादी के बाद थॉमस एवं विलियम डेनियल जेम्स फोर्ब्स, जॉन जॉफनी, जॉर्ज चिनरी और जेम्स फ्रेजर जैसे कंपनी के

मेरी सभी पेंटिंग भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति से प्रेरित हैं। मैंने पवित्र प्रतीक 'ओम' की व्याख्या करने की भी कोशिश की है

– स्टा शर्मा
डच मूल की भारतीय मल्टीमीडिया कलाकार, नई दिल्ली

कलाकार इतिहास में गुम हो गए और उनकी जगह उन कलाकारों ने ली जो खुद को 'इंडोफाइल' कहते थे।

अध्यात्म उनकी मूल प्रेरणा बना रहा, लेकिन आजीविका, अर्थशास्त्र और परिप्रेक्ष्य की संवेदनाओं के साथ। रामचंदर नाथ फाउंडेशन के कला प्रोमोटर अनुभव नाथ कहते हैं, ''विदेशी कलाकारों की कलाओं के प्रदर्शन की गुंजाइश कमोबेश सामान्य है। उन्हें ग्राहकों से तादात्म्य बिठाने के लिए भारतीय संवेदनाओं के अनुसार ढलना होगा।''

भारतीय वैष्णववाद युवा अमेरिकी कलाकार माइकल-बुहलर रोज की प्रेरणा है। भारत-प्रेरित आध्यात्मिक फोटोग्राफों के लिए के लिए जाने जाने वाले बुहलर साड़ी पहनी विदेशी महिलाओं के चित्रों के जरिए पश्चिम को भारतीय परिप्रेक्ष्य में रखने की कोशिश करते हैं। हाल ही में विदेशी गैलरिस्ट पीटर नैगी की नेचर मोर्टे गैलरी में ओलिविया के साथ अपने चित्रों का प्रदर्शन करने वाले ३२ वर्षीय बुहलर चित्रों के लिए विषयों का चयन भारतीय धर्मग्रंथों, प्रदर्शन परंपराओं एवं धार्मिक लोकाचारों से करते हैं।

इस जमात में दिल्ली स्थित अमेरिकी कलाकार जचैरी बेकर भी हैं। वे कहते हैं, ''मैं तिहाड़ जेल के युवा कैदियों के लिए एक कला परियोजना पर काम करने के लिए २००६ में भारत आया और यहीं का होकर रह गया।'' 'पूरब-पश्चिम' मिलन की संवेदना वाले इस पेंटिंग स्कूल को आगे बढ़ाने में इतालवी वास्तुकार, कला प्रोफेसर और अध्यात्मवादी निकोल स्ट्रिप्पोली, जो अपने संस्कृत नाम 'तारशितो' से जाने जाते हैं, की भी खास भूमिका है। वे १९८० के दशक से ही भारतीय गांवों के कलाकारों एवं हस्तशिल्पकारों के साथ गठजोड़ करते रहे हैं। भारतीय कला के प्रति इतालवी प्यार का इजहार भारतीय हस्तनिर्मित पेपर पर

ऊपर : स्टा शर्मा द्वारा हिंदू पौराणिकता की व्याख्या, बायें : ओलिविया फ्रेजर के चित्र में बंजारा महिलाएं।

फ्रांसेस्को क्लीमेंट द्वारा तैयार ओरिएंटल आर्ट से होता है। १९८० के दशक में क्लीमेंट ने भारत में रहकर कई वर्षों तक भारत को चित्रित किया था और वे कला समालोचक ज्योतिंद्र जैन द्वारा संग्रहित पुस्तक मेड इन इंडिया का विषय बन गए थे।

दिल्ली स्थित एक नामी कला लेखक कहते हैं, ''कुल्लू घाटी को अपना घर बनाने वाले रूसी पेंटर निकोलस रोरिक को अपने घरों से दूर रहकर भारत को चित्रित करने वाले विदेशी कलाकारों में सबसे उपयुक्त उदाहरण माना जा सकता है।''

सुर संगम

बेंगलुरु में एक संगीत समारोह में जब १,१०० वीणा एक साथ बज उठी तो दुर्लभ संगीत का सृजन हुआ...

जब कोई संगीतकार वीणा के तार को छेड़ता है तो श्रोता इहलौकिक अनुभवों से भर जाता है। जरा कल्पना कीजिए, जब एक साथ एक हजार से अधिक वीणा बजे उठे तो कैसा दुर्लभ अहसास पैदा होगा! हाल ही में, बेंगलुरु में संगीत प्रेमियों के लिए एक ऐसा ही विरल मौका आया जब १,१०० वीणा एक साथ बजाई गईं।

भारत के शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन आर्ट ऑफ लीविंग फाउंडेशन (एओएल) के बैनर तले किया गया, जहां बेंगलुरु और कर्नाटक के आठ दूसरे शहरों के वीणा वादकों का बंगलौर पैलेस मैदान में जमावड़ा हुआ। श्रोताओं को हंसध्वनि, धनश्री, वृंदावनी, काफी, हिंडोला, मयमालवागोवला, रेवती और मोहना जैसे शास्त्रीय रागों पर वीणा वादन सुनने का मौका मिला।

इस मौके पर फाउंडेशन के संस्थापक श्री श्री रविशंकर ने कहा, ''खुशी के क्षणों में संगीत के प्रति प्यार सहज ही पैदा हो जाता है। पर कठिन स्थितियों में संगीत आपको सुकून देता है, आपके जख्मों को भरता है और तनाव से मुक्त करता है, इसलिए संगीत को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाइए। वीणा दुनिया का प्राचीनतम वाद्य यंत्र है, जिससे इंसान सबसे पहले परिचित हुआ। इसकी गूंज बेजोड़ होती है। यह आपको इहलौकिक अहसास से भरती है।''

रवि शंकर ने कहा, ''हम संगीत को स्व-साक्षात्कार का माध्यम मानते हैं और इसलिए संगीत, नृत्य के कार्यक्रम आयोजित करते हैं।''

रंजीनी कलाकेंद्र (सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स) की सचिव सुपर्णा रविशंकर ने कहा, ''इस कार्यक्रम की प्रेरणा नई दिल्ली में एओएल द्वारा २००८ में आयोजित 'ब्रह्म नाद' कार्यक्रम है, जिसमें १०६४ सितारवादक एक साथ मंच पर उपस्थित हुए थे। इसने मुझे अनुभव कराया कि प्राचीन कला के विशेषज्ञों को प्रोत्साहित करने और भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रसार के लिए ऐसे मंचों की जरूरत है।''

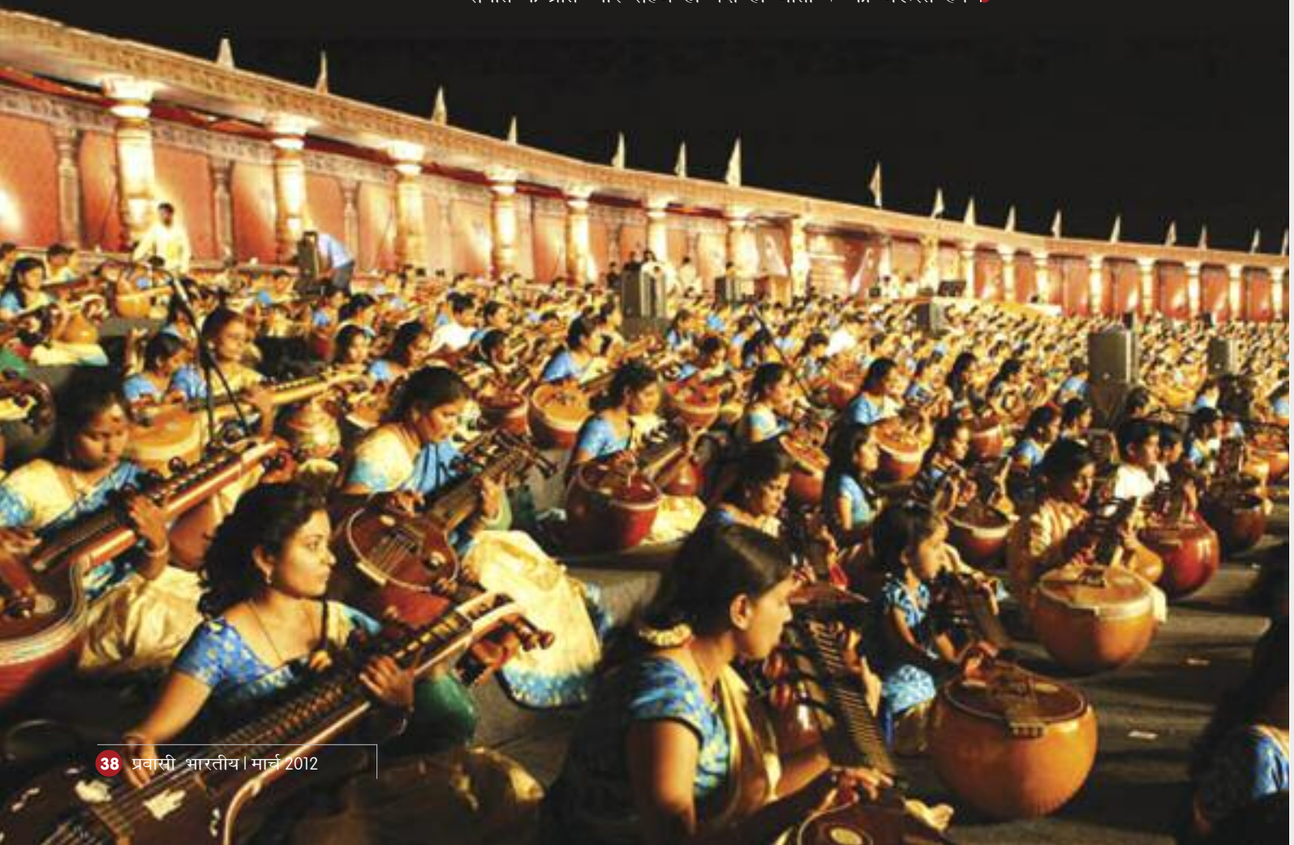

विक्की डोनर का मौलिक सूत्र

फिल्म : **विक्की डोनर**
संगीत निदेशक : **अभिषेक-अक्षय, डॉन-बैन, रोचक कोहली एवं आयुष्मान**
गीत : **कुसुम वर्मा, विजय मौर्या, आयुष्मान खुराना, जूही चतुर्वेदी एवं स्वनंद किरकिरे**
गायक : **अक्षय वर्मा, अदिति सिंह शर्मा, क्लिंटन सेरेजो, आयुष्मान खुराना, विशाल डडलानी, सुनीधि चौहान, बैन, मीका सिंह और सुकन्या पुरकायस्थ**
रेटिंग : ***

विक्की डोनर कई मामलों में एक रिकार्डधारी फिल्म है - इस फिल्म से जॉन अब्राहम ने न सिर्फ प्रोडक्शन के क्षेत्र में पहली बार कदम रखा है, बल्कि यह लोकप्रिय वीजे आयुष्मान खुराना की पहली फिल्म भी है, जबकि अभिषेक-अक्षय की जोड़ी ने इस फिल्म से संगीत निदेशक की हैसियत से अपना सफर शुरू किया है। दोनों ने इसके एलबम में बेहतर और मौलिक कार्य से प्रभावित किया है।

डॉन-बैन, रोचक कोहली और आयुष्मान ने भी फिल्म के साउंडट्रैक में योगदान दिया है।

इसके गीतों को पांच भिन्न गीतकारों ने गढ़ा है और उनकी मेहनत को सराहना मिली है।

इसके ओपनिंग ट्रैक 'रोकदा' की पंक्तियां सामान्य हैं, पर इसकी दिलकश धुनों एवं कंपोजर अक्षय वर्मा की आवाज ने इसे कर्णप्रिय बना दिया है। अदिति सिंह उनके साथ इसमें आवाज दी है और दोनों की युगल आवाज संगीत प्रेमियों को प्रभावित किए बगैर नहीं रहती।

इस फिल्म का दूसरा गाना है 'खा जाने दो', जो एक सुकूनदायी मधुर लव सॉन्ग है। इसका कॉम्पोजिशन उम्दा है। लेकिन, एक बार फिर चूही चतुर्वेदी की पंक्तियां ज्यादा प्रभावशाली नहीं है, पर गायक क्लिंटन सेरेजो एवं अदिति ने अपनी आवाज से इसे प्रभावशाली बना दिया है। इसका काम्पोजिशन इसमें ज़िंदादिली का पुट देता है, जो सरल होने के बावजूद असरदार है।

आयुष्मान ने 'पानी दा रंग' को उम्दा तरीके से गाकर सुखद आश्चर्य दिया है। लगता है कि उन्होंने म्युजिक शो होस्ट करते हुए काफी अनुभव बटोरा है।

आयुष्मान की आवाज में ताजगी है और वह सुकून देती है। लोक संगीत एवं पॉप की धुनों का यह उम्दा मिश्रण है। उन्होंने इसे को-कंपोज किया है और इसके एक हिस्से को लिखा भी है। इस गाने का महिला संस्करण भी है जिसे सुकन्या पुरकायस्थ ने आवाज दी है। वहीं संगीत की दुनिया में हाल ही में कदम रखने वाले डॉन-बैन द्वारा कंपोज 'मर जइयां' में सूफी और रॉक दोनों का पुट है। इसके गीत लिखे हैं स्वनंद किरकिरे, वहीं सुनीधि चौहान और विशाल डउलानी ने गीत के साथ भरपूर न्याय किया है। यह वाकई उम्दा गाना है, इसलिए इसका आप भरपूर लुत्फ उठा सकते हैं।

यह उदासी का इजहार करने वाले संगीत से भी लैस है, जिसमें जज्बात का ईमानदार पुट है और सुनने वाले को भदेस ग्रामीण संवेदना से लैस करता है। इसके किरदार डा. चड्ढा, जिसे अन्नू कपूर ने निभाया है और जो स्पर्म डोनर आयुष्मान का पीछा करता है, पर फिल्माया गाना 'किस्मत के लग गये पकोड़े, पीछे पड़ गया चड्ढा' गाना भी सिने प्रेमियों को प्रभावित करता है।

कुल मिलाकर विक्की डोनर एक बेहतर प्रयास है और कई कलाकारों के एक मंच पर आना फिल्म को देखने योग्य बनाता है।

- भाष्कर पंत

वियना में बॉलीवुड

भारत में जन्मे आस्ट्रियाई फिल्म निदेशक संदीप कुमार एक संगीतमय बॉलीवुड फिल्म *सर्वस इश्क यानी हेलो, लव* बना रहे हैं। मेहरू जाफर ने संदीप से वियना में बात की, जहां वे फिल्म के प्रथम रोमांटिक सॉन्ग सेक्वंस की शूटिंग कर रहे थे...

भारत में जन्मे आस्ट्रियाई फिल्म निदेशक संदीप कुमार इस साल नए अंदाज में बसंत का स्वागत कर रहे हैं। उन्होंने बॉलीवुड स्टाइल में बन रही अपनी फिल्म सर्वस इश्क के प्रथम गाने को फिल्माने के लिए वियना के हर्शटेटन बोटैनिकल गार्डेन्स में कैमरे एवं लाइट लगाए हैं। हाल के इस मौसम में जैविक उद्यान में रंगों की दिलकश छटाएं चारों ओर खिली रहती है, क्योंकि तब ३६०,००० बासंती फूल यहां खिले होते हैं और १.५ मिलियन ग्रीष्मकालीन फूल भी इस मौसम में खिल उठते हैं। कुमार इसे किसी भी फिल्म की शूटिंग के लिए दिलकश पृष्ठभूमि मानते हैं। इस फिल्म का मुहूर्त यहां के एक मंदिर में मंत्रोच्चार के बीच किया गया।

यह भारतीय-आस्ट्रियाई फिल्म अगले साल रिलीज होगी। संदीप कुमार ही इस फिल्म के पटकथा लेखक, निर्माता और निदेशक तीनों हैं। यह संगीतमय फिल्म रोमांस, संगीत और आध्यात्म का जीवंत मिश्रण होगी। यह अंग्रेजी, जर्मन और हिंदी में एक साथ तैयार

बायें : निदेशक संदीप कुमार (अग्रभाग में एवं ऊपर) अपने फिल्म दल के साथ
(फोटो : वोल्फगैंग गार्ल्होफर)

होने वाली पहली क्रॉसओवर फिल्म होगी।

संदीप कुमार खुश हैं कि मुंबई स्थित अफरोज़ खान ने उनकी फिल्म के पांच गानों को कंपोज किया है, जिनमें से दो गानों को आवाज देंगे 'हम दिल दे चुके सनम' फेम के गायक मोहम्मद सलामत।

कुमार, जिनकी प्रथम फिल्म 'केसरिया बालम', एक ऐसी राजस्थानी महिला की कहानी है जिसका वियना में पुनर्जन्म होता है, कहते हैं, ''मेरे दिमाग में कई कहानियां घुमड़ रही हैं। इनमें से अधिकांश कहानियां आस्ट्रिया में रहने वाले भारतीय के रूप में मेरा अपना अनुभव हैं। भारतीय और आस्ट्रियाई दोनों के तौर पर अपनी पहचान से मैं संतुष्ट हूं। यहां और वहां दोनों की संवेदना मेरे कथ्य की आत्मा और सार है।'' कुमार अमेरिका एवं जर्मनी में बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई करने के बाद करीब एक दशक पहले आस्ट्रिया आए। वर्षों तक वे मैनेजमेंट कंसल्टेंट के तौर पर काम करते हुए पटकथा लेखन में व्यस्त रहें। रात की खामोशी में वे वक्त निकालकर पटकथा लिखा करते थे।

अब उन्होंने सर्वस इश्क की शूटिंग के लिए काम से छुट्टी ली है। इसमें फिल्म में वियना के एक अभिनय प्रशिक्षण स्कूल श्कॉपिलस्कूल क्रॉस की द्वितीय वर्ष की छात्रा विक्टोरिया नॉजेरिया की भूमिका होगी। यह उनकी पहली फिल्म है। इस फिल्म में नॉजेरिया मुख्य किरदार में होगी। उन्हें इसमें माया नामक ऐसी भारतीय महिला की भूमिका निभाने का मौका दिया गया है जिसकी जड़ आस्ट्रियाई है। इस फिल्म में माया अपनी दिवंगत

विक्टोरिया नॉजेरिया (फोटो : रिची पॉप)

आस्ट्रियाई दादी द्वारा छोड़ी गई एक डायरी की तलाश में भारत से आस्ट्रिया आती हैं। पूरी तरह आस्ट्रिया में शूट होनी वाली इस फिल्म में माया अपने मिशन में एक तीर्थस्थल मारियाजेल, जो वियना से करीब २०० किलोमीटर दूर है, पहुंचती है। यह स्थान कैथोलिक संप्रदाय के लोगों के लिए काफी पवित्र माना जाता है। यहां वे अपनी आस्ट्रियाई दादी की अस्थियों को विसर्जित करती हैं। इसी यात्रा के दौरान माया को अपनी मुहब्बत मिल जाती है। यानी उनके जीवन में उनके प्रेमी का प्रवेश होता है।

मारियाजेल के रहने वाले कुमार कहते हैं, ''१७वीं सदी का यह भव्य चर्च एवं पास की इर्लाफसी झील हमारी इस लव स्टोरी की एक और बेहतरीन पृष्ठभूमि है।''

कुमार ने कहा, ''मैं अपनी मां को लेकर मारियाजेल गया और यह यात्रा आध्यात्मिकता की भावना से ओतप्रोत थी। यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी। मेरी धारणा यह थी कि समकालीन यूरोप में आध्यात्मिकता का कोई नामलेवा नहीं है, पर यह धारणा गलत थी।'' इसका संगीत एवं नृत्य निर्देशन वियना स्थित कथक डांसर नेहा कपडी ने किया है, जो मूलतः मुंबई की हैं। इस फिल्म में कपडी की भूमिका भी। कुमार के २५ सदस्य फिल्म दल में अधिकांश आस्ट्रियाई हैं। अनुभवी सिनेमैटोग्राफर मैक्स लीम्स्टेटनर फिल्म के फोटोग्राफी निदेशक हैं।

प्रदर्शनपरक कला के प्रति कुमार का झुकाव उन दिनों से रहा है जब वे दिल्ली के सेंट कोलंबस स्कूल के छात्र हुआ करते थे, जहां वे शाहरुख खान से चार साल जूनियर थे। शाहरुख खान से जुड़ा उनका सर्वाधिक यादगार क्षण वह है जब उन्हें बॉलीवुड बादशाह के नाम से विख्यात शाहरुख खान के साथ एल. फ्रैंक बॉम के स्कूली संस्करण 'द बिजर्ड ऑफ ओजेड' में मंचन का मौका मिला। इसमें शाहरुख ने बाजीगर की भूमिका निभाई थी।

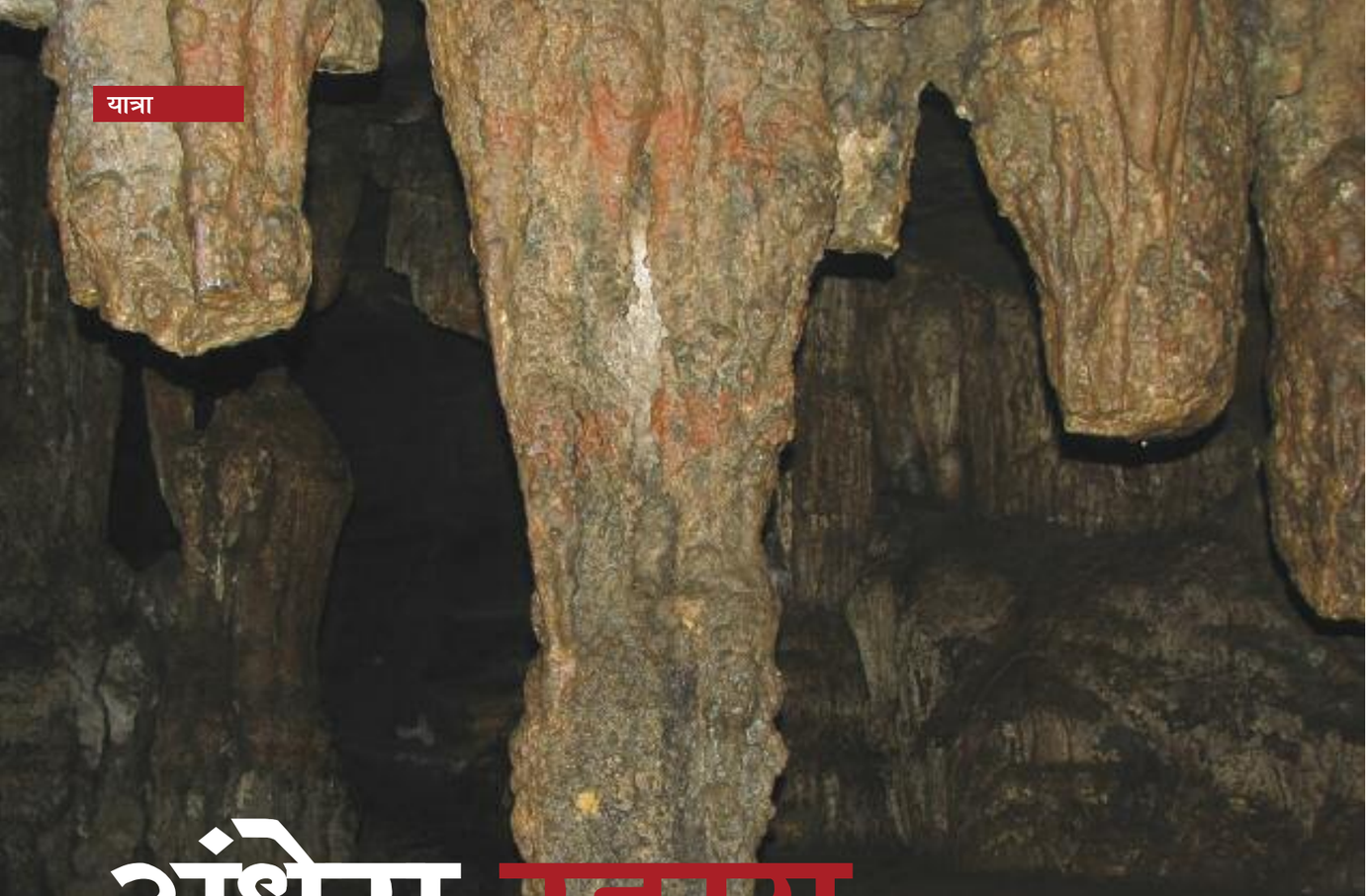

अंधेरा रहस्य

अंधेरी, रहस्यमय और भुतहा.... छत्तीसगढ़ की कुटुमसार गुफाओं की यही है पहचान। दुनिया की सर्वाधिक बड़ी गुफाओं में से एक कुटुमसार के अंदर की दुनिया से रू-ब-रू होना कमजोर दिल वाले लोगों के लिए आसान नहीं, यह मानना है राहुल वैष्णवी का

1

3

2

1. कुटुमसार गुफा
2. गुफा में निक्षेप आकृतियां
3. मुख्य गुफा के अंत में एक कुदरती शिवलिंग है और हर साल महा शिवरात्रि को सैकड़ों स्थानीय निवासी पूजा के लिए यहां आते हैं।
4. कांगेर नेशनल पार्क में कांगेर धारा (प्रपात) का दृश्य

4

कांगेर वैली नेशनल पार्क

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के जगदलपुर के नजदीक और कुटुमसार गुफाओं से सटा है कांगेर वैली नेशनल पार्क, जो करीब २०० वर्ग किलोमीटर में फैला एक जैविक अभयारण्य है। इसका नाम कांगेर नदी से निकला है, जो यहां से होकर बहती है। यह पार्क अपने समृद्ध जैव विविधता और प्रचुर वनस्पति संपदा के लिए जाना जाता है। इस पार्क की यात्रा करते हुए आप दो और गुफाओं - कैलाश गुफाएं और दंडक गुफाएं - से परिचित होते हैं। कांगेर धारा (जो चित्र में प्रदर्शित है), तीरथगढ़ जलप्रपात और भैमसा धारा (क्रोकोडाइल पार्क) यहां के प्रमुख आकर्षण हैं। यहां घूमने का सबसे अच्छा मौसम नवंबर-जून है।

वहां कैसे पहुंचें

कांगेर घाटी में बस्तर के जिला मुख्यालय जगदलपुर से पहुंचा जा सकता है। यहां जगदलपुर- सार्गीपाल-जतम-नियानार-बोडल रोड से भी पहुंचा जा सकता है। रायपुर (३३० किलोमीटर) सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है और जगदलपुर (२७ किलोमीटर) सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन और बस अड्डा है जगदलपुर-सार्गीपाल-जतम-नियानार-बोडल रोड से भी पहुंचा जा सकता है। रायपुर (३३० किलोमीटर) सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है और जगदलपुर (२७ किलोमीटर) सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन और बस अड्डा है।

घने झुरमुटों से घिरे एक बेहद संकरे पथरीली दर्रे से होकर तंग जीनों के सहारे नीचे उतरते ही एक छोटा सा लौह दरवाज़ा दिखाई देता है, जो आपको घुप्प अंधेरी और डरावनी कुटुमसार गुफाओं के अंदर प्रवेश दिलाता है। दुनिया की सबसे बड़ी गुफाओं में से एक कुटुमसार की गुफाएं आपको एक रोमांचक और रहस्य अंधेरी दुनिया से वाकिफ कराती हैं। रहस्य और रोमांच का लुत्फ उठाने वाले लोग करीब एक घंटे के सफर वाली इस गुफा के अंदर प्रवेश करना कतई नहीं भूलते।

बस्तर के कांगेर वैली नेशनल पार्क में स्थित ये गुफाएं छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से करीब ३५० किलोमीटर दूर है और इनका नामकरण पास के एक गांव के नाम पर किया गया है। ये गुफाएं करीब ४० फीट गहरी और ४,५०० फीट लंबी हैं।

इस गुफा का प्रवेश द्वार काफी संकरा है। इतना संकरा कि इसके अंदर रेंगकर प्रवेश करना पड़ता है। वैसे, मानव-निर्मित सीढ़ियों से होकर कुछ फीट नीचे जाने के बाद अंदर के रहस्यमय नजारों का रोमांचकारी दर्शन के लिए हाथ में सौर लालटेन थामनी पड़ती है। भय एवं रहस्य के भाव के साथ अंदर चहलकदमी करते हुए आपको ऐसा लगता है, जैसे कि आप इंडियाना जोन्स की भयावह फंतासियों से रू-ब-रू हो रहे हैं। आप अज्ञात और अप्रत्याशित के डर से भयभीत हो जाते हैं। वैसे, वहां का सीलन भरा वातावरण, घोर अंधेरे और गूंजती आवाज यहां के रोमांच में भयावहता का पुट देने के लिए काफी हैं। निश्चित तौर पर यहां की सैर कोई कमजोर दिल वाला व्यक्ति तो नहीं कर सकता।

जब यहां की पथरीली दीवारों पर जब टार्च की रोशनी पड़ती है और चारों ओर की रहस्यमयता, रूमानियत एवं आरोही निक्षेप एक अजीब सी दुनिया गढ़ते हैं। दीवारों और छत पर पर बनी कुदरती आकृतियों आपकी कल्पनाशक्ति को प्रभावित किए बगैर नहीं रहते। ऐसी अनोखी कुदरती आकृतियों का विकास चट्टानी दरारों से होकर वर्षा जल के रिसाव के कारण हुआ है। कहीं कोई आकृति देवी दुर्गा की आंखों से मिलती-जुलती है तो कोई आकृति हाथी के सूंड या मोर के पंख जैसी दिखती हैं।

जब आप आगे बढ़ते हैं तो छिछली जलधाराओं में अनोखी प्रजातियों की मछलियां एवं मेढक तैरते नजर आते हैं, जिनके बारे में स्थानीय लोगों का दावा है कि ये प्राणी आनुवंशिक रूप से अंधे हैं। गुफा में सभी दिशाओं में कई कोष्ठ हैं और २०११ में जिस एक नए कोष्ठ की खोज की गई उसके बारे में कहा जाता है कि वह तो ४१० मीटर गहरा है।

वैसे, गाइडों के मार्गदर्शन में एक मुख्य गुफा में जाया जा सकता है, जबकि दूसरे कोष्ठों में प्रवेश करना प्रतिबंधित है।

मुख्य गुफा के अंत में एक कुदरती शिवलिंग है और हर साल महा शिवरात्रि को सैकड़ों स्थानीय निवासी पूजा के लिए यहां आते हैं। स्थानीय लोक कथाओं के मुताबिक, इन गुफाओं का पता सबसे पहले १९५१ में उन आदिवासियों ने लगाया जो साही नामक जंगली प्राणी का पीछा करते हुए इस गुफा तक पहुंचे थे। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक इन गुफाओं की खोज १९५८ के आस-पास भूगोलवेत्ता शंकर प्रसाद तिवारी द्वारा की गई थी।

अंडे का फंडा

अंडे की बढ़ती विविध उपयोगिता एवं लोकप्रियता ने भारत में पेशेवर रसोइयों को अंडे से ऐसे कई तरह के व्यंजनों की ईजाद का मौका दिया है जिन्हें देखकर मुंह में पानी आ जाता हो। यहां अंडों से उम्दा व्यंजन बनाने वाले चोटी के कुछ शेफ के बारे में रोशनी डाली जा रही है...

खान-पान का सामान्य, पर अनिवार्य हिस्सा समझा जाने वाला अंडा तेज बदलाव के दौर से गुजर रहा है। वे दिन गए जब अंडों का आम इस्तेमाल भुजिया और अंडा करी तक सिमटा हुआ था। अब यह जमाना अंडों के अपनत्वपूर्ण इस्तेमाल' का है, जहां ऑमलेट पर खाने वाले के नाम भी लिखे जाते हैं। बंगाल एवं केरल जैसे राज्यों में व्यापक तौर पर और मुंबई एवं गुजरात के पारसी घरों में जहां तीखे लाल शोरबे वाली अंडा करी के साथ परांठा खाना आम चलन रहा है, वहीं उत्तर भारतीय रसोइघरों में अंडे की भुर्जी पकाने का आम चलन रहा है। अब, अंडा व्यंजनों का दायरा पहले से काफी विविध और विस्तृत हो गया है। सब्यसाची गोरई, जिन्हें इंडियन नेशनल टूरिज्म बोर्ड की ओर से राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के हाथों वर्ष २०११ के लिए बेस्ट शेफ का पुरस्कार हासिल करने का मौका मिला है, जैसे अनुभवी शेफ ने अंडे की खान-पान उपयोगिता को जादुई रूप दे दिया है। अपने पेशेवर सर्कल में शेफ 'सैबी' के तौर पर चर्चित गोरई बेहतरीन ऑमलेट का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि ऐसा ऑमलेट बाहर से सफेद, अंदर से गीला होना चाहिए। वह वलय में घिरे अर्ध चंद्रमा की तरह दिखना चाहिए। ऑमलेट की ऐसी कला को सीखने में छह से आठ महीने लगते हैं।

सैबी कहते हैं, ''एग्स स्टेशन'', जिसे हम ओलिव बार एंड किचन पर संचालित करते हैं, में हम एग्स बेनेडिक्ट, पोच्ड एग्स, एग्स सॉसेज के साथ बारीक मटन, जेली एग्स और बच्चों के लिए वनिला टोस्ट के साथ मीठा फ्रायड एग्स पेश करते हैं।'' बचपन में अंडे खाकर बड़ा हुआ यह शेफ अंडे से कई व्यंजन बनाने में कुशल

शेफ सब्यसाची गोरई, ओलिवर बार एंड किचन, नई दिल्ली

है। यहां तक कि वे प्रयोग के तौर पर बटेर एवं बतख के अंडों से एग 'पोटली' - गीली जर्दी वाले अंडे को प्लास्टिक पाउच में पकाकर तैयार किया हुआ, जिसे रोस्ट टेंडरलोइन (जांघ का मांस) या चिकन के साथ परोसा जाता है - नायाब व्यंजन बनाने में भी उस्ताद हैं। वे कहते हैं, ''मैं पुराने जमाने के यूरोप में अंडा से बनने वाले वन-आइड सुसान जैसे क्लासिकल व्यंजनों का क्रेज लौटाना चाहता हूं, जो ऐसा टोस्ट है जिसके बीच में छेद होता है, जबकि अंडे का पूरा हिस्सा केंद्र में होता है।''

पेशेवर रसोइयों के संगठन इंडियन क्यूलिनरी फोरम के सदस्य शेफ विवेक सागर का कहना है कि अंडों ने भारतीय लजीज खान-पान के बीच इसलिए भी अहम जगह बना ली है, क्योंकि देश में फ्यूज़न फूड का क्रेज तेजी से बढ़ रहा है। वे कहते हैं, ''बटेर एवं बतख के अंडे फिर से लोगों के थाल में लौट रहे हैं - चाहे उनका इस्तेमाल दक्षिण भारतीय व्यंजनों में बेस के तौर हो या टॉपिंग व लेई के रूप में।'' सागर के पसंदीदा व्यंजनों में से एक है 'जीरा एवं सौंफ मिले अंडे के घोल में फ्राई किया हुआ मछली का टुकड़ा जो काफी स्वादिष्ट होता है।'

फोल्डेड स्पेनिश ऑमलेट विद औलिव्स

जाने-माने शेफ एवं लेखक देविंदर कुमार, जो इंडियन क्यूलिनरी फोरम के प्रमुख हैं, कहते हैं, ''अंडे मछली को टेक्सचर एवं विशेष फ्लेवर देते हैं। ऐसे में जब नायाब प्रयोग एवं रचनात्मकता का बोल-बाला है, अंडा भुर्जी भी नए फ्लेवर में ढलती जा रही है। एशियाई सोंधी वाली अंडा भुर्जी तैयार करने में मुझे नींबू के पत्तों का इस्तेमाल करना पसंद है।'' जस्ट कबाब्स : सेलेब्रेशन फॉर ३५ डेज एंड वन फॉर द लीप ईयर नामक पुस्तक लिखने वाले कुमार का कहना है कि वे अक्सर भुने हुए आलू का इस्तेमाल ढांचे के तौर पर करते हैं, जिसमें वे अंडे की भुर्जी को भरकर इसे विभिन्न हर्ब के साथ परोसते हैं। कुमार कहते हैं, ''कई बार मैं हर्ब के साथ रॉल किए हुए हैम की लेयर वाला ऑमलेट बनाना पसंद करता हूं। ऐसे आमलेट के बॉर्डर को बारीक टमाटर एवं तुलसी से डेकोरेट किया जाता है।''कोलकाता स्थिति सेलिब्रिटी शेफ शॉन केनवर्थ कहते हैं, ''अंडा क्लासिकल व्यंजनों के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। एक क्लासिकल एवं लोकप्रिय फ्रेंच व्यंजन है बाउल में पका हुआ अंडा, जिसके टॉप पर मशरूम डाला जाता है। एक और पसंदीदा डिश है शोरबेदार बछड़े के मांस के साथ उबले हुए अंडे का मिश्रण, जिसे मशरूम के साथ परोसा जाता है। मुझे गल का अंडा - छोटा और नीला - काफी पसंद है और मैंने वर्षों तक बतख के अंडे पकाये हैं।'' नई दिल्ली में जेपी होटल के एग्सपेक्टेशन में 'थ्री ऑमलेट एग्सपेक्टेशन, ट्रिपल ट्रीट टॉर्टिला और 'एग चिलाडा' जैसे नायाब लजीज व्यंजनों के साथ अंडों को अमेरिकन एवं कंटीनेंटल मेकओवर प्रदान किया जाता है। एग्सपेक्टेशन के सह-संस्थापक एंजो रेंडा कहते हैं, ''भारत की तरह ही, इटली एवं अमेरिका में, जहां से मैंने अपने चेन की शुरुआत की, भी अंडा सर्वाधिक पसंदीदा आहारों में से एक है।''

अंडों के कुछ खास लजीज व्यंजन

शेफ्स च्वायस

शेफ सैबी (सब्यसाची गोरई) महाराष्ट एवं गोवा के कोंकण इलाके की एग मालवानी करी की पैरोकारी करते हैं। वे कहते हैं, ''मुझे एग मलवानी करी काफी पसंद है।''

एग मालवानी करी

मालवानी एग करी की सर्वाधिक पंसदीदा स्टाइल में से एक।

संघटक

- अंडा : ४ (पूरी तरह उबला हुआ)
- हरी मिर्च : २ (सामान्य तीखा)
- धनिया के पत्ते : बारीक
- लहसुन : ४
- अदरख : बारीक
- प्याज १/२ हिस्सा (कटा हुआ)
- फ्रेश नारियल : १/२ कप
- लाल मिर्च पाउडर : १/२ चम्मच
- मलवानी मसाला : १/२ चम्मच
- गरम मसाला : १ चम्मच
- जीरा साबूत : १/२ चम्मच
- सूखी लाल मिर्च : २
- हींग : एक चुटकी
- नमक : जरूरत भर
- तेल : २ चम्मच + ३ चम्मच

विधि :

पैन में २ चम्मच तेल को गर्म करें। इसमें प्याज डालें और तब तक भुने जब तक यह पारदर्शी न हो जाए। इसमें बारीक प्याज और नारियल डालें और तब तक भुने जब तक पारदर्शी न हो जाए।

अदरख, लहसुन, हरी मिर्च, धनिया पत्ता, भुने हुए प्याज एवं नारियल को पीस लें।

इसके बाद तीन चममच तेल गर्म करें और इसमें जीरे को डालकर तब तक पकायें जब तक वे लाल न हो जायें। इसके बाद हींग एवं सूखी लाल मिर्च भी डालें। इसके बाद पिसा हुआ मसाला डालकर इसके तब तक भुने जब तक इसमें से तेल अलग न हो जाए।

फिर इसमें लाल मिर्च पाउडर, मलवानी मसाला डालें और इन्हें ५ मिनट तक भुनें। मसाले को ठीक से मिलाने के लिए इसमें पानी डालें। फिर, इसमें नमक डालें एवं ऊपर से गरम मसाला छिड़क दें। इसे तब तक पकायें जब तक तेल ऊपर तैरने नहीं लगे।

उबले हुए अंडों को दो टुकड़ों में काट लें और इसमें शोरबे में डाल दें। फिर इसमें कटे हुए धनिया पत्ते डाल दें और चावल या चपाती के साथ परोसें।

डेविल्ड स्टफ्ड एग्स

संघटक

- १२ उबले हुए अंडे
- १/सीएल चॉप्ड पिकल्स या स्वीट रेलिश
- १/३ सीएल सलाद ड्रेसिंग
- २ चम्मच बारीक प्याज
- १/४ चम्मच नमक

विधि

एक अंडे के सफेद वाले हिस्से को चार टुकड़ों में काट लें। अंदर भरे जाने वाली सामग्री की तैयारी के लिए : एक कटोरे में जर्दी, कटे हुए अंडों, पिकल्स, सलाद ड्रेसिंग, प्याज और नमक को मिलायें। प्रत्येक शेष अंडों एक-एक चम्मच सामग्री डालें। इसे आधा पिमेंटो ऑलिव से सजायें। परोसे जाने से पहले कम से कम चार घंटे तक इसे ढंकें और रेफ्रीजरेट करें।

बगता की पेंटिंग ३००,००० डालर में नीलाम

अनुभवी भारतीय कलाकार बगता (१७६६-१८२८) की एक पूर्ववर्ती अलिखित पेंटिंग हाल में अमेरिका में भारतीय, हिमालयी एवं दक्षिण-एशियाई कला नीलामी में ३०२,५०० डालर की रिकार्ड राशि में बिकी। १६X२२ इंच आकार की १८०८ की यह पेंटिंग राजस्थान के देवगढ़ के १८वीं सदी के राजा रावत गोकल दास को अपनी रानियों के साथ होली खेलते दिखाती है। बागता एक सधे हुए पेंटर थे जिन्हें अपनी पहली ही पेंटिंग बोयर हंटिंग से प्रसिद्धि मिल गई थी। उन्होंने देवगढ़ चित्रकला के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाई। ज्यूरिख के म्यूजियम रिटबर्ग में आयोजित एक महत्वपूर्ण प्रदर्शनी में बगता के चित्रों को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया और न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन

'रावत गोकल दास होली खेलते हुए', १६''X२२'', १८०८। बगता की एक पेंटिंग

म्यूजियम आर्ट के 'वंडर ऑफ एज, मास्टर्स पेंटर्स ऑफ इंडिया, ११००-१६००' प्रदर्शनी में भी उनकी कलाकृतियां प्रदर्शित की गईं। बोनहैम्स डिपार्टमेंट विशेषज्ञ एडवार्ड विलकिन्सन ने कहा, ''इस कलाकृति को वाजिब कीमत में बेचने के प्रयास को सफल होते देखना वाकई अद्‌भुत अनुभव था। यह न सिर्फ मेरे करियर, बल्कि बोनहैम्स और २०१२ एशिया वीक के लिए भी बड़ी सफलता है।''

भारतीय भाषाविद् को यूनिवर्सिटी अवार्ड

डा. मोहम्मद जहांगीर वारसी

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदक विजेता डा. मोहम्मद जहांगीर वारसी को इस साल के जेम्स ई. मैकलियोड फैकल्टी रिकॉग्निशन अवार्ड, एक ऐसा अकादमिक सम्मान जो वाशिंगटन विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षिक अनुभवों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले शिक्षकों को दिया जाता है, के लिए चुना गया है।

पहले फेकल्टी अवार्ड कहा जाने वाले इस पुरस्कार के लिए सेंट लुइस, मिसौरी, स्थित इस विश्वविद्यालय के छात्र विजेता का चयन करते हैं।

डा. वारसी को इसके लिए बधाई देते हुए डिपार्टमेंट ऑफ ईस्ट एशियन लैंग्वेजेज एंड कल्चर्स के प्रमुख रॉबर्ट ई हेगल ने कहा, ''यह वाकई उत्साहवर्धक खबर है - आपको बधाइयां! यह अद्‌भुत सम्मान है और वर्ग कक्षा में आपकी सशक्त प्रतिबद्धता का सबूत भी।'' डा. वारसी बर्कले स्थित कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से २००५ में 'अनसंग हीरो' अवार्ड भी प्राप्त कर चुके हैं, वहीं २०११ में उन्हें यूपी हिंदी-उर्दू लिटररी अवार्ड भी दिया गया।

अमेरिकी अकादमी में भारतीय

कमलजीत सिंह

भारत में जन्मे कमलजीत सिंह बावा, जो बोस्टन के यूनिवर्सिटी ऑफ मासाचूसेट्स में जीवविज्ञान के विशिष्ट प्रोफेसर हैं, को अमेरिकन एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड साइसेंज का सदस्य बनाया गया है। बेंगलुरु स्थित अशोका ट्रस्ट फॉर इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट के संस्थापक एवं अध्यक्ष बावा ६ अक्टूबर को इस अकादमी से जुड़ेंगे। अकादमी के लिए चुने गए अन्य लोगों में शामिल हैं : अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन, टेनेसी के पूर्व गवर्नर फिल ब्रेडसेन जूनियर, जाने-माने कूटनीतिज्ञ आर. निकोलस बर्न्स, टीवी पत्रकार जूडी वूड्रफ।

यूएसआईबीसी की कमान अजय बंगा को

अजय बंगा

मास्टरकार्ड वर्ल्डवाइड के अध्यक्ष और सीईओ अजय बंगा को यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएआईबीसी), जो ३५० शीर्ष अमेरिकी एवं भारतीय कंपनियों का संगठन है, का प्रमुख बनाया गया है।

बंगा ने द मैकग्रा-हिल कंपनीज के अध्यक्ष एवं सीईओ हैरोल्ड मैकग्रा तृतीय से यह जिम्मेवारी ली है। बंगा ने कहा, ''अगले कुछ सालों में दोनों देशों के बीच सहयोग का दायरा बढ़ाकर हम दशक के अंत तक दोतरफा व्यापार को वर्तमान १०० अरब डालर से ५०० अरब डालर पर पहुंचा सकते हैं।''

OIFC
Overseas Indian Facilitation Centre

Expanding the economic engagement of the Indian diaspora with India

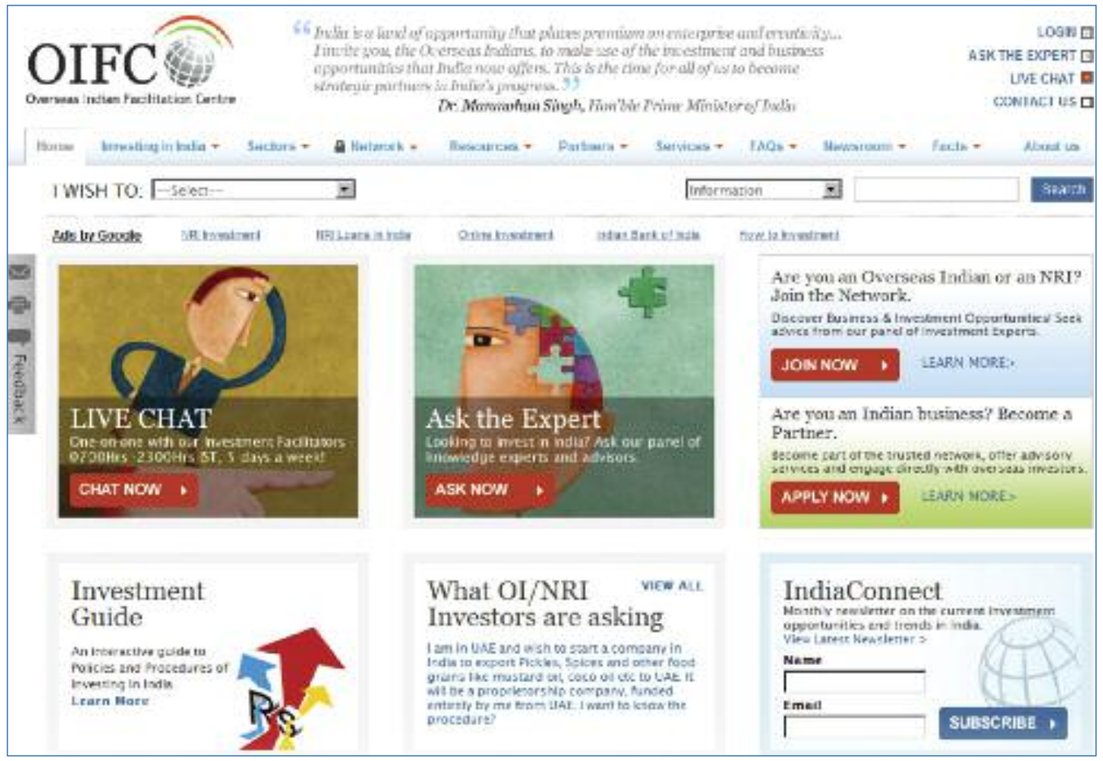

For details contact:

Ms. Sujata Sudarshan
CEO, OIFC, and Director – CII
249-F, sector 18, Udyog Vihar, Phase IV
Gurgaon —122015, Haryana, INDIA
Tel: +91-124-4014055/6
Fax: +91-124-4309446
Website: www.oifc.in

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in

CII
Confederation of Indian Industry

अप्रवासी घाट

अप्रवासी घाट, जो मॉरीशस के पोर्ट लुइस बंदरगाह पर क्वे स्ट्रीट इलाके में स्थित है, वह बिंदु था जहां इस फ्रेंच उपनिवेश में भारत के बंधुआ मजदूरों ने पहली बार कदम रखा था। १८३४ से १९२४ के बीच करीब ४००,००० भारतीय मजदूरों, जिनमें पुरुष और महिला दोनों शामिल थे, ने यहां के औपनिवेशिक बागानों को अपना नया ठिकाना बनाया। जो इमारतें आज बची हैं, वे मूल इमारतों के ही अवशेष हैं। आज भी इसका मूल प्रवेशद्वार, आप्रवासियों के लिए अस्पताल भवन, एक अश्वशाला, रसोईघर, कॉमन हॉल, शौचघर और सरदारों के क्वार्टर यहां मौजूद हैं। अप्रवासी घाट को पहले 'कुली घाट' कहा जाता था। १९७६ में फोक म्यूजियम ऑफ इंडियन इमिग्रेशन ऑफ महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ने १८३४-१९२० अवधि की करीब २००,००० तस्वीरों एवं दूसरे दस्तावेज़ों को प्रदर्शन के लिए संग्रहित किया। १२ जुलाई, २००६ को यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर का दर्जा दिया।

सत्यमेव जयते

Ministry of Overseas Indian Affairs
www.moia.gov.in
www.overseasindian.in